# केरलीप्रश्नरत्नम्

डॉ. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय'

।।श्रीः।।

# केरलीप्रश्नरत्नम्

## भाषाटीका सहितम्

सम्पादक
डॉ. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय'
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-ज्योतिष
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर

जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
जयपुर

प्रकाशक

**जगदीश संस्कृत पुस्तकालय**

झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार,
जयपुर - 302001 (राजस्थान), दूरभाष - 2320227



**ISBN 978-93-80857-30-5**

**प्रथम संस्करण 2011**

**मूल्य - 60.00**

**प्रमुख वितरक**

**आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भण्डार**

झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार,
जयपुर - 302001 (राजस्थान), दूरभाष - 2312974

लेजर टाईप सैटिंग :
सरस्वती कम्प्यूटर्स, जयपुर

मुद्रक :
नीतू प्रिन्टर्स, जयपुर

# भूमिका

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक प्रभू श्री सर्वेश्वर के अनुग्रह से सृष्टयुत्पादक पालन संवरण की सतत प्रक्रियान्तर्गत जीव ही नहीं वरन् चराचर स्थावर जंगमादि पदार्थ निश्चित रूप से प्रभावित होते हुये दृष्टिगोचर होते हैं । उत्पत्ति से लेकर अवसान पर्यन्त की स्थिति में प्राणिमात्र अपने इहलौकिक से पारलौकिक अवस्था का यापन करने के लिए शुभाशुभ चिन्तन के ऊहापोह में प्रवृत्त हो जाता है और सचेष्ट रहने का प्रयत्न करने लग जाता है । और कर्म के लिए अग्रसर होता है । कर्म के प्रति प्रवृत्ति तथा तत्कर्मजन्य शुभाफल प्राप्ति की लालसा प्राणीमात्र में अनवरत प्रवाहित होती रहती है ।

शुभवेला में आरम्भ किये गये कर्म से उत्पन्न पुण्य फल के द्वारा समस्त प्राणियों की सम्पदा की प्राप्ति 'ज्योतिष' शास्त्र के अनुग्रह से होती है-

**शुभक्षणक्रियारम्भ जनिता पूर्व सम्भवाः ।**
**सम्पदः सर्वलोकानां ज्योतिषस्य प्रयोजनम् ॥**

क्योंकि ज्योतिष ही सभी शास्त्रों में एकमात्र प्रत्यक्ष शास्त्र है इसके अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा प्रत्यक्ष शास्त्र नहीं है, सूर्य चन्द्रमा इसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं । कहा भी गया है-

**''प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ''**

ज्योतिष शास्त्र को मुख्य रूप से तीन स्कन्ध रूपी भागों में विभाजित किया गया है इन तीन भागों की अनेक शाखाएँ हुई । आचार्य वराहमिहिर भी ऐसा ही कहते हैं-

**''ज्योतिः शास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितम्''**

आचार्य का कथन है कि ज्योतिष शास्त्र में प्रतिपादित विषय के अनुसार अनेक भेद हैं जो तीन आधारभूत स्कन्धों पर टिके हुए हैं । ये तीन स्कन्ध अर्थात् भाग हैं- (१) गणित (२) होरा (३)संहिता । इनको और भी अधिक रूप से सहज किया जाये तो दो भाग बनते हैं पहला गणित ज्योतिष और दूसरा फलित ज्योतिष ।

गणित ज्योतिष में सिद्धान्त, करण, तन्त्र आदि शाखायें समाहित हैं । गणित की इन शाखाओं से सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक कितने वर्ष, मास और दिन व्यतीत हुये, तथा वर्ष, अयन, ऋतु, ग्रहों की गति, उनके युगों में सूर्य की परिभ्रमण की संख्या, सूर्य और चन्द्र का ग्रहण, तिथि, नक्षत्र, योग और करण आदि का परिज्ञान होता है । इसमें प्राचीन समय के वेध यंत्रों की सहायता आज भी ली जा रही है । आज से हजारों वर्ष पहले हमारे पूर्वाचार्यों ने ज्योतिष की इस विद्या में पूर्ण रूप से सिद्धता प्राप्त करके अनेक सिद्धान्त ग्रन्थों का निर्माण कर दिया था जो आज खगोल विज्ञान के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है जिसे वैज्ञानिक दृष्टि से 'एस्ट्रोनॉमी' के नाम से जाना जाता है ।

## फलित ज्योतिष

फलित ज्योतिष में ग्रहों के आधार पर फलादेश किया जाता है । मुख्य रूप से इसमें ग्रह, नक्षत्र तथा राशियों के संचार आदि का अध्ययन करके मानव की आने वाली दशा, शुभ-अशुभ का फल किया जाता है । इसमें होरा शास्त्र, संहिता शास्त्र, मुहूर्त्त शास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, प्रश्नशास्त्र, स्वप्नशास्त्र तथा निमित्तशास्त्र का समावेश है ।

होराशास्त्र- लग्न से शुभ-अशुभ का फलादेश करना होराशास्त्र के अन्तर्गत आता है । इसमें मनुष्य के जन्म समय के नक्षत्र, तिथि, योग, करण, राशि, चन्द्रमा आदि की गणना करके कुण्डली द्वारा फलादेश किया जाता है । इसमें ग्रह तथा राशियों के वर्ण, स्वभाव, गुण आदि का वर्णन होता है । इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य जन्म कुण्डली का फलादेश करना ही है । हमारे प्राचीन आचार्यों ने कहा है कि नभ में स्थित राशि तथा ग्रहों के बिम्बों में स्वाभाविक रूप से शुभ तथा अशुभता समायी है । परन्तु यह फल ग्रह राशियों की गति, स्थिति, परस्पर दृष्टि तथा उनके परस्पर मेल से परिवर्तित हो जाती है । जो शुभता से अशुभता तथा अशुभता से शुभता में परिवर्तित हो जाती है । इन फलों का प्रभाव पृथ्वी पर स्थित मानवों के ऊपर निश्चित रूप से पड़ता है । इस शास्त्र में मुख्यतया बारह भावों में क्रमशः देह, द्रव्य, पराक्रम, सुख, सुत, शत्रु, पत्नी, भाग्य, कार्यक्षेत्र, लाभ तथा व्यय का वर्णन होता है । इन बारह भावों में सबसे प्रधान लग्न तथा लग्नेश को बताया गया है । जिस किसी भी जातक के लग्न तथा लग्नेश बलवान होते हैं तो वह कभी भी परेशान नहीं होता । वह शारीरिक रूप से सुखी, सन्तानयुक्त, सम्मानीय कार्यक्षेत्र में लाभ तथा विद्वान होता है । परन्तु यदि लग्न तथा लग्नेश अशुभ तथा निर्बल स्थिति में हो तो जातक बहुत परेशान रहता है तथा उसके हर कार्य में बाधायें उपस्थित होती है । लग्न के सहायक बारह भाव है । जिनके

द्वारा जातक के अन्य क्षेत्रों के विषय में विचार किया जाता है । उन बारह भावों में से जिस भाव की स्थिति खराब होती है जातक उस भाव से सम्बन्धित फल की कमी महसूस करता है । अतः सम्पूर्ण क्षेत्रों का विचार करने के लिये लग्न-लग्नेश, भाग्य-भाग्येश, पंचम-पञ्चमेश, सुख-सुखेश, अष्टम्-अष्टमेश, बृहस्पति, चन्द्र, शुक्र, मंगल, इन ग्रहों की स्थिति, वक्री, मार्गी, अस्त-उदय, बली-निर्बल, भावोद्धारक चक्र, द्रेष्काण-चक्र कुण्डली तथा नवांश कुण्डली का विचार करना चाहिये । तभी सम्पूर्ण तथा सटीक फलादेश सम्भव है ।

संहिता शास्त्र- इस शास्त्र के अन्तर्गत भूशोधन, दिक्‌शोधन, शल्योद्धार, मेलापक, आयाद्यानयन, ग्रहोपकरण, इष्टिकाद्वार, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, जलाशय, उल्कापात तथा ग्रहों के उदय-अस्त का फल वर्णित है। प्राचीन आचार्यों ने संहिता शास्त्र में अनेक प्रकार की प्रतिमाओं यथा-मिट्टी, पत्थर, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल आदि की प्रतिमाओं का निर्माण तथा प्रतिष्ठा का विधान भी इसी में वर्णित किया है । इस शास्त्र में यन्त्र, तन्त्र, मन्त्र आदि का वर्णन विस्तृत रूप में पाया जाता है ।

मुहूर्त्तशास्त्र- इस शास्त्र के द्वारा प्रत्येक कार्य का शुभ समय निश्चित किया जाता है । ताकि वह शुभ समय पर आरम्भ होकर, शान्ति पूर्ण सम्पन्न होकर शुभ समय पर ही समाप्त हो सकें । शुभ मुहूर्त्त के बिना कार्य आरम्भ करने पर अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा कार्य अच्छी प्रकार से नहीं होता है । इस हेतु हमारे विद्वान् आचार्यों ने गर्भाधान संस्कार, विवाह संस्कार, देव-प्रतिष्ठा, गृहप्रवेश, गृहारम्भ, यात्रा आदि सभी मांगलिक कार्यों को शुभ मुहूर्त्त देखकर करने का विधान बताया है। कर्मकाण्ड तथा अनुष्ठान आदि कार्यों में तो आवश्यक रूप से मुहूर्त्त का वैशिष्ट्य देखा जाता है, क्योंकि उसमें यजमान का भाग्य भी उस पूजा कर्म से जुड़ा रहता है । मुहूर्त्त शास्त्र पर अनेक ग्रन्थों का निर्माण हुआ है । हमारे आचार्यों ने प्रतिष्ठा के लिये उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, श्रवण तथा रेवती नक्षत्र श्रेष्ठ बताये हैं । उन्होंने मुहूर्त्त प्रकरण में क्रूरासन्न, दूषित, उत्पात, लता, विद्युत, राशिवेध, नक्षत्रवेध, युति, बाण पंचक एवं जामित्र आदि त्यागने योग्य बताये हैं ।

सामुद्रिक शास्त्र- इस शास्त्र में मनुष्य के प्रत्येक अंग के लक्षण देखकर शुभ-अशुभ फल का वर्णन किया जाता है । इस शास्त्र में मानव के सभी अंगों में हाथ को श्रेष्ठ बताया है क्योंकि मनुष्य हाथ से ही प्रतिदिन कार्य करता है । इसलिये इस शास्त्र में मुख्य रूप से हाथ का विचार किया गया है । हाथ में भी जन्मपत्री की तरह

ग्रहों के स्थान होते हैं । तर्जनी के नीचे बृहस्पति ग्रह का स्थान, मध्यमा के नीचे शनि ग्रह का स्थान, अनामिका के नीचे सूर्य ग्रह का स्थान, कनिष्ठिका के नीचे बुध ग्रह का स्थान तथा अंगूठे के मूल में शुक्र ग्रह का स्थान होता है । मंगल के दो स्थान होते हैं- पहला तर्जनी के नीचे अंगूठे के पास में तथा दूसरा कनिष्ठिका के नीचे चन्द्र ग्रह के स्थान के ऊपर । हथेली में बांयी तरफ मणिबन्ध के ऊपर चन्द्र ग्रह का स्थान होता है । रेखाओं के वर्ण के आधार पर भी फलादेश होता है । रेखाओं के रक्तवर्ण होने से मानव आमोद-प्रमोद वाला, सदाचारी तथा उक्त स्वभाव वाला होता है । रक्त वर्ण में यदि कालापन दिखाई दे तो जातक हिंसक, क्रोधी स्वभाव वाला उच्चाभिलाषी, कार्य प्रवीण तथा हिंसक होता है । यदि रेखा पाण्डुक वर्ण लिये हो तो जातक स्त्री स्वभाव वाला, दानी, उत्साही होता है ।

भाग्यवान् मनुष्य के हाथ का लक्षण बताते हुये लिखा है कि गरम, रक्तवर्ण, अंगुलियाँ मिली हुई तथा बिना छिद्र वाली हों, पसीना न हो, हाथ चिकना, माँसल, चमकीला हो, नाखून ताम्रवर्ण के अथवा गुलाबी हो, अंगुलियाँ लम्बी तथा पतली हो, ऐसा मानव संसार में सभी दुःखों को त्यागकर सभी प्रकार के सुखों का भोग करता है ।

इस शास्त्र में प्रधान रूप से आयु रेखा, मातृरेखा, समय निर्णय रेखा, ऊर्ध्वरेखा, अन्तःकरण रेखा, स्त्री रेखा, सन्तान रेखा, समुद्रयात्रा रेखा, मस्तिष्क रेखा, हृदयरेखा, विद्यारेखा आदि का विचार किया जाता है। सभी ग्रहों के चिन्ह भी इस शास्त्र में वर्णित है । इनके फल का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है ।

स्वप्नशास्त्र- स्वप्न जातक के द्वारा संचित किये हुये कर्मो के अनुसार शुभाशुभ फल का प्रतिपादन करते हैं । कर्म में रत प्राणी की क्रियायें ही उनको भूतकाल तथा भविष्यकाल में होने वाली घटनाओं की सूचना देती है । हमारे आचार्यो ने स्वप्न का कारण हमारा आन्तरिक ज्ञान, बाहरी दर्शनीय वस्तुयें बताई है । जो व्यक्ति जितना कर्म में रत रहेगा उतना ही उसके स्वप्नों में सत्यता होगी। कर्महीन मानवों के स्वप्न बिना अर्थ वाले तथा सारहीन होते हैं । आचार्यों ने इसका कारण बताया है कि सोने की अवस्था में भी आत्मा तो जाग्रत रहती है । केवल इन्द्रियाँ और मन ही विश्राम अवस्था में रहते हैं । जो मानव कर्मों में अधिक क्रियाशील रहता है। उसके मन तथा इन्द्रियों में चेतना तथा ज्ञान की अवस्था अधिक होती है । इसलिये उस ज्ञान के प्रकाश में उसे शयन अवस्था में भी भूत तथा भविष्य की घटनायें दिखाई देती है । इसलिये प्राचीन आचार्यो ने स्वप्न को भूत,वर्तमान तथा भविष्य का दर्शक बताया है ।

पौराणिक स्वप्न-शास्त्र पर लिखे गये ग्रन्थों से भी यही स्पष्ट होता है कि स्वप्न ही मानव के भावी जीवन में होने वाली घटनाओं की सूचना देते हैं । फलित ज्योतिष में स्वप्न शास्त्र का विशेष महत्व है । इसके माध्यम से हमारे आचार्यो ने जीवन में होने वाली सभी घटनाओं का शुभ-अशुभ तथा इष्ट-अनिष्ट का विस्तृत वर्णन किया है । प्राचीन ज्योतिष शास्त्रियों ने ईश्वर को ही सृष्टि का रचनाकार माना है और स्वप्न को ईश्वर से प्रेरित इच्छाओं का फल बताया है । वराहमिहिर, बृहस्पति तथा पौरस्त्य आदि विद्वानों ने ईश्वर की प्रेरणा को ही स्वप्न का प्रधान कारण माना है । मुख्य रूप से सात प्रकार के स्वप्न बताये गये हैं-(१) दृष्ट- जो कुछ जाग्रत अवस्था में देखा हो, उसी को स्वप्न की अवस्था में देखा जाये । (२) श्रुत-सोने से पहले किसी से सुना हो तथा उसी को स्वप्न में देखा जायें । (३) अनुभूत-जिसका जाग्रत अवस्था में किसी तरह अनुभव किया हो तथा उसी को स्वप्न में देखें । (४) प्रार्थित- जिसकी जाग्रत अवस्था में प्रार्थना की हो, इच्छा की हो तथा उसी को स्वप्न में देखें । (५) कल्पित- जिसकी जाग्रत अवस्था में भी कल्पना की गई हो, उसी को स्वप्न में देखें । (६) भाविक- जो कभी न देखा गया हो और न सुना गया हो, पर जो भविष्य में होने वाला हो, उसे स्वप्न में देखा जायें । (७) वात, पित्त, कफ के विकृत हो जाने से जो स्वप्न दिखाई दे । इन सात प्रकार के स्वप्नों में प्रथम पाँच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं । इनमें अधिकतर भाविक स्वप्न का फल ही सत्य होता है ।

(निमित्तशास्त्र- इस शास्त्र में बाहरी निमित्तों को देखकर आगे होने वाले शुभ-अशुभ फलों का वर्णन किया जाता है । क्योंकि संसार में होने वाले हानि-लाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण आदि सभी विषय कर्मो की गति पर आधारित है । मनुष्य जिस प्रकार के शुभ-अशुभ कर्म करता है उसी के अनुसार उसको सुख तथा दुःख भोगने पड़ते हैं । बाहरी निमित्तों से घटने वाली घटना का आभास हो जाता है । इस शास्त्र में बाहरी निमित्तों का विस्तार से वर्णन किया जाता है । पृथ्वी पर दिखाई देने वाले निमित्तों के द्वारा फलादेश करने वाला, निमित्त शास्त्र, आकाश में दिखाई देने वाले निमित्तों के द्वारा फलादेश करने वाला निमित्तशास्त्र तथा शब्द श्रवण से फलादेश करने वाला निमित्त शास्त्र ये तीन निमित्त शास्त्र के मुख्य भेद है । आकाश सम्बन्धी निमित्तों के विषय में लिखा है कि सूर्योदय के पहले और अस्त होने के बाद चन्द्रमा, नक्षत्र तथा उल्का आदि के गमन एवं पतन को देखकर शुभाशुभ फल का ज्ञान करना चाहिये । इस शास्त्र में दिव्य, अन्तरिक्ष तथा भौम इन तीनों प्रकार के उत्पातों का वर्णन मिलता है ।) इस ग्रन्थ को पाँच प्रकरणों में विभाजित किया गया है - (१) संज्ञा

प्रकरण, (२) संयुक्तादिप्रकरण, (३) मूकादिप्रकरण, (४) नामबन्ध प्रकरण, (५) मिश्र प्रकरण ।

प्रश्नशास्त्र- इस शास्त्र में प्रश्नकर्त्ता से पहले किसी फल, नदी, तथा पहाड़ का नाम पूछा जाता है । अर्थात् प्रातःकाल से लेकर मध्यान्ह तक फल का नाम, मध्यान्ह से लेकर सन्ध्याकाल तक नदी का नाम, तथा सन्ध्याकाल से रात्रि के मध्य काल से पहले तक अर्थात् ११बजे तक पहाड़ का नाम पूछकर प्रश्न का फल बताया जाता है । हमारे आचार्यों ने प्रश्न का फल बताने के लिये अ, ए, क, च, ट, त, प, य, श, अक्षरों का प्रथम वर्ग, आ, ऐ, ख, छ, ठ, थ, फ, र, ष अक्षरों का द्वितीय वर्ग, इ, ओ, ग, ज, ड, द, ब, ल, स अक्षरों का तृतीय वर्ग ई, औ, घ, झ, ढ, ध, भ, व, ह अक्षरों का चतुर्थ वर्ग और उ, ऊ, ङ, ञ, ण, म, अं, अः अक्षरों का पंचम वर्ग बताया है । इन अक्षरों के आठ भेद हैं- संयुक्त, असंयुक्त, अभिहित, अनभिहित, अभिघातित, आलिंगित, अभिधूमित तथा दग्ध । इन भेदों से ही जातक के जीवन-मरण, हानि-लाभ, संयोग-वियोग तथा सुख-दुःख का फलादेश किया जाता है । यदि लग्न व लग्नेश बली हों तथा स्वर सम्बन्धी ग्रहों की दृष्टि हुई हो तो कार्य सिद्ध होता है । और यदि इसके विपरीत स्थिति हुई तो कार्य सिद्ध नहीं होता है । अलग-अलग कार्यो के लिये अलग-अलग ग्रह स्थिति का विचार किया जाता है । लाभालाभ के सम्बन्ध में बताया है कि प्रश्न में दीर्घाक्षर यदि प्रथम, तृतीय तथा पंचम स्थान में हो तो लाभ करने वाले होते हैं । शेष अलाभकारी होते हैं । साधक इन प्रश्नाक्षरों से जीवन, मरण, लाभ-हानि आदि को सिद्ध करते हैं । हमारे आचार्यों ने उत्तर, अधर, उत्तराधर एवं अधरोत्तर आदि प्रश्न के अनेक भेद करके उत्तर देने के नियम बताये हैं । फलित ज्योतिष में प्रश्न-शास्त्र बहुत प्रचलित हुआ है ।

(१) संज्ञा प्रकरण- मंगलाचरण से इस ग्रन्थ का आरम्भ करके चमत्कारी केरलीय प्रशंसा के साथ ग्रन्थ का कारण, प्रश्नकर्त्ता का लक्षण, प्रश्न के वर्जित पुरुष, वर्गो की संख्या, सचक्र वर्ण संख्या, वर्णो की उत्तरादि संज्ञा, दग्ध स्वर वर्ण का लक्षण, उत्तरोत्तरोत्तरादि दस भेदों की संख्या, उनके फल, जीव-धातु-मूल अक्षरों के स्वर वर्ग और स्वरों के वर्णो का कथन, उनका स्वरूप, वर्ग और स्वरों के अण्डज तथा देवादि संज्ञा के साथ चपटा-अन्धा-गूँगा-गंजा-कुबड़ा-बहरा-कोमल-कठोर-सुगन्धि-दुर्गन्धि-भक्षणीय-अभक्षणीय और अधम वर्णो का वर्णन, स्वरों की स्वर्गादिलोक संज्ञा, आलिंगित आदि की सत्वादि संज्ञा, चोरी तथा नष्ट आदि की अवधि, पूर्वादि दिशाओं के स्वामी, ग्रामादि योजनान्त स्वामी, वर्गो की ऋतु संज्ञा, दिन के पूर्व समय

का ज्ञान, सूर्यादि वारों के स्वामी, औत्तरी तथा आधरी बेला का सारणी सहित ज्ञान, कमल-चक्र से गर्भ समय का प्रश्न, समयसोदाहरण, मिश्र, नेष्ट, शुभ वर्ण का प्रतिपादन, वर्णो की शीतादि प्रकृति, वर्णो की तिथि, नक्षत्र, सचक्र संज्ञा, आलिंगित दिनरात्री और संयुक्तादि वेलाओं का सारणी सहित ज्ञान ।

(२) संयुक्तादि प्रकरण- संयुक्तादि प्रश्न का लक्षण, नौ पक्षों के भेद और फल सहित सारणी, दग्ध प्रश्न के उदाहरण, संयुक्त-असंयुक्त के मध्य सूक्ष्म पिण्डांक चक्र, अभिहित-आलिंगित और संयुक्तादि की सारणी, सोदाहरण भूतादि काल ज्ञान, मात्रादि-द्वारातीत आदि ज्ञान, मूक प्रश्न का वैशिष्ट्य, भविष्य प्रश्न का विशेष प्रतिपादन, मृत्यु प्रश्न का कथन, नालीकेर का उदाहरण, मृत्यु कब होगी इसका ज्ञान, अवशिष्ट आयु में सुख-दुःख का परिज्ञान तथा समस्त साधारण प्रश्नों में शुभाशुभ एवं लाभ प्रश्न के साथ युद्ध प्रश्न का वैशिष्ट्य प्रतिपादित किया गया है ।

(३) मूकादि प्रकरण- जीवादि तीन योनियों का ज्ञान, मुष्टि और लूक प्रश्न का वैशिष्ट्य, पक्षान्तर से त्रियोनि का परिज्ञान, मूकादि प्रश्न में योनि ज्ञान, आलिंगित आदि वेला के विभाग से त्रियोनि ज्ञान, मूक-मुष्टि-लूका-दृष्टि-अंग स्पर्श के द्वारा अन्न आदि के सानिध्य से त्रियोनि का ज्ञान, और पूर्वादि दिशाओं में त्रियोनि की अवस्थिति, मुष्टिका वर्ण ज्ञान, मूकादि प्रश्न के लिये विशेष सारणी, प्रधान योनि ज्ञान, संयुक्तादि समय में त्रियोनि ज्ञान, इसी के साथ गुणक नियम, जीव योनि-द्विपद के भेद, प्रकारान्तर से देवादि का ज्ञान, मनुष्य भेद तथा योनि ज्ञान, बालादि की अवस्था, पक्षी-राक्षस-चतुष्पद-अपाद-बहुपाद-धातु-धाम्य-अधाम्य धातु भेदों के साथ मूल भेद का वर्णन किया गया है ।

(४) नाम बन्धप्रकरण- नाम की जानकारी के साथ समविषय अंक वाले नामों का ज्ञान, नाम के पहले वर्ण का ज्ञान, नाम बन्धन में गुणक-वर्ण और मात्रा का निष्कासन तथा प्रकारान्तर से नाम के निर्गमन का वर्णन किया गया है ।

(५) मिश्र प्रकरण- चोरी के प्रश्न में चोरी हुये धन की स्थिति, नष्ट द्रव्य का लाभालाभ, संयुक्तादि आठ सारणी, प्रकारान्तर से पिण्ड ज्ञान, नष्ट द्रव्य की प्राप्ति के समय का ज्ञान, मास-पक्ष और तिथि का सारणी सहित ज्ञान, खोई हुई वस्तु की दिशा का ज्ञान, चोरों की संख्या तथा प्रधान चोर के नाम का ज्ञान, चोर के प्रथम अक्षर का ज्ञान, गमन-आगमन, रोगी-रोग ज्ञान गर्भादि का प्रश्न, प्रसव की अवधि, रति-भोजन-छत्रभंग-देश उपद्रव-दुर्ग भंग की दिशा का ज्ञान, सुभिक्ष आदि ज्ञान, वर्षा और

कूप प्रश्न, घर, भवन, मन्दिर, उपवन आदि प्रश्न ज्ञान, गुप्त मन्त्र और मुद्रित पत्र ज्ञान, मृगया-युद्ध-जयपराजय-युद्ध में दिशा का बल, विवाह का प्रश्न, कृषि और मैत्री तथा योनि अन्तर एवं निधि का प्रश्न, ग्रहों का तात्कालिकी करण और उदाहरण, अहिबल का सचक्र प्रतिपादन, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र ज्ञान, ग्रहों के द्रव्य, नष्ट जातक का आनयन तथा उदाहरण, वर्णोत्पत्ति का प्रकार, ग्रन्थ की परिपूर्ति और दूसरों का दोष आदि इस ग्रन्थ में समाहित किया गया है ।

**डॉ० भास्करशर्मा 'श्रोत्रिय'**
प्रोफेसरएवं विभागध्यक्ष-ज्योतिष
महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर

# केरलीप्रश्नरत्नम्

भाषाटीका सहितम्

## विषय-सूची

**संयुक्तादि प्रकरणम् :-**

अथ मिश्र प्रकरणम् :-

# केरलीप्रश्नरत्नम्

## भाषाटीका सहितम्

# संज्ञाप्रकरणम्

## मंगलाचरणम्

यदक्षरं ब्रह्म वदन्ति विज्ञाः सिद्धास्तुरीयं यदकर्तृ सांख्याः।
तं सत्यमानन्दनिधिं स्मरामि श्रीनन्दसूनुं श्रुतिभिर्विमृग्यम् ॥१॥

श्रीगजास्यं नमस्कृत्य सिद्धिबुद्धिप्रदायकम्।
केरलीप्रश्नरत्नस्य भाषाटीकां करोम्यहम्॥

सर्वप्रथम ग्रन्थ आरम्भ करने से पूर्व निर्विघ्न कार्यपूर्त्ति के लिए मङ्गलाचरण करते हैं, ग्रन्थकर्त्ता मिश्र श्रीनन्दरामजी भगवान श्रीगोपालजी का स्मरण कर रहें है, कैसे हैं गोपालजी? जिनको महापण्डित अक्षर ब्रह्म कहते हैं, योगिराज जिन्हें तुरीय कहते हैं, सांख्यवेत्ता उनको अकर्त्ता पुरुष कहते हैं। फिर कैसे हैं; सत्यात्मक हैं, आनन्दमूर्त्ति हैं, फिर कैसे हैं, श्रवण करके विचार करने योग्य हैं ॥१॥

## केरल-प्रशंसा

ज्योतिःशास्त्रे पञ्चशाखाप्रतानाः
सद्यस्तेषां यश्चमत्कारकारी।
श्रीरुद्रोक्तः केरलिस्तं तु सम्यक्
जानातीशस्तत्प्रसादाज्जनोऽन्यः ॥२॥

ज्योतिःशास्त्रीय विषय की पञ्च शाखा कही हैं। कहा भी गया है - "पञ्चस्कन्धमिदं शास्त्रं होरागणितसंहिता, केरली शकुनं चेति॥" इन विषयों में केरली सद्यः चमत्कारकारी हैं, यह केरलशास्त्र भगवान श्रीमहादेवजी के द्वारा

कहा गया है। केरल शास्त्र को भी अच्छे प्रकार से श्रीमहादेवजी जानते हैं, उनसे प्रसाद रुप में प्राप्त अन्य मनुष्य भी जानते हैं ॥२॥

**ज्ञात्वा किञ्चित्तत्र कुर्वे प्रबन्धं श्रीगोपालप्रेषणात्प्रश्नरत्नम्।**
**स्वर्णावृत्तैर्भातु कण्ठे बुधानां नित्यं भूमीपालविद्वत्सभासु ॥३॥**

केरलशास्त्रको किंश्चित् जान करके श्रीगोपालजी की प्रेरणा से प्रश्नरत्न नामक प्रबन्ध करता हूँ। कैसा है यह प्रश्नरत्न, सुन्दर वर्ण है, स्वल्प छन्द है, फिर कैसा है, राजा और पण्डितों की सभा में बुधजनके कण्ठमें शोभायमान है ॥३॥

**ग्रन्थ प्रयोजनमाह।**

**यद्यपि बहुप्रबन्धाः शुक्लपटैः पण्डितं मन्यैः।**
**रचितास्ते न हि रम्या अतो मयायं समासतः क्रियते ॥४॥**

सर्वथा मिथ्या पण्डिताभिमानी श्वेताम्बर नाम के बौद्धो ने तो यद्यपि बहुतसे प्रबंधों की रचना की हैं, परन्तु प्रायः वे रमणीय नहीं हैं, उनमें छन्दोव्याकरणादि दोष पूर्ण रुप से समाहित हैं। इसलिये संक्षेप रुप में मैं इस ग्रन्थ की रचना करता हूँ ॥४॥

**अस्य व्यतिरिक्तमुखेनाधिकारिण आह।**

**श्रीमच्छिवेनोक्तमिदं रहस्यं तत्त्वं परं ये श्रुतितत्त्वहीनाः।**
**बौद्धादयो वा यवनादयो ये तेभ्यो न दद्याद्यदि धर्मकामः ॥५॥**

यह भगवान श्रीमहादेवजी के द्वारा प्रतिपादित किया हुआ केरलरहस्य तत्त्व है जो की श्रुतितत्त्व के रुप में है इस परमतत्व सार को बौद्धादिक और यवनादिक को नहीं देना, धर्म की अभिलाषा और इच्छा रखनेवाला भी यदि कोई हो तो (अर्थात् आस्तिक-धर्म्माभिमानी होय तो ) भी नहीं देना ॥५॥

**नो दुर्विनीताय न नास्तिकाय नो वेददेवद्विजनिन्दकाय।**
**खलाय धूर्त्ताय न सर्वथैव प्रकाशयेत्तत्त्वमिदं सुगोप्यम् ॥६॥**

इस परम रहस्यतत्त्व को दुर्विनीत और नास्तिक को और वेद एवं देवता और ब्राह्मण आदि की निन्दा करने वाले को तथा इस रहस्य को खल और धूर्तों को सर्वथा प्रकाशित नहीं करना चाहिए अर्थात्, इस तत्व को जहाँ तक हो सके अच्छी प्रकार से गुप्त रखना चाहिए ॥६॥

**नम्राय देवद्विजपूजकाय ब्रह्माक्षरब्रह्मसुनिश्चयाय।**
**एवंविधाय द्विजपुंगवाय दत्त्वा समाप्नोति बुधोऽर्थधर्मान् ॥७॥**

इस रहस्यमयी गोपनीयतत्व को किसे प्रदान करें? इस विषय में बताते हैं कि-गुरुभक्त को तथा देवता और ब्राह्मण की पूजा करने वाले को, ब्रह्म जो साक्षात् नारायण है और अक्षरब्रह्म जो साक्षात् वेद स्वरूप इन दोनों में निश्चय करने वाला हो ऐसे द्विजपुंगव अर्थात् श्रेष्ठ ब्राह्मण को प्रदान करने से वह पण्डित वाञ्छित धर्म और अर्थ को प्राप्त करता है ॥७॥

**अथ पृच्छकनियममाह।**

**अनन्यचेताः कार्यार्थी प्रश्नं कुर्यात् फलान्वितः।**
**पुनः पुनः सभामध्ये कुभूमौ ना विवर्त्तवाक् ॥८॥**

प्रश्नकर्त्ता एकाग्रचित्त होकर के फलयुक्त (सुपारी नारियल आदि सम्मुख रख के) यदि प्रश्न करे तथा बार बार प्रश्न नहीं करना चाहिए, सभा के बीच में भी प्रश्न नहीं करना, कुत्सित अथवा दूषित भूमि पर प्रश्न नहीं करना चाहिए और ऐसे वर्णों से उच्चारण करे कि जिसमें विवर्त्तमान षण्ढाक्षर ऋ ॠ लृ ॡ क्लादि वर्ण का मुख से उच्चारण नहीं होना चाहिए। इस प्रकार के वर्णों का उच्चारण करना शुभ नहीं माना गया है अर्थात् अशुभ होता है। इस विषय में कहा भी गया है - षण्ढा युक्ताक्षराः क्लाद्या विवर्त्तास्तेऽपि नो शुभाः ॥८॥

**प्रश्ने निषिद्ध पुरुषाः**

**बद्धास्यशुक्लाम्बरनास्तिकादीन् कुब्जान्धवन्ध्याबधिराङ्गहीनान्!**
**कुष्ठादियुक्तान् परिवर्ज्य विद्वान् प्रश्न वदेदुच्चरितार्णदृष्टिः ॥९॥**

जिनका मुख बद्ध रहता है और श्वेताम्बर धारण किये हुए होते हैं ऐसे नास्तिक को, कुब्ज को, अंध को, बन्ध्या को, बधिर को, अंगहीन को कुष्ठादियुक्तों को, इन सभी लोगों को छोड करके पण्डित प्रश्न कहे, और प्रश्नकर्त्तकि उच्चरित वर्णों पर दृष्टि रखनी चाहिये। कहा भी गया है -"विमुक्तकेशकापायैर्नग्नैः क्षुधितनास्तिकैः। कुब्जान्धवन्ध्यारजकैर्दृष्टैः सिद्धिर्न जायते॥" और लल्लाचार्य्य विशेष कहते हैं, यात्राविरुद्ध जो शकुन है उनको छोड करके प्रश्न करने चाहिए इन्हें ग्रन्थान्तरसे जान लेना चाहिये ॥९॥

**अथास्योपजीविनीं वर्गाणामुत्तरादिसंज्ञामाह।**

**उत्तरा विषमा वर्गाः समा वर्गाष्टके धराः।**
**स्वेषूत्तरोत्तरौ ज्ञेयौ पूर्ववच्चाधराधरौ ॥१०॥**

अवर्गादि अष्टवर्ग के मध्य में जो विषम वर्ग होते है, उनको उत्तर नामक संज्ञा कही गई है। और सम वर्गों को अधर नामक संज्ञा कही गई है। उत्तर वर्गों के मध्य में

जो विषम है, उनकी उत्तरोत्तर संज्ञा कही गई है। अधर वर्गों के बीच में जो सम है उनकी अधराधर संज्ञा कही गई है जिसे समझने के लिए चक्र में प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥१०॥

**दशमश्लोकोक्तं उत्तरादिसंज्ञाचक्रम्।**

| अ | च | त | य | उत्तराः |
|---|---|---|---|---|
| क | ट | प | श | अधराः |
| अ | ० | त | ० | उत्तरोत्तौर |
| ० | ट | ० | श | अधराधरौ |

**वर्गवर्णसंख्याचक्रम्**

**वर्गौ द्वौ विद्वद्भिर्द्वादशमात्रासु विज्ञेयौ।**
**काद्याःसप्त च तेषां वर्णाः पञ्चाब्धयोऽङ्कवर्गाणाम् ॥११॥**

**एकादशश्लोकोक्तं वर्णचक्रम् ।**

| अ | रा | क | च | ट | त | प | य | श | वर्गाद्याः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ<br>इ<br>ई<br>उ<br>ऊ | रो<br>ओ<br>औ<br>अं<br>अः | ख<br>ग<br>घ<br>ङ | छ<br>ज<br>झ<br>ञ | ठ<br>ड<br>ढ<br>ण | थ<br>द<br>ध<br>न | फ<br>ब<br>भ<br>म | र<br>ल<br>व | ष<br>स<br>ह | अक्षराणि |
| ६ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४५ योगः |

अकारादि षोडश स्वरों के बीच में षण्ढ स्वर व्यतिरिक्त द्वादश मात्रा का दो वर्ग समझना चाहिए। ये दो वर्ग कादिक सप्तवर्ग में इन नोवर्गों के वर्ण पञ्चचत्वारिंशत् ४५ अर्थात् पैंतालीस होते हैं, जो चक्र में प्रस्फुट है समझ लीजिये ॥११॥

**वर्णानामुत्तरादि संज्ञा चक्रं चः -**

**तेष्वादिमास्तृतीया उत्तरवर्णास्तथा धराद्वियुगाः।**
**स्वेषूत्तरोत्तराख्या विषमा अधराधराश्च समाः ॥१२॥**

द्वादशश्लोकोक्तं वर्णन्यासचक्रम्।

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | ए | क | च | ट | त | प | य | श | १ | |
| इ | ओ | ग | ज | ड | द | व | ल | स | ३ | उत्तराः |
| आ | ऐ | ख | छ | ठ | थ | फ | र | ष | २ | |
| ई | औ | घ | झ | ढ | ध | भ | व | ह | ४ | अधराः |
| अ | | क | | ट | | प | | श | | |
| इ | | ग | | ड | | य | | स | | उत्तरोत्तराः |
| | ऐ | | छ | | थ | | र | | | |
| | औ | | झ | | ध | | व | | | अधराधराः |
| उ ऊ | अं अः | ङ | ञ | ण | न | म | ० | ० | | एतेउभय पक्षदग्धाः |

पूर्वोक्त नववर्गों के बीच में जो प्रथम तृतीय वर्ण हैं उनकी उत्तर संज्ञा कही गई है और द्वितीय चतुर्थ वर्णों की अधर संज्ञा कही गई है, और उत्तर वर्णों के बीच में जो विषम वर्ण हैं उनकी उत्तरोत्तर संज्ञा कही गई है और अधर वर्णों के बीच में जो समवर्ण हैं उनकी अधराधर संज्ञा कही गई है, जिसे चक्र में स्पष्ट रूप से लिख दिया गया है। समझ लीजिये ॥१२॥

**अथ दग्धस्वर वर्ण लक्षणम्**

**काद्येषु पञ्चमस्था उभये अं अ उ ऊ दग्धाः।**
**अथ मात्रासु ज्ञेयं चोत्तरपूर्वं क्रमात्प्राग्वत् ॥१३॥**

कादिक जो सप्त वर्ग होते हैं, उनके जो पञ्च वर्ण हैं उनकी दग्ध संज्ञा होती है, उभय वर्ग के उ ऊ अं अः इनकी दग्ध संज्ञा होती है और अकारादि द्वादशस्वरों की उत्तरादि संज्ञा होती है, जिसे पूर्वोक्त क्रम करके जान लेना चाहिये जिसे प्रतिपादित किया जा रहा हैं। जैसे - अ इ उ ए ओ अं इनकी उत्तर संज्ञा होती है, आ ई ऊ ऐ औ अः इनकी अधर संज्ञा होती है, अ उ ओ इनकी उत्तरोत्तर संज्ञा होती है, इ ए अं इनकी उत्तर संज्ञा होती है, आ ऊ औ इनकी अधर संज्ञा होती है, इ ऐ अः इनकी अधराधर संज्ञा होती है ॥१३॥

**उत्तरोत्तरोत्तरादि दशभेदसंख्यचा तत्फलं च**

**दग्ध प्रश्नभेदाः**

**भेदा दशोत्तरोत्तरपूर्वाणां वर्णमात्रोत्थाः ।**
**शुभमध्यनेष्टफलदा दग्धे पश्चामृतं कष्टात् ।१४ ॥**

वर्ण मात्रा से उत्पन्न हुई, जो उत्तरोत्तर पूर्वा होती है, उसके दश भेद होते हैं वे इस प्रकार हैं। सर्वप्रथम उत्तरोत्तरोत्तरोत्तर १.दूसरी उत्तरोत्तरोत्तर २. उत्तरोत्तर, ३. उत्तरोत्तराधर, ४. उत्तरोत्तराधराधर, ५. उत्तराधर, ६. उत्तराधराधर, ७. अधराधर, ८. अधराधराधर, ९. अधराधराधराधर १०। इन दश भेदों के मध्य में पूर्व (आरम्भ) के तीन भेद शुभ होते हैं और इसके उपरान्त सप्तपर्यन्त जो भेद हैं वे सभी मध्यम होते हैं, और सात के उपरान्त जो तीन भेद हैं वे नेष्ट माने गये हैं। अब उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जैसे - अ उच्चारण करने से उत्तरोत्तरोत्तर संज्ञक प्रश्न होता है, और दग्धाद्यवर्ण प्रश्न हो तो पांच भेद होते हैं, वे इस प्रकार हैं। उत्तरोत्तरदग्ध १.उत्तरदग्ध २. अधरदग्ध, ३. अधराधरदग्ध, ४.दग्धदग्ध, ५.इन पांच भेदों के फल क्रम से इस प्रकार समझ लेना चाहिए। कष्ट १, अति कष्ट २, व्याधि ३, अतिव्याधि ४ और मृत्यु ५ ॥१४॥

**अथ जीवादि संज्ञामाह –**

**जीवाक्षराणि स्वराश्च –**

**धात्वक्षराणि स्वराश्च –**

**मूलाक्षराणि स्वराश्च -**

**चत्वारः कचटादितश्च यशहाः स्युर्जीवसंज्ञा रषौ ।**
**चत्वारश्च तपादितोऽक्षरगणं धातोः परं मूलके ॥**
**एकद्वित्रिनवान्त्यसप्तममिता जीवाः स्वरा उ ऊ अम् ।**
**धातौ मूलमितोऽवशेषमथ भूहस्तास्त्रिचन्द्राभवाः ॥१५ ॥**

**पञ्चदशश्लोकोक्तं जीवादिसंज्ञाचक्रम् ।**

| | | |
|---|---|---|
| जीवक्षराणि स्वराश्च | क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह अ आ इ ओ अः ए | २१ |
| धात्वक्षराणि स्वराश्च | त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं | १३ |
| मूलाक्षराणि स्वराश्च | ल व स ङ ञ ण न म ई ऐ औ | ११ |

कुचुटु इन तीनों वर्ग के आरम्भ के जो ४ चार वर्ग हैं और य श ह इन वर्णों की जीव संज्ञा कही है, तु पु इन दो वर्गो के आरम्भ के ४ वर्ण और र ष इन वर्णों की धातु संज्ञा कही गई है। जीवधातु योनिके व्यतिरिक्त जो शेष वर्ण उनकी मूल संज्ञा बताई गई है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, नवम, द्वादश और सप्तम इन स्वरों की जीवसंज्ञा होती है। उ ऊ अं इन तीनों स्वरों की धातुसंज्ञा होती है। जीवधातु भिन्न जो शेष स्वर हैं, उनकी मूल संज्ञा बताई गई है। जिसे चक्र में स्पष्ट रूप से बता दिया गया है, समझ लेना चाहिए। जीवाक्षरसमुदाय २१ इक्कीस का है इसी प्रकार धात्वक्षरसमुदाय १३ तेरह का होता है, तथा मूलाक्षरसमुदाय ११ ग्यारह का होता है ॥१५॥

**आलिङ्गितादिकाः स्युः पुरुषपुरन्ध्रीनपुंसकाभिख्याः।**
**संयुक्तासंयुक्तौ सौख्यव्याधिप्रमोदशोकौ च॥**
**ञङणनमा मृतिसंज्ञा जीवितसंज्ञाश्च वर्गपूर्वार्णाः ॥१६॥**

पूर्व प्रतिपादित जो आलिङ्गित संज्ञक स्वर हैं, वे पुरुष संज्ञक होते हैं। अभिधूमित स्वर स्त्रीसंज्ञक होते हैं, दग्धस्वर नपुंसक संज्ञक हैं, और बताये गये जो संयुक्त संज्ञक हैं वो सौख्य और प्रमोद संज्ञक हैं, असंयुक्त वर्ण व्याधिसंज्ञक और शोकसंज्ञक हैं। ङ ञ ण न म इन पञ्च वर्णों की मृत्यु संज्ञा कही गई है और वर्गों के जो प्रथम वर्ण है उनकी जीवित संज्ञा कही गई है ॥१६॥

**वर्गाणां वर्ण कथनम्**

**श्वेतं रक्तं पीतं हरितं पीतं भवेद्धूम्रम्।**
**हरितं कृष्णं वर्णं ह्यादीनामष्टवर्गाणाम् ॥१७॥**

अवर्गादिक जो आठ वर्ग बताये गये हैं, उनके क्रमानुसार वर्ण समझ लेना चाहिये। श्वेत १.रक्त २.पीत ३.हरित् ४.पीत ५.धूम्र ६.हरित ७.और कृष्ण ८.इस प्रकार आठ वर्गों के आठ वर्ण होते है, जिन्हें और स्पष्ट समझने की दृष्टि से चक्र में लिखा है समझ लीजिये ॥१७॥

**स्वराणां वर्ण कथनम्**

**श्वेतं पीतं धूम्रं रक्तं वा कर्बुरं द्वाभ्यां द्वाभ्याम्।**
**मात्राभ्यां स्यादन्त्योपान्त्ये सितासिते ज्ञेये ॥१८॥**

अ आ इत्यादि दो दो स्वरों का श्वेतादिवर्ण समझ लेना चाहिये, इस क्रम के अनुसार श्वेत १.पीत २.धूम्र ३.रक्त ४.कर्बुर (कबूतरी) ५। अः विसर्ग स्वर का श्वेत और अं अनुस्वार स्वर का काला वर्ण जानना चाहिए ॥१८॥

**वर्गाणां स्वरुपम्**

**वर्तुलदीर्घे त्र्यस्रं खण्डं चक्राभसुप्तसर्पाभम्।**
**चतुरस्रानन्तास्रे संज्ञा ज्ञेयादिवर्गाणाम् ॥१९॥**

किसी भी वस्तु का स्वरूप जानने के लिये उनकी संज्ञा बतलाई जा रही हैं। अवर्गादि आठ वर्गो का क्रम से स्वरूप जान लीजिये। वर्त्तुल १.दीर्घ २.त्रिकोण ३.खण्ड ४.चक्राकार ५.सुप्तनाग की तरह ६.चतुरस्र ७.अनेक कोण ८। इन सभी को स्पष्ट रूप से समझने के लिए आगे सारणी में दर्शा दिया गया है ॥१९॥

**स्वराणां स्वरुपम्**

**वर्तुलदीर्घे त्र्यस्रं चतुरस्रं खण्डकं विषमम्।**
**द्वाभ्यां द्वाभ्यां ज्ञेयाः संज्ञा विज्ञैश्च मात्राभ्याम् ॥२०॥**

स्वरों के द्वारा वस्तु की आकृति अथवा आकार का ज्ञान कैसे हो, इसका वर्णन करते हैं। दो दो स्वरों के क्रम से वस्तु का आकार जानना चाहिये। सर्वप्रथम अ, आ, स्वर का आकार। वर्त्तुल १. दीर्घ, ३.त्रिकोण ३.चौकोर ४.खण्ड ५.और वर्त्तुलाद्याकाररहित ६.जानना चाहिए ॥२०॥

**वर्गाणां अण्डजादि संज्ञा**

**अण्डजजरायुजाख्यौ स्वेदोद्भिज्जाष्टकवर्गतो द्वाभ्याम्।**
**तिसृभिस्तिसृभिस्तद्वन्मात्राभिर्वा क्रमात्ते स्युः ॥२१॥**

स्वरों के द्वारा अब जीवों का प्रकार कहते हैं। दो दो वर्गों को करके क्रम से जीवों के प्रकार जान लीजिये, अ, आ, वर्ग का अण्डज १, जरायुज २, स्वेदज ३, उद्भिज्ज ४, और तीन तीन मात्राका भी क्रम से समझ लेना चाहिए। द्वादश स्वरों की ४ चार संज्ञा होती हैं ॥२१॥

**वर्गाणां स्वरादि संज्ञा**

**सुरदितिजनागगन्धर्वमुनिनरपिशाचराक्षसाश्चाद्याः।**
**रलवटठडढार्णाः स्युश्चिपिटा ङञणनमाश्चान्धाः ॥२२॥**

अवर्गादि अष्ट वर्गों की देवादि संज्ञा क्रम से इस प्रकार जानना, जिसे स्पष्ट रूप से समझने के लिए सारणी में दर्शाया गया है। इसके पश्चात् स्वर तथा व्यञ्जनों की विशेष संज्ञा कहते हैं। र ल र व ट ठ ड ढ इन सात वर्णों की चिपिट संज्ञा होती है, ङ ञ ण न म इन पञ्च ५ वर्णों की अन्ध संज्ञा होती है ॥२२॥

**वर्गाणां देवादि संज्ञा**

**इईषमखसा मूकाः कखगघआ अश्च खल्वाटाः।**
**जशउऊअंअ उक्ताः कुब्जा बधिरा शषौसहौवर्णाः ॥२३॥**

इ ई ष म ख स इन ६ वर्णों की मूक संज्ञा होती है, क ख ग घ आ अ इन ६ वर्णों की खल्वाट संज्ञा होती है, ज श उ ऊ अं अः इन ६ वर्णों की कुब्ज संज्ञा होती है, श ष स ह इन ४ वर्णों की बधिर संज्ञा होती है ॥२३॥

**कोमलाः कखअआः षसवर्णा निष्ठुरा उतचऊछदवर्णाः ।**
**उत्तरा बहुसुगन्धियुताः स्युः पूतिगन्धसहिता अधराख्याः ॥२४॥**

क ख अ आ ष स इन ६ वर्णों की कोमल संज्ञा होती है, उ त च ऊ छ द इन ६ वर्णों की कठोर संज्ञा होती है, उत्तरोत्तर स्वरवर्ण बहु सुगन्धियुक्त होते हैं, उत्तर वर्ण स्वल्पसुगन्धियुक्त होते हैं, अधर वर्ण स्वल्पदुर्गन्धियुक्त होते हैं, अधराधर बहुत दुर्गन्धियुक्त होते हैं। चिपिटादि निष्ठुरान्त आठ संज्ञा के मध्य में झ थ घ ध प फ ब भ यह आठ वर्ण ए ऐ ओ औ चार स्वर ये नहीं कहे हैं सो साङ्ग समझना, ककारकी खल्वाट और कोमल यह दो प्रकार की संज्ञा होती हैं, खकारकी खल्वाट, कोमल और मूक इस प्रकार तीन संज्ञा होती हैं, मकार की मूक और अन्ध दो संज्ञा होती हैं, शकार की कुब्ज और बधिर दो संज्ञा होती हैं, मूर्द्धन्य और दन्त्यसकारकी मूक, बधिर और कोमल ये तीन संज्ञा होती हैं। इसका हृत नष्टादिक प्रश्न में चौर का स्वरूप जानने के लिए उपयोग में लिया जाता है। इन संज्ञाओं को भली प्रकार से समझ करके प्रश्नोत्तर कहना चाहिये ॥२४॥

**उत्तरैश्च भवेद्भक्ष्यमभक्ष्यमधराधरैः ।**
**उऊवाहौ मपङञा अधमा निष्फलाः स्मृताः ॥२५॥**

उत्तर स्वरवर्णों की भक्ष्य संज्ञा होती है, अधराधर स्वरवर्णों की अभक्ष्य संज्ञा होती है, उ ऊ व ह म प ङ ञ इन आठ वर्णों की अधम और निष्फल संज्ञा होती है, इन सभी को स्पष्ट रूप से समझने के लिए सारणी में दर्शाया गया है ॥२५॥

**स्वविषयः प्रसंयुक्तोऽसंयुक्तश्चान्यदेशेशः ।**
**पुरपोऽभिहितोऽनभिहितसंज्ञःस्याद्ग्रामबाह्येशः ॥२६॥**

संयुक्तवर्ण स्वदेश के स्वामी कहलाते हैं, असंयुक्त वर्ण स्वदेश भिन्न अर्थात् अन्य देश के स्वामी होते हैं, अभिहित पुरपति अर्थात् ग्राम और नगर का स्वामी होता हैं, अनभिहित ग्राम से बाहर जो भूमि होती है उसके स्वामी होते हैं ॥२६॥

**एऐ ओऔ स्वर्गे आ अइई चापि पाताले ।**
**अं अः उ ऊ धरायां मात्रास्थानं बुधैः प्रोक्तम् ॥२७॥**

ए ऐ ओ औ ये चार मात्रा स्वर स्वर्गवासी हैं, तथा आ अ इ ई ये चार मात्रा स्वर पातालवासी हैं, अं अः उ ऊ ये चार मात्रा स्वर पृथ्वीवासी समझने चाहिए ॥२७॥

**प्रश्नाद्यर्णारूढा या मात्रा स्यात्तया ज्ञेयम्।**
**सत्वं रजस्तमो वा ह्यालिङ्गाद्यैस्तथोत्तराद्यैश्च ॥२८॥**

पूर्व श्लोक में मात्रा का स्थान जो बताया गया है, वह प्रश्न श्रेणी में पूर्व का जो वर्ण उसमें जो मात्रा निहित है। उस मात्रा से समझना चाहिये। आलिङ्गित स्वर सत्त्वस्वरूप होता हैं, अभिधूमित स्वर रजः स्वरूप होता है। दग्धस्वर तमः स्वरूप होता हैं उत्तर वर्ण सत्त्वस्वरूप होता है, अधर वर्ण रजः स्वरूप होता हैं, दग्धवर्ण तमः स्वरूप होता हैं ॥२८॥

**अधराधरे च वर्षं ह्यधरे मासस्तथोत्तरे पक्षः।**
**दिनपूर्वमुत्तरोत्तर इति विज्ञेयं च नष्टादौ ॥२९॥**

अधराधर प्रश्न में एक वर्ष की अवधी कहनी चाहिए, अधर में एक मासावधि कहनी चाहिए, उत्तर प्रश्न में एक पक्षावधि कहनी चाहिए, उत्तरोत्तर प्रश्न होवे तो एक दिन की पूर्वावधि कह देनी चाहिए। इस प्रकार हृतनष्टादि द्रव्य की प्राप्ति का समय कहना चाहिए आदि शब्द से दूरस्थ मनुष्य के गमनागमन का समय कहना चाहिए॥२९॥

**अधरे रात्रिः कृष्णो घस्रः शुक्लस्तथोत्तरे प्रश्ने।**
**पूर्वादीनां नाथा अष्टौ वर्गाः क्रमेणैव ॥३०॥**

अधर प्रश्न यदि हो तो कृष्णपक्ष की रात्रि कहनी चाहिए, उत्तर प्रश्न यदि हो तो शुक्ल पक्ष का दिन कहना चाहिए, अवर्गादि अष्टवर्ग पूर्वादि दिशाओं के स्वामी क्रम से जान लेना, जिन्हे स्पष्ट रूप से समझने के लिए सारणी में प्रतिपादित कर दिया है,सरलता से समझ सकते है ॥३०॥

**ग्रामो बाह्यं योजनार्द्धं च वर्गाद्द्विघ्नं द्विघ्नं ङादयो दूरदेशम्।**
**आद्यैवर्गः पञ्चभिः स्युर्वसन्तात् ज्ञेया वर्षास्वच्छनीरायुतात्र ॥३१॥**

ग्राम १ ग्रामबाह्य २ योजनार्द्ध ३ योजन ४ द्वियोजन ५ चतुर्योजन ६ अष्ट योजन ७ षोडश योजन ८ इनका अवर्गादि आठ वर्ग के क्रम से स्वामी समझना चाहिए। ङ ञ ण न म यह बहुत योजन के (१६ योजन से अधिक के) स्वामी होते हैं। अवर्गादि नववर्ग जो होते हैं वे वसन्तादि पञ्च ऋतुओं के स्वामी क्रम से समझना चाहिए और वर्षा ऋतु शरदऋतु युक्त जान लेना चाहिये । इसे स्पष्ट रूप से समझने के लिए सारणी में स्पष्ट कर दिया है। समझ लीजिये॥३१॥

**प्रहराधीशा ज्ञेयाश्चानभिघातं विना प्रश्नाः।**
**अष्टौ संयुक्ताद्या युक्तिक्रमतोऽत्र विद्वद्भिः ॥३२॥**

उपर्युक्त संयुक्तादि अष्टपक्ष सूर्योदय से लेकर आठ प्रहर के स्वामी जाने जाते है और अभिघात और अनभिघात को एक ही समझना चाहिए जिसे सारणी स्पष्ट रूप से लिख दिया है, समझ लीजिये ॥३२॥

**काद्या वर्गाः सूर्यवारादिनाथाश्चाद्या सूर्यात्पञ्चमा केतुरुक्तः ।**
**शुक्ले ह्यर्द्धे ह्यौत्तरी चाधरी स्याद्वेला कृष्णे व्यस्तमेवं निशायाम् ॥३३॥**

कादि सप्त प्रकार के वर्ग और अवर्ग इस प्रकार ये अष्टवर्ग सूर्यादि ग्रहों के स्वामी क्रम से होते है, समझ लेना, ङ ञ ण न म ये पांच वर्ण केतुग्रह के स्वामी हैं, शुक्लपक्ष में दिन के पूर्वार्द्ध में औत्तरी वेला, और दिन के उत्तरार्द्ध-में आधरी बेला, कृष्णपक्ष में दिन के पूर्वार्द्ध में आधरी वेला, शुक्लपक्ष में रात्रि के पूर्वार्द्ध में आधरी वेला, शुक्लपक्ष की रात्रि के उत्तरार्द्ध में औत्तरीवेला, कृष्णपक्ष की रात्रि के पूर्वार्द्ध में औत्तरीवेला, कृष्णपक्ष की रात्रि के उत्तरार्द्धमें आधरी वेला जानना चाहिये, इन्हे स्पष्ट रूप से सारणी में समझा दिया गया है, स्पष्ट कर लें ॥३३॥

**१६ श्लोकादारभ्य ३३ श्लोकोक्तानि चक्राणि ।**

| पुरुष | स्त्री | नपुंसक | संज्ञाः |
|---|---|---|---|
| आलिङ्गित | अभिधूमित | दग्ध | संज्ञाः |
| अ इ ओ ए | आ ई ऐ औ | उ ऊ अं अः | स्वराः |
| सत्वम् | रजः | तमः | गुणाः |

| | |
|---|---|
| अ ए क च ट त प य श इ ओ ग ज ड द ब ल स | उत्तराः संयुक्ताः सोख्य-प्रमोदसंज्ञकाश्च सत्त्वाः |
| आ ऐ ख छ ठ थ फ र ष ई औ घ झ ढ ध भ व ह | अधराः असंयुक्ताः व्याधिशोकसंज्ञकाश्च रजाः |
| उ ऊ अं अः ङ ञ ण न माः | मृताः तमः स्वरूपाः |
| अ क च ट त प य शाः | जीविताः । |

| वर्गः | रंग | वस्तुस्वरू० | संज्ञ | जीवाः |
|---|---|---|---|---|
| श | कष्ण | अनन्त स्र | राक्षसाः | उद्भिज्जाः |
| य | हरित | चतुरस्र | पिशाचः | |

<table>
<tr><td>प</td><td>धूम्र</td><td>सुप्तसर्पाक</td><td>परः</td><td rowspan="2">स्वदजाः</td></tr>
<tr><td>त</td><td>पीत</td><td>चक्राकार</td><td>मुनिः</td></tr>
<tr><td>ट</td><td>हरित</td><td>खण्ड</td><td>गन्धर्वाः</td><td rowspan="2">जरायुजाः</td></tr>
<tr><td>च</td><td>पीत</td><td>त्रिकोण</td><td>नागाः</td></tr>
<tr><td>क</td><td>रक्त</td><td>दीर्घ</td><td>दैत्याः</td><td rowspan="2">अण्डजा</td></tr>
<tr><td>अ</td><td>श्वेत</td><td>वतुल</td><td>देवाः</td></tr>
<tr><td>स्वराः</td><td>वर्णाः</td><td>स्वरूपा</td><td colspan="2">जीवा</td></tr>
<tr><td>अः</td><td>कृष्ण</td><td rowspan="2">विषम</td><td rowspan="3">उद्भिज्जाः</td><td rowspan="3">वृक्षादयः</td></tr>
<tr><td>अं</td><td>श्वेत</td></tr>
<tr><td>औ</td><td rowspan="2">वर्बुर</td><td rowspan="2">खण्ड</td></tr>
<tr><td>ओ</td><td rowspan="3">स्वदेजाः</td><td rowspan="3">मनुष्यादयः</td></tr>
<tr><td>ऐ</td><td rowspan="2">रक्त</td><td rowspan="2">चतुरस्र</td></tr>
<tr><td>ए</td></tr>
<tr><td>ऊ</td><td rowspan="2">धूम्र</td><td rowspan="2">त्रिकोण</td><td rowspan="3">जरायुजाः</td><td rowspan="3">मनुष्यादयः</td></tr>
<tr><td>उ</td></tr>
<tr><td>ई</td><td rowspan="2">पीत</td><td rowspan="2">दीर्घ</td></tr>
<tr><td>इ</td><td rowspan="3">अण्डजा</td><td rowspan="3">कुक्कुटादयः</td></tr>
<tr><td>आ</td><td rowspan="2">श्वेत</td><td rowspan="2">वर्तुल</td></tr>
<tr><td>अ</td></tr>
</table>

| संज्ञा | वर्णाः |
|---|---|
| १ चिपिटाः | र ल व ट ठ ड ढ |
| २ अन्धाः | ङ ञ ण न म |
| ३ मूकाः | इ ई ष म ख स |

| | | |
|---|---|---|
| ४ | खल्वाटाः | क ख ग च आ अ |
| ५ | कुब्जाः | ज श उ उ अं अः |
| ६ | बधिराः | श ष स ह |
| ७ | कोमलाः | क ख अ आ ष स |
| ८ | कठोराः | उ त च ऊ छ द |

## विशेषसंज्ञाचक्रम्

| साङ्गाः | खल्वाटाः कोमलौ | खल्वाट-कोमल मूकाश्च | मूकान्धौ | कुब्ज-बधिरौ | मूकबधिर कोमलाश्च | मूकबधिर कोमलाश्च | संज्ञा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ए ऐ ओ औ ऊ य ध प फ ब भ य | क | ख | म | श | ष | स | वर्णाः |

| संयुक्त | असंयुक्त | अभिहित | अनभिहित | पक्षाः |
|---|---|---|---|---|
| स्वदेशाधीशः | स्वदेशभिन्न स्वामी | पुपः | ग्रामबाह्येशः | स्वामिनः |

## पञ्चविंशतिश्लोकोक्तं चक्रम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अकटपशाः इगडवसाः | दिवा शुक्लपक्ष दिनपूर्वावधिः | भक्ष्य | बहुसुगन्धियुता | उत्तरोत्तराः |
| एचतयाः ओजदलाः | दिवा शुक्लपक्ष पक्षावधिः | भक्ष्य | सुगन्धियुताः | उत्तराः |
| ऐछथराः औजधवाः | रात्रिकृष्णपक्ष वर्षावधिः | अभक्ष्य | बहुदुर्गन्धियुताः | अधराधराः |
| आकठफषा इघढभहाः | रात्रिकृष्णपक्ष मासावधिः | अभक्ष्य | दुर्गन्धियुताः | अधराः |
| उऊअंआः ङञणनमाः | दग्धा उभयपक्षगाः | भक्ष्याभक्ष्य | निर्गन्धिकाः | ० |
| उऊवाहो | मपङञ | अधमाः | निष्फलाः | ० |

## वर्गाणां स्थितिचक्रम्

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा | ग्रहाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | क | च | ट | त | प | य | श | वर्गाः |
| पूर्वा | आग्नेयी | दक्षिणा | नैर्ऋती | पश्चिमा | वायव्या | उत्तरा | ऐशानी | दिशः |
| ग्रामे | ग्रामबाह्ये | योजनार्द्धं | योजनम् | द्वियोजनम् | चतुर्योजनम् | अष्टयोजनम् | षोडशयोजनम् | |
| ङ | ञ | ण | न | म | दर | दशे | केतुः | |

## ऋतुचक्रम्

| अ ए क च ट त प यं श | आ ए ख छ ठ थ फ र ष | इ आ ग ज ड द ब ल स | ई ओ घ झ ढ ध भ व ह | उ ऊ अं अः ङ ञ ण न मः |
|---|---|---|---|---|
| वसन्तः १ | ग्रीष्मः २ | वर्षा ३शरत् ४ | हेमन्तः ५ | शिशिरः ६ |

## दिनपूर्वावधिज्ञानचक्रम्।

| संयुक्त | असंयुक्त | अभिहित | अनभिहित | अभिघातक अनभिघातक | आलिङ्गित | अभिधूमित | दग्ध | पक्षाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | प्रहराः |

## वेलाज्ञानचक्रम्

| औत्तरीवेला | आधरीवेला |
|---|---|
| शुक्लपक्षे पूर्वार्द्धदिने | शुक्लपक्षे उत्तरार्द्धदिने |
| कृष्णपक्षे उत्तरार्द्धदिने | कृष्णपक्षे पूर्वार्द्धदिने |
| शुक्ले रात्रौ उत्तरार्द्धे | शुक्लरात्रौ पूर्वार्द्धे |
| कृष्णे रात्रौ पूर्वार्द्धे | कृष्णे रात्रौ उत्तरार्द्धे |

अथ हृत्कमलचक्रस्यावतारमाह।

**आद्यैर्वर्गैरष्टपत्रेषु नाड्यो वर्णैस्तत्त्वान्येब तास्वेव विन्द्यात्।**
**बाणैरब्भिस्तत्त्वभागास्तथासौ ह्रस्वैर्दीर्घैः स्यात्प्रवेशो गम्रश्च ॥३४॥**

**नाडीभिः स्युः सिद्धपक्षाश्च ताभ्यां मासो भागाश्चानुपातेन कल्प्याः।**
**एवं ज्ञात्वा सर्वकालं वदेज्ज्ञो ह्यं वेषस्थो ह्यः परस्थो विकालः ॥३५॥**

इस पद्य में प्रसव तथा गर्भाधान कालज्ञान के अर्थ के साथ हृत्कमलचक्रका अवतार प्रतिपादित करते हैं। हृत्कमल की उत्पत्ति समरसार आदि प्रभृति स्वरग्रन्थों में 'शुक्रादित्रित्रिघस्रैर्हिमगुरथ रविरित्यादि' क्रम से प्रतिपादित की गयी है। हृत्कमलचक्रके अष्ट दल के विषय में अवर्गादि अष्ट वर्ग की स्थापना करें और तत्तत्पत्र में उन वर्गों के वर्णों से पृथिव्यादि के पञ्चतत्त्वों को समझना चाहिए, यथा यवर्ग तथा शवर्ग का आकाशतत्त्व संयुक्तवशात् समझना चाहिए। पञ्च (पांचों) स्वर करके तत्त्वों के भाग समझ लेना चाहिये। ह्रस्व स्वर के संयुक्त वर्णों से प्राण का प्रवेश होता है तथा दीर्घ स्वर के संयुक्त वर्णों से प्राण का गमन होता है, हृत्कञ्जाष्ट नाडी की त्रिरावृत्ति (तीन आवृत्ति करने) से चतुर्विंशति (२४) पक्ष होते हैं, दो पक्ष का एक मास होता है। मासभाग की अनुपात से कल्पना करनी चाहिए। पूर्वोक्त प्रकार को भलिभांति जान करके सभी प्रश्नादिकों की फलप्राप्ति का समय कहना चाहिए, अं स्वर प्राण के प्रवेश में स्थित रहता है, विसर्ग स्वर प्राण के गमन में स्थित रहता है, यह दोनों स्वर विकाल हैं अर्थात् समयशून्य हैं। प्राण का प्रवेश तथा निर्गम बहुत सूक्ष्म है इस विषय में समरसार में कहा गया है। यथा- 'प्रश्ने श्वासान्तर्गमे चेज्जयः स्याद्भङ्गो निर्यात्यत्र सूक्ष्मं तदेतत्।' प्राण कितने काल का लेता हैं, इस विषय में सूर्य सिद्धान्त में लिखा है। 'दशगुर्वक्षरोच्चारण कालः प्राण इत्यभिधीयते। षड्भिः प्राणैर्विनाडी स्यात्तत् षष्ट्या नाडिकाः स्मृताः। नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्त्तितम्॥ तत्त्रिंशता भवेन्मासः सावनोऽर्कोदयैस्तथा। ऐन्दवस्तिथिभिस्तावत् संक्रान्त्या सौर उच्यते। मासैर्द्वादशभिर्वर्षदिव्यं तदह उच्यते॥' हृत्कमलकी एक अहोरात्र में तीन वार आवृत्ति होती है, सूर्योदय से लेकर २० घटिकापर्यन्त सत्त्व का भोग रहता है, और २० घटिका के उपरान्त सूर्योदय से लेकर ४० घटिकापर्यन्त रज का भोग रहता है, ४० घटिका के उपरान्त सूर्योदयपर्यन्त तम का भोग रहता है, यदि प्रश्न पूछने वाला सत्त्व के भोग में प्रश्न करे तो प्रश्नकाल पर्यन्त प्राण-स्थापन करे, यदि प्रश्न पूछने वाला रज के भोग में प्रश्न करे तो सत्त्व का भोग युक्त करे, यदि प्रश्न पूछने वाला तम के भोग में प्रश्न करे तो सत और रज दोनों के भोग युक्त करे, फिर प्राण समूह में ६० का भाग देने पर जो लब्धि मिले वह दिन होते हैं, शेष हो वह कला

कहलाती है, दिन में ३० का भाग देने पर लब्ध राशि होती है, इन राश्यंशकलाको तात्कालिक सूर्य में युक्त करना चाहिए तथा उस सूर्य के तुल्य जब सूर्य आवे तब प्राप्तिकाल कहे, यह स्थूलमान आता है। अब सूक्ष्ममान के प्रकार को लिखते हैं, प्राणसमूह में ६० का भाग देने से जो लब्ध और शेष होवें उनको दो जगह में स्थापित करे, एक को १३ से गुणन करे और ८९० से भाग दे, जो लब्धि आवे वह द्वितीय स्थान में युक्त करे, फिर ३० से भाग देने से लब्ध राश्यादि रवि प्राप्त होता है, उसको तात्कालिक सूर्य में युक्त करने से भविष्य प्राप्ति काल का सूर्य होता है, फिर माससपष्ट की रीति से दिन पूर्व इष्टकाल निकाल लेवें। और विशेष यह है कि हृत्कमलकी एकावृत्ति के ७२०० प्राण होते हैं, दिन रात्रि के प्राण समूह २१६०० इतने होते हैं जो कि ग्रन्थान्तर में लिखा है। यथा 'षट्शतानि दिवारात्रौ सहस्रं त्वेकविंशतिः। हंसहंसेति हंसेति जीवो जपति नित्यशः ॥' आकाशादि तत्त्वों के प्राण समूह में ६ का भाग देने से पल प्राप्त होते हैं, और एक पत्र के प्रवेश निर्गम के ९०० प्राण होते हैं जिसकी ढाई घटी होती है। इसी को सहज रूप में समझने के लिए इसका अर्थ उदाहरण देते हैं, सम्वत् १९४८ शाके १८१३ पौषशुक्ला ११ रवाविष्टम् १४/४४ अत्र रविः ८/२७/१८/८ सत्व भोग में प्रश्न प्राप्त हुआ जिसमें १२ घटी ३० पल पर्यन्त पश्चिम पत्र में प्राण रहता है, इष्टकाल का और पश्चिमपत्र के भोग का अन्तर २/१४ हुआ यह वायव्य पत्र के प्रवेश का तेजसत्त्व पर्यन्त काल रहता है, यह सर्व प्राणसमूह ५३१० हुआ, इसमें ६० का भाग दिया भाग देने पर लब्ध ८८ शेष ३० कला इसको दो जगह रखकर ८८/३० एकत्र १३ से गुणन किया तो इतने ११५०/३० हुए इसमें८९० का भाग दिया तो लब्धी १/१७ हुई इसे द्वितीय जगह में युक्त किया तो ८९६/४७ हुआ इसमें ३० का भाग दिया लब्ध २ राशि शेष २९ अंश कला ४७ इनको तात्कालिक सूर्य में योग किया तो ११/२६/५३/१८ हुआ इस तुल्य सूर्य आवे तब प्राप्ति का समय कहें, महीने की तरह दिनपूर्व इष्ट काल निकाल लेना, इसी प्रकार अन्यत्र जानना। यह अवधि वर्षाभ्यन्तर में ही आती है, वर्ष के उपरान्त जो अवधि कहनी हो उसका प्रकार लिखते है। प्रश्न के समय का तात्कालिक लग्न स्थापन करें, फिर बृहस्पति का स्पष्ट देखे यदि गुरु प्रथम द्रेष्करण में हो तो लग्न के तुल्य वर्ष कहें, तृतीय द्रेष्काण में हो तो नवम भाव राशि के तुल्य वर्ष कहें, पूर्वोक्त अवधि में संयुक्त करके वर्ष कहें ।!!३५ ॥

## ३४/३५ श्लोकोक्तं चक्रम्।
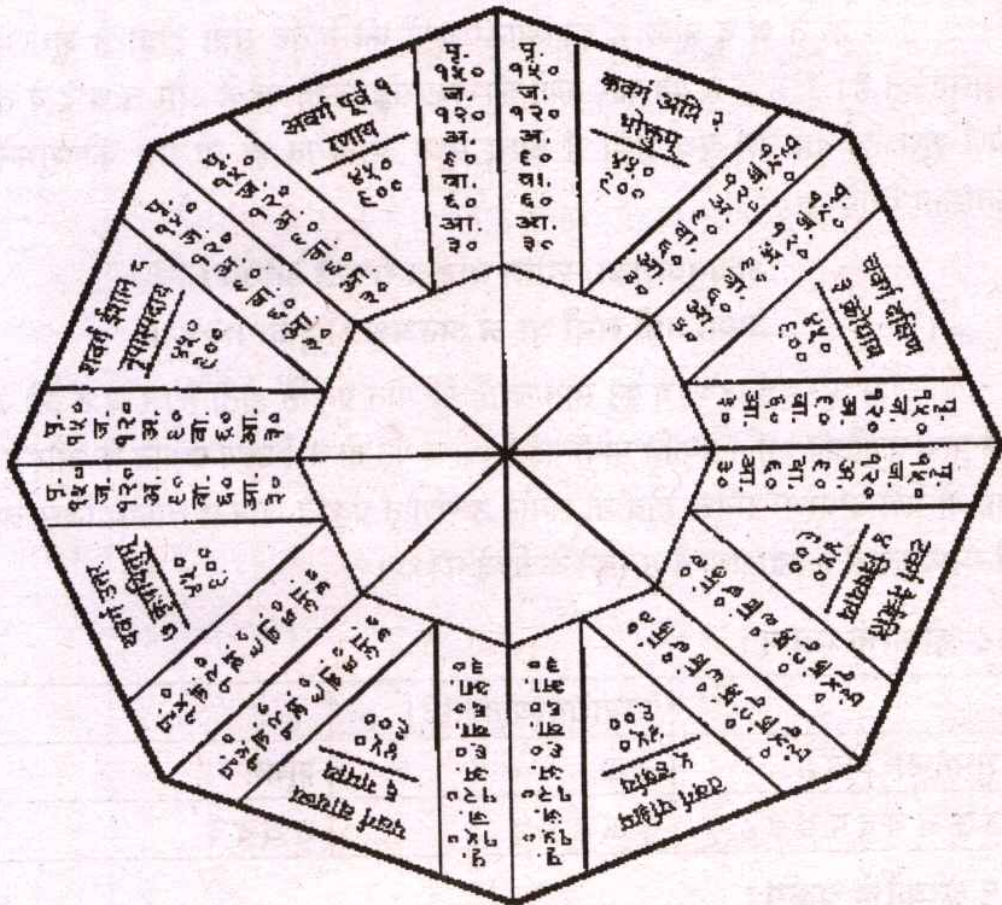
| आलिङ्गित | अभिधूमित | दग्ध |
|---|---|---|
| अ इ ओ ए | आ ई ऐ औ | उ ऊ अं अः |
| जीवः स्वग्रामस्थः मध्यवयः गौरवर्णः | मूलम् अन्यपुरस्थः वृद्धवयः श्यामवर्णः | धातुमृतिः श्यामवर्णः शुभं नहि शून्यं- ज्वारामयदम् |

**जीवः स्वग्रामस्थो मध्यवयो गौरवर्णश्च।**

**आलिङ्गितमभिधूम्रे मूलान्यपुरस्थवृद्धकृष्णाभम् ॥३६॥**

**दग्धं मृतिधात्वसितं न शुभं शून्यं ज्वरामयदम्।**

**षोडशतुल्यो राशिर्ह्युत्तराधरद्विभेदेन ॥३७॥**

पूर्व में बताया गया आधा श्लोक सुगम है इसे चक्र में समझ लीजिये और पूर्व प्रतिपादित संयुक्तादि आठ पक्ष का उत्तराधर के अनुसार दो भेद करके षोडश राशि होती है ॥३६-३७॥

**उऊतथदषङहार्णा निर्वेदाख्यास्तथा मिश्राः।**
**उऊङहा आद्यान्तरगा नेष्टाः शुभास्तथदाः ॥३८॥**

उ ऊ त थ द ष ङ ह इन आठ वर्णों की निर्वेद संज्ञा होती है शुभ नेष्ट सम्मिलित है। उ ऊ ङ ह यह चार वर्णों की नेष्ट संज्ञा कही गई है और त थ द ये तीन वर्ण शुभ हैं, यह वर्ण प्रश्न श्रेणी में आद्य मध्य अन्त्यगत हो तो प्रश्न को शुभनेष्ट समझना चाहिए॥३८॥

**अचतुकशयाः शीता वह्निश्च रोचटौ ओऔ।**
**उष्णौ तपौ समौ वा अं अउऊश्च चेद्युक्तः ॥३९॥**

अ आ इ ई क श य इन सात वर्णों की शीत प्रकृति होती है। र च ट ओ औ इन पांच वर्णों की अग्नि प्रकृति मानी गई है। त प यह दो वर्ण उष्ण प्रकृति के और त प यह दो वर्ण दग्धस्वर संयुक्त होवे तो समान उष्णशीत प्रकृति जानना चाहिये जिसे चक्र में स्पष्ट रुप से लिखा गया है समझने के लिये॥३९॥

**३८ श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| | प्रश्नाद्यमध्यांतगताः। | |
|---|---|---|
| शुभनेष्टाः निर्वेदाः | नेष्टाः | शुभाः |
| उ ऊ त थ द ष ङ ह ८ | उ ऊ ङ ह ४ | त थ द ३ |

**३९ श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| शीताः | वह्निः | उष्णः | अनुष्णशीतौ |
|---|---|---|---|
| अ आ इ ई<br>क श य | ओ औ र<br>च ट | त प | तं तः पं पः<br>तु तू पु पू |

अथ तिथिसंज्ञामाह।

**काद्या वर्णा ङादिहीना युताश्चेत् ह्रस्वैः शुक्ले पक्षतेः स्युश्च तिथ्यः।**
**हाद्व्यस्तास्ते चाधरैः संयुताश्चेत् कृष्णे तिथ्यो ङादिभिः पञ्चदश्यौ॥४०॥**

ङ ञ ण न म इन वर्णों के रहित ककारादि अष्टादश वर्ण ह्रस्व स्वर संयुक्त होवे तो शुक्लप्रतिपदादि तिथि होती है, और हकारादि व्यस्त दीर्घ स्वर संयुक्त होवे तो कृष्णप्रतिपदा से तिथि होती है, और अकारादि पांच वर्ण ह्रस्वस्वर संयुक्त होवे तो पौर्णिमा समझना, दीर्घ स्वर युक्त होवे तो अमावस्या जान लेना चाहिए जिसे चक्र में स्पष्ट करके लिखा है। समझ लेना चाहिये॥४०॥

## चत्वारिंशच्छ्लोकोक्तं तिथिचक्रम्।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | तिथिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ | च | छ | ज | झ | ट | ठ | ड | ढ | त | थ | |
| कि | खि | गि | घि | चि | छि | जि | झि | टि | ठि | डि | ढि | ति | थि | |
| कु | खु | गु | घु | चु | छु | जु | झु | टु | ठु | डु | ढु | तु | थु | |
| के | खे | गे | घे | चे | छे | जे | झे | टु | ठे | डे | ढे | ते | थे | |
| को | खो | गो | घो | चो | छो | जो | झो | टो | ठो | डो | ढो | तो | थो | |
| कं | खं | गं | घं | चं | छं | जं | झं | टं | ठं | डं | ढं | तं | थं | |

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | तिथिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| द | ध | प | फ | ब | भ | य | र | ल | व | श | ष | स | ह | |
| दि | धि | पि | फि | बि | भि | यि | रि | लि | वि | शि | षि | सि | हि | |
| दु | धु | पु | फु | बु | भु | यु | रु | लु | वु | शु | षु | सु | हु | |
| दे | धे | पे | फे | बे | भे | ये | रे | ले | वे | शे | षे | से | हे | |
| दो | धो | पो | फो | बो | भो | यो | रो | लो | वो | शो | षो | सो | हो | |
| दं | धं | पं | फं | बं | भं | यं | रं | लं | वं | शं | षं | सं | हं | |

| १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | तिथिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| का | खा | गा | घा | चा | छा | जा | झा | टा | ठा | डा | ढा | ता | था | |
| की | खी | गी | घी | ची | छी | जी | झी | टी | ठी | डी | ढी | ती | थी | |
| कू | खू | गू | घू | चू | छू | जू | झू | टू | ठू | डू | ढू | तू | थू | |
| कै | खै | गै | घै | चै | छै | जै | झै | टै | ठै | डै | ढै | तै | थै | |
| कौ | खौ | गौ | घौ | चौ | छौ | जौ | झौ | टौ | ठौ | डौ | ढौ | तौ | थौ | |
| कः | खः | गः | घः | चः | छः | जः | झः | टः | ठः | डः | ढः | तः | थः | |

| १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | तिथि: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दा | धा | पा | फा | बा | भा | या | रा | ला | वा | शा | षा | सा | हा | |
| दी | धी | पी | फी | बी | भी | यी | री | ली | वी | शी | षी | सी | ही | |
| दू | धू | पू | फू | बू | भू | यू | रू | लू | वू | शू | षू | सू | हू | |
| दै | धै | पै | फै | बै | भै | यै | रै | लै | वै | शै | षै | सै | है | |
| दौ | धौ | पौ | फौ | बौ | भौ | यौ | रौ | लौ | वौ | शौ | षौ | सौ | हौ | |
| दः | धः | पः | फः | बः | भः | यः | रः | लः | वः | शः | षः | सः | हः | |

**४० श्लोकोक्तं चक्रम्**

उत्तरस्वरयुता वर्णाः।

पौर्णमासी १५।

| ङ | ञ | ण | न | म |
|---|---|---|---|---|
| ङ | ञि | णि | नि | मि |
| ङ | ञु | णु | नु | मु |
| ङ | ञे | णे | ने | मे |
| ङ | ङ | णं | नं | मं |

अधरस्वरयुता वर्णाः।

अमावास्या ३०।

| ङ | ञा | णा | ना | मा |
|---|---|---|---|---|
| ङी | ञी | णी | नी | मी |
| ङू | ञू | णू | नू | मू |
| ङे | ञै | णै | नै | मै |
| ङः | ञः | णः | नः | मः |

अथ नक्षत्रानयनमाह।

**काद्या वर्णा ङाद्यैर्हीनाश्चेत्संयुक्ता ह्रस्वैः प्रश्ने।**
**वह्नेर्द्धिष्णानि स्युर्दीर्घैर्युक्तास्तर्ह्यग्र्यर्क्षाद् द्वाविंशद्भात् ॥४१॥**

ङकारादि पांच वर्ण रहित ककारादि अष्टादश ह्रस्व स्वरयुक्त होवे तो कृत्तिकादि अष्टादश नक्षत्र क्रम से जानना चाहिए, और यदि दीर्घस्वर युक्त होवे तो धनिष्ठादि नक्षत्रक्रम से समझना, और ङकारादि पांच वर्ण को अपने अपने पूर्व वर्णयुक्त जानना चाहिये जिसे समझने के लिए स्पष्ट रुप से चक्र में प्रतिपादित कर दिया है । चक्र में स्पष्ट रूप से लिखा दिया है समझ लीजिये ॥४१॥

| भ | ह | हि | हु | हे | हो | हं | श्र | हा | ही | हू | है | हौ | हः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | स | सि | सु | से | सो | सं | भि | सा | सी | सू | सै | सौ | सः |
| रे | ष | षि | षु | षे | षो | षं | उऽ | षा | षी | षू | षै | षौ | षः |
| उ | श | शि | शु | शे | शो | शं | पू | शा | शी | शू | शै | शौ | शः |
| पू | व | वि | वु | वे | वो | वं | मू | वा | वी | वू | वै | वौ | वः |
| श | लं | लि | लु | ले | लो | लं | ज्ये | ला | ली | लू | लै | लौ | लः |
| ध | र | रि | रु | रे | रो | रं | अ | रा | री | रू | रै | रौ | रः |
| श्र | य | यि | यु | ये | यो | यं | वि | या | यी | यू | यै | यौ | यः |
| ऽभि | भ म | भिमि | भु मु | भे मे | भो मो | भं मं | स्वा | भा मा | भी मी | भू मू | भै मै | भौ मौ | भःमः |
| उ | ब | बि | बु | बे | बो | बं | चि | बा | बी | बू | बै | बौ | बः |
| पू | फ | फि | फु | फे | फो | फं | ह | फा | फी | फू | फै | फौ | फः |
| मू | प | पि | पु | पे | पो | पं | उ | पा | पी | पू | पै | पौ | पः |
| ज्ये | ध न | नि | नु | धे ने | धो नो | धं नं | पू | धा ना | धी नी | धू नू | धै नै | धौ नौ | धःनः |
| अ | द | दि | दु | दे | दो | दं | म | दा | दी | दू | दै | दौ | दः |
| वि | थ | थि | थु | थे | थो | थं | श्ले | था | थी | थू | थै | थौ | थः |
| स्वा | त | ति | तु | ते | तो | तं | पु | ता | ती | तू | तै | तौ | तः |
| चि | ढ ण | ढिणि | ढु णु | ढे णे | ढो णो | ढं णं | पु | ढा णा | ढीणी | ढू णू | ढै णै | ढौ णौ | ढःणः |
| ह | ड | डि | डु | डे | डो | डं | आ | डा | डी | डू | डै | डौ | डः |
| उ | ठ | ठि | ठु | ठे | ठो | ठं | मृ | ठा | ठी | ठू | ठै | ठौ | ठः |
| पू | ट | टि | टु | टे | टो | टं | रो | टा | टी | टू | टै | टौ | टः |
| म | झ ञ | झिञि | झु ञु | झे ञे | झोञो | झं ञं | कृ | झाञा | झीञी | झू ञू | झै ञै | झौञौ | झःञः |
| श्ले | ज | जि | जु | जे | जो | जं | भ | जा | जी | जू | जै | जौ | जः |
| पु | छ | छि | छु | छे | छो | छं | अ | छा | छी | छू | छै | छौ | छः |
| पु | च | चि | चु | चे | चो | चं | रे | चा | ची | चू | चै | चौ | चः |
| आ | घ ङ | घिङि | घु ङु | घे ङे | घो ङो | घं ङं | उ | घाङा | घी ङी | घू ङू | घै ङै | घौ ङौ | घः ङः |
| मृ | ग | गि | गु | गे | गो | गं | पू | गा | गी | गू | गै | गौ | गः |
| रो | ख | खि | खु | खे | खो | खं | श | खा | खी | खू | खै | खौ | खः |
| कृ | क | कि | कु | के | को | कं | ध | का | की | कू | कै | कौ | कः |

आलिङ्गितवेलामाह।

**दिग्भिर्दिग्भिर्नाडिकाभिः क्रमेण ज्ञेया वेलालिङ्गितादिस्वराणाम्।**
**व्यस्तं रात्रौ त्र्यंशयुग्वह्निदण्डैस्तत्पूर्वाणामन्तराभुक्तिरुक्ता ॥४२॥**

दश दश घटिका १० का मान आलिङ्गितादि वेला का स्थूलमान है, दिन प्रमाण के तीन विभाग करे, सूर्योदय से प्रथम विभाग में आलिङ्गित वेला जानना, द्वितीय विभाग में अभिधूमित वेला समझना, तृतीय विभाग में दग्ध वेला समझना, और रात्रि के प्रथम त्र्यंश में आलिङ्गित वेला समझना, और त्र्यंश का त्र्यंश करके वेलापूर्वक अन्तर्भुक्ति जान लेनी चाहिये जिसे समझने के लिए स्पष्ट रुप से चक्र में प्रतिपादित कर दिया है ॥४२॥

**४२ श्लोकोक्तं चक्रम् । दिवावेलाक्रमः ।**

| आलिङ्गित | | | अभिधूमित | | | दग्ध | | | दिग्भिरित्युपक्षलणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | | | १० | | | १० | | | दिनमान त्र्यंशे |
| आ | अ | द | अ | द | आ | द | आ | अ | अन्तराभुक्तित्र्यंशे-स्यापि |
| ३<br>२० | ६<br>४० | १०<br>०० | १३<br>२० | १६<br>४० | २०<br>०० | २३<br>२० | २६<br>४० | ३०<br>०० | त्र्यंशे |

**रात्रौ वेलाक्रमः**

| दग्ध | | | अभिधूमित | | | आलिङ्गित | | | दिग्भिरित्युपक्षलणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | | | १० | | | १० | | | निशात्र्यंश |
| द | अ | अ | अ | द | आ | आ | अ | द | त्र्यंशस्यापि त्र्यंश अन्तराभुक्तिः |
| ३<br>२० | ३<br>२० | ३<br>२० | ३<br>२० | ३<br>२० | ३<br>२० | ३<br>२० | ३<br>२० | ३<br>२० | त्र्यंशे |

अथ संयुक्तादिवेलामाह।

**संयुक्ताप्रभृतीनां यत्र स्यादष्टसम्मिता संख्या ।**
**तत्रानभिघाताख्यं ह्यभिघातान्तर्बुधैर्वेद्यम् ॥४३॥**

पूर्व प्रतिपादित संयुक्तादि पक्ष की जहां आठ संख्या है उस जगह अनभिघात को अभिघात के अन्तर्गत समझना चाहिये ॥४३॥

**वेदाग्निपञ्चाब्धिगुणाङ्गदस्रारामैर्मिताः स्युर्घटिकाः क्रमेण ।**
**सूर्योदयात् संयुतपूर्वकाणामेवं बुधैस्तत्परतोऽपि वेद्यम् ॥४४॥**

सूर्योदय से ४ घटिका पर्यन्त संयुक्तकाल रहता है, फिर ३ घटिका असंयुक्तकाल रहता है, इसके बाद ५ घटिका अभिहित काल रहता है, फिर ४ घटिका अनभिहित काल रहता है, तदन्तर ३ घटिका अभिघातककाल रहता है, इसके बाद ६

घटिका आलिङ्गित काल रहता है, फिर ९ घटिका अभिधूमित काल रहता है, फिर ३ घटिका दग्धकाल रहता है। ३० घटिका से उपरान्त पूर्वोक्त प्रकार से फिर जान लेना जिसे चक्र में प्रस्फुट लिख दिया है समझ लीजिये ॥४४॥

**४४ श्लोकोक्तं चक्रम्**

| पृच्छाः | संयुक्त | असंयुक्त | अभिहित | अनभिहित | अभिघातक | आलिङ्गित | अभिधूमित | दग्ध |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घटीमान | ४ | ३ | ५ | ४ | ३ | ६ | २ | ३ |
| अहोरात्र | ४ | ७ | १२ | १६ | १९ | २५ | २७ | ३० |
| घट्यः | ३४ | ३७ | ४२ | ४६ | ४९ | ५५ | ५७ | ६० |

इति केरलीप्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां संज्ञाप्रकरणम् ॥१॥

अथ संयुक्तादिसंज्ञामाह।

**प्रथमतृतीयाक्षरयोः संयुक्तेति स्वतो मिथश्चाख्याः।**
**समवर्णयोश्च तद्वन्नगवर्गाणामसंयुक्ताः ॥१॥**

प्रश्नश्रेणी के आरम्भ के दो वर्ण से संयुक्तादि नव संज्ञा कहते हैं, आदि सात वर्गों के प्रथम तृतीय और तृतीय प्रथम और प्रथम प्रथम और तृतीय तृतीय वर्ण की संयुक्त संज्ञा कही गयी है, और द्वितीय चतुर्थ और चतुर्थ द्वितीय और द्वितीय द्वितीय और चतुर्थ चतुर्थ वर्णों की असंयुक्त संज्ञा कही गयी है, इसे सरलता से समझने के लिए चक्र में स्पष्ट कर दिया है ॥१॥

**प्रश्नार्णौ चेत् क्रमगावभिहितसंज्ञं तथानभिहितं च।**
**एकैकद्वित्र्यर्णाः परगेष्वब्धीषुबाणाढ्याः ॥२॥**

प्रश्नश्रेणी के प्रथम दो वर्ण वर्ग के क्रम से होवे तो अभिहित संज्ञा होती है। इसी प्रकार प्रथम द्वितीय और द्वितीय तृतीय और तृतीय चतुर्थ और चतुर्थ पञ्चम वर्ण की अभिहित संज्ञा होती है। प्रथम पञ्चम और प्रथम चतुर्थ और द्वितीय पञ्चम और तृतीय पञ्चम वर्णों की अनभिहित संज्ञा होती है ॥२॥

**अभिघातं स्यात् पूर्वं वेदद्वित्र्यब्धिवर्णाश्चेत्।**
**नगवर्गाणां परतो धरणीचन्द्रद्विरामाढ्याः ॥३॥**

क आदि सात वर्गों के चतुर्थ प्रथम और द्वितीय प्रथम और तृतीय द्वितीय और चतुर्थ तृतीय वर्ण के क्रम से प्रश्न श्रेणी में होवे तो अभिघात संज्ञा होती है ॥३॥

**पञ्चमवर्णः पूर्वं वर्गे काद्यर्णसंयुक्तः ।**
**ज्ञेयोऽनभिघाताख्यश्चिन्तादारिद्र्यदुखदः प्रोक्तः ॥४॥**

पञ्चम प्रथम और पञ्चम द्वितीय और पञ्चम तृतीय और पञ्चम चतुर्थ और पञ्चम पञ्चम वर्णों की अनभिघात संज्ञा होती है। अनभिघात संज्ञक चिन्ता दुःख और दारिद्र्य को देने वाला होता है ॥४॥

**आलिङ्गितमइओएआईऐओ तथाभिधूम्राख्यम् ।**
**दग्धं च उऊअंअः प्रश्नाद्यगते च विज्ञेयम् ॥५॥**

प्रश्नश्रेणी के आरम्भ में यदि केवल स्वर हो तो आलिङ्गित आदि तीन संज्ञा होती है। यदि अ इ ओ ए ये चार स्वर हो तो आलिङ्गित प्रश्न होता है, और यदि आ ई ऐ औ ये चार स्वर हो तो अभिधूम्र नामक प्रश्न होता है, तथा उ ऊ अं अः ये चार स्वर हो तो दग्ध प्रश्न होता है ॥५॥

अथ संयुक्तादिनवपक्षाणां भेदसंख्यामाह।

**पञ्चानभिघाताख्ये भेदा वेदाश्च शेषाणाम् ।**
**सर्वेषामगरामाः ३७ स्वान्यैर्मिलिता ह्यनन्ताः स्युः ॥६॥**

अभिघात के पांच भेद होते हैं, शेष आठ पक्षों के चार चार भेद होते हैं, इस प्रकार कुल (सडसठ) ६७ भेद होते हैं, और अन्य भेद मिलाने से अनन्त भेद होते हैं, चार को आठ गुणित करने से ३२ होते हैं और पांच अभिघात को इसमें योग करने से ३७ भेद हुए। अब इनके भेद चक्र में लिखे हैं ॥६॥

१/२/३/४/५/६ श्लोकोक्तं चक्रम्

| संयुक्त १ | असंयुक्त २ | अभिहित ३ | अनभिहित ४ | अभिघात ५ | अनभिघात ६ | आलिङ्गित ७ | अभिधूमित ८ | दग्ध ९ | सर्वेषां भेदाः ३७ मिलिता ह्यनन्ताः । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | ५ ५ | | | | |
| ३ १ | ४ २ | ४ ५ | ३ ५ | ४ ३ | ५ ४ | ए | औ | अः | |
| १ ३ | २ ४ | ३ ४ | २ ५ | ३ २ | ५ ३ | ओ | ऐ | अं | |
| ३ ३ | ४ ४ | २ ३ | १ ४ | २ १ | ५ २ | इ | ई | ऊ | |
| १ १ | २ २ | १ २ | १ ५ | ४ १ | ५ १ | अ | आ | उ | |

अथैषां फलमाह।

**उत्तमचिन्तालाभः संयुक्ते द्रव्यपुत्रेच्छा।**
**अयुतेऽधमा प्रवासः स्त्रीद्रव्येच्छा कदा सौख्यम् ॥७॥**

संयुक्त आदि प्रश्नों के फल इस प्रकार है - यदि प्रश्नकर्ता का संयुक्त प्रश्न होवे तो उत्तम चिन्ता, लाभ, द्रव्य, पुत्र आदि की इच्छाविषयक प्रश्न जानें और असंयुक्त प्रश्न होवे तो अधम, चिन्ता, प्रवास, स्त्री, द्रव्य की इच्छा तथा किस काल में सुख प्राप्त होगा ऐसा प्रश्न जानें ॥७॥

**अन्येभ्योऽहितसौख्यं लाभाहितेऽनभिहिते च।**
**मृज्जीवनसन्देहोद्वेगर्णजबन्धनादिभयम् ॥८॥**

यदि प्रश्नकर्ता का अभिहित प्रश्न होवे तो दूसरे से लाभ की प्राप्ति और सौख्य का प्रश्न जानें। यदि प्रश्नकर्ता का अनभिहित प्रश्न होवे तो मृत्यु, जीवन का सन्देह और उद्वेग, ऋण, बन्धनादि का भय हो ऐसा प्रश्न जानें ॥८॥

**बन्धोद्वेगरणेभ्यो भयमभिघाते तथा लिङ्गे।**
**स्वग्राममित्रचिन्ता ह्यभिधूम्रे शत्रुचिन्ता स्यात् ॥९॥**

यदि प्रश्नकर्ता का अभिघात प्रश्न होवे तो बन्धन का, उद्वेग का, संग्रामादि भय का प्रश्न कहना, और यदि आलिङ्गित प्रश्न होवे तो अपने गॉव की, मित्र की, चिन्ता कहनी चाहिए, यदि अभिधूम्र प्रश्न होवे तो शत्रु विषयक चिन्ता कहनी चाहिए ॥९॥

**रोगातुरादिदग्धे ह्यभिघाते स्यादनभिघातम्।**
**पिण्डं पञ्चविभक्तं द्वाभ्यां शस्तं परेष्वशुभम् ॥१०॥**

यदि प्रश्नकर्ता का दग्ध प्रश्न होवे तो रोगातुर का आदि शब्द से निद्रा, क्षुधा, स्वप्नादिक का प्रश्न कहना, और अनभिघात को अभिघात के अन्तर्गत समझ लेना। प्रतिपादित रीति से पिण्ड बनाकर पांच से भाग लेना, और शेष २ बचने से विचारणीय कार्य श्रेष्ठ कहना, यदि एक, तीन, चार या शून्य शेष रहे तो अशुभ कहना ॥१०॥

**स्याद्यदाद्यर्णपरा मात्रालिङ्गादिकं तर्हि।**
**ज्ञेयं तदैव यद्वन्नाउ दग्धश्च भाषायाम् ॥११॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आरम्भ में वर्ण (व्यञ्जन) और द्वितीय स्वर होवे तो आलिङ्गितादि तीन संज्ञा होती हैं, वर्ण के आगे जो स्वर हो उसकी जो संज्ञा हो वही संज्ञा उसकी भी जाननी चाहिए। इसका उदाहरण इस प्रकार हैं। मध्यदेश की भाषा में

जो नाउ शब्द है वह दग्ध है, इसी प्रकार से दाउभाउमाउ इत्यादि जान लेना एवं नाई माई अभिधूमित, जाओ खाओ आदि की आलिङ्गित संज्ञा होती है ॥११॥

**वेदादिसंख्यासहितान् सुपूर्वान् वर्गांल्लिखेदस्य रविप्रभेदात्।**
**अतोर्णमात्राजनितं तु पिण्डं सूक्ष्मं च संयुक्तवियुक्तयोः स्यात् ॥१२॥**

अवर्गादि आठ वर्ग वेदादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धि से लिखें और उन वर्गों के वर्ण भी तत्तत् संख्या करके एकोत्तर वृद्धि से लिखे, जिसमें अकारादि द्वादश मात्रा के दो वर्ग होते हैं, और यदि संयुक्त, असंयुक्त, प्रश्न होवे तो इस सूक्ष्म चक्र से वर्णमात्राजनित पिण्ड उत्पादन करे। जिसे चक्र में स्पष्ट रुप से समझने के लिए लिख दिया है ॥१२॥

सूक्ष्मपिण्डांकचक्रम्

१२ श्लोकोक्त युक्तासंयुक्तयोः

| अ ४ | आ ५ | क ५ | च ६ | ट ७ | त ८ | प ९ | य १० | श ११ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ ६ | ई ७ | ख ६ | छ ७ | ठ ८ | थ ९ | फ १० | र ११ | ष १२ |
| उ ८ | ऊ ९ | ग ७ | ज ८ | ड ९ | द १० | ब ११ | ल १२ | स १३ |
| ए १० | ए ११ | घ ८ | झ ९ | ढ १० | ध ११ | भ १२ | व १३ | ह १४ |
| ओ १२ | औ १३ | ङ ९ | ञ १० | ण ११ | न १२ | म १३ | ० | ० |
| अं १४ | अः १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

**एकद्ध्यां नववर्गाणां तद्वर्णानां च तत्क्रमात्।**
**ज्ञेया संख्यार्णमात्रोत्था चतुर्ष्वभिहितादिषु ॥१३॥**

यदि प्रश्नकर्ता का अभिहित १ अनभिहित२ अभिघातक ३ अनभिघातक ४ यह चार प्रश्न होवे तो इस चक्र से वर्णमात्राजनित पिण्ड उत्पादन करे, जिसे इस प्रकार लिखते हैं। अवर्गादि नववर्ग एकादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धि से लिखें, उन वर्गों के वर्ण भी तत्तत् संख्या से एकोत्तर वृद्धि क्रम से लिखनी चाहिए ॥१३॥

### अभिहितादि चतुर्षु पिण्डाङ्कचक्रम्

| अ<br>१ | ए<br>२ | क<br>३ | च<br>४ | ट<br>५ | त<br>६ | प<br>७ | य<br>८ | श<br>९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ<br>२ | ऐ<br>३ | ख<br>४ | छ<br>५ | ठ<br>६ | थ<br>७ | फ<br>८ | र<br>९ | ष<br>१० |
| इ<br>३ | ओ<br>४ | ग<br>५ | ज<br>६ | ड<br>७ | द<br>८ | ब<br>९ | ल<br>१० | स<br>११ |
| ई<br>४ | औ<br>५ | घ<br>६ | झ<br>७ | ढ<br>८ | ध<br>९ | भ<br>१० | व<br>११ | ह<br>१२ |
| उ<br>५ | अं<br>६ | ङ<br>७ | ञ<br>८ | ण<br>९ | न<br>१० | म<br>११ | ० | ० |
| ऊ<br>६ | अः<br>७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

**एकद्ध्यादीनष्टौ वर्गान् कृत्वा ज्ञेया मात्राणोंत्था।**
**संख्यालिङ्गाद्यप्रश्ने त्रिष्वप्यस्य द्विषड्भेदाः ॥१४॥**

यदि आलिंगितादि तीन पक्ष में प्रश्न होवे तो आगे दर्शित चक्र के अनुसार पिण्ड उत्पादन करें, अवर्गादि आठ वर्ग एकादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धि से लिखें, उन वर्गों के वर्ण भी तत्तत् संख्या से एकोत्तर वृद्धि क्रम से लिखें, इन तीन चक्रों में अवर्ग के द्वादश (बारह) भेद बताये गये हैं जिन्हें स्पष्ट रुप से समझने के लिए चक्र में दर्शा दिया गया है ॥१४॥

### चतुर्दशश्लोकोक्तं आलिङ्गितादीनां चक्रम्।

| अ<br>१ | आ<br>२ | क<br>२ | च<br>३ | ट<br>४ | त<br>५ | प<br>६ | य<br>७ | श<br>८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ<br>३ | ई<br>४ | ख<br>३ | छ<br>४ | ठ<br>५ | थ<br>६ | फ<br>७ | र<br>८ | ष<br>९ |
| उ<br>५ | ऊ<br>६ | ग<br>४ | ज<br>५ | ड<br>६ | द<br>७ | ब<br>८ | ल<br>९ | स<br>१० |
| ए<br>७ | ऐ<br>८ | घ<br>५ | झ<br>६ | ढ<br>७ | ध<br>८ | भ<br>९ | व<br>१० | ह<br>११ |
| ओ<br>९ | औ<br>१० | ङ<br>६ | ञ<br>७ | ण<br>८ | न<br>९ | म<br>१० | ० | ० |
| अं<br>११ | अः<br>१२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

अथ गुणाकारमाह।

**संयुक्ते तद्द्विगुणं वेदगुणं स्यादसंयुक्ते।**
**गजनिघ्नंचाभिहितेऽनभिहितप्रश्ने विवस्वघ्नम् ॥१५॥**

यदि संयुक्त प्रश्न हो तो पिण्ड को २ (दो) से गुणन करे और यदि असंयुक्त प्रश्न हो तो पिण्ड को ४ (चार) से गुणा करें तथा अभिहित प्रश्न में पिण्ड को ८(आठ) से गुणा करें, अनभिहित प्रश्न में पिण्ड को १२ (बारह) से गुणा करें ॥१५॥

**अभिघाते तिथिनिघ्नं तदनभिघाते च मेघघ्नम्।**
**भूकररामगुणं स्यात्प्रश्नेऽथालिङ्गितादिषु क्रमतः ॥१६॥**

इसी प्रकार अभिघात प्रश्न में पिण्ड को पञ्चदश १५ से गुणा करें तथा अनभिघात प्रश्न हो तो पिण्ड को सप्तदश १७ से गुणा करें, आलिङ्गित प्रश्न में पिण्ड को एक से गुणा करें, अभिधूमित प्रश्न में पिण्ड को द्विगुणित (दुगना) करें और दग्ध प्रश्न हो तो पिण्ड को त्रिगुणित (तीन गुणा) करें ॥१६॥

| संयुक्त | असंयुक्त | | अनभिहित | अभिघात | अनभिघात | आलिङ्गित | अभिधूमित | दग्ध | पक्षाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ४ | ८ | १२ | १५ | १७ | १ | २ | ३ | गुणांकाः |

**संयुक्ताद्या प्रश्नवर्णद्विकोत्था संज्ञा ज्ञेयालिङ्गिताद्यास्वरश्चेत्।**
**तत्पिण्डं तत्प्रोक्तचक्रैर्गुणेन स्वेनाभ्यस्तं तेन सर्वं विदध्यात् ॥१७॥**

प्रश्नश्रेणी के आरम्भ के दो वर्ण से संयुक्तादि छः संज्ञा होती है और मात्रा आदि में होने से आलिंगितादि तीन संज्ञा होती है, जिस संज्ञा का प्रश्न होवे उस संज्ञा के चक्र से पिण्ड उत्पादन करके उसमें अपने गुण से पिण्ड को गुणा करें, गुणक गुणित पिण्ड से बताये गये भूतादि त्रिकालका ज्ञान कहना चाहिए, सर्व शब्द करके पिण्डको श्रेष्ठ कहा गया है।१७॥

अथ भूतादिकालज्ञानमाह।

**आलिङ्गिते तत्कुयुतं कुहीनं दग्धेऽभिधूम्रे गुणभक्तशेषे।**
**रूपे ह्यतीतं द्विमितेऽस्ति शून्यं भाव्यं वदेल्लब्धमनष्टमत्र ॥१८॥**

भूतादि समय का ज्ञान करने के लिये संयुक्तादि नव (९) पक्षों के बीच में प्रश्नश्रेणी के यदि आदि वर्ण में आलिङ्गित मात्रा होवे तो गुणक और गुणित पिण्ड में एक

का योग युक्त करें, और मात्रा होवे तो एक हीन (कम) करें, अभिधूम्र मात्रा हो तो यथास्थिति रखें, और विशेष कहते हैं - यदि प्रश्नश्रेणी के आदि में दग्धवर्ण आदि धूम्र स्वर हो तो एक हीन (कम) करें। तदुक्तम्। 'दग्धाक्षरेऽभिधूम्रश्चेत्तदहानि स्मृता बुधैः।' फिर उस पिण्ड में ३ (तीन) का भाग दें यदि एक शेष हो तो भूतकाल का प्रश्न कहना, दो शेष रहे तो वर्तमान काल का प्रश्न कहना, शून्य शेष रहे तो भविष्य काल का प्रश्न कहना। अब बालबोधार्थ उदाहरण देते हैं, किसी पृच्छक ने चंपक ऐसा उच्चारण किया तो संयुक्त प्रश्न हुआ, सूक्ष्म चक्रपिण्ड बनाया, यथा चक्र में देख लीजिये। वर्णांक योग २० हुआ तथा स्वराङ्क योग २२ हुआ, इन दोनों का योग ४२ हुआ, इस गुणक को दो से गुणा किया तो ८४ स्फुट पिण्ड हुआ, यहां प्रश्नश्रेणी की आदि में दग्ध मात्रा है इसलिये एक शोधन (कम) किया तो ८३ स्फुट पिण्ड हुआ २७ प्राप्त हुआ तथा शेष २ रहे तो यह प्रश्न वर्तमान काल का प्रश्न हुआ, इसी प्रकार सभी जगह जानना चाहिये। यहाँ इसमें तीन का भाग देने से लब्ध होवे उसको नष्ट नहीं करना, तथा कहना चाहिये कि कार्यसिद्धि होगी ॥१८॥

| चं | प | क | वर्णाः |
|---|---|---|---|
| ६ | ९ | ५ | वर्णाङ्काः |
| १४ | ४ | ४ | मात्राङ्काः |

अथ मात्रादिद्वारातीतादिज्ञानं मूकप्रश्ने कश्चिद्विशेषं चाह।

**दग्धेऽतीतं लिङ्गिते वर्त्तमानं भाव्यं धूम्रेऽथो ह्यतीते चतुष्पात्।**
**ज्ञेयो नीचैरुत्तरैर्द्व्यंघ्रिजातिर्दग्धाज्वर्णैः पद्वियुक्पद्वजाढ्यः ॥१९॥**

यदि प्रश्न श्रेणी के आदि में दग्ध स्वर होवे तो भूतकाल का प्रश्न कहना चाहिये, तथा यदि आलिंगित स्वर होवे तो वर्त्तमान काल का प्रश्न कहना, इसी प्रकार अभिधूम्र स्वर होवे तो भविष्यकाल का प्रश्न कहना, और भी इसमें विशेष कहते हैं। यदि अतीत काल का प्रश्न होवे और स्वरवर्ण अधर होवे तो चतुष्पदका प्रश्न कहें, और उत्तर स्वरवर्ण होवे तो द्विपद का प्रश्न कहना और दग्ध स्वर होवे तो अपद का प्रश्न कहना, दग्ध वर्ण होवे तो बहुपाद का प्रश्न कहना ॥१९॥

**विद्यते शुभमथोत्तरवर्णैश्चाधरैरशमथोर्णजपिण्डम्।**
**प्रश्नवर्णनिहतं स्वरयुक्तं द्व्याहृतं भवति शस्तमशस्तम् ॥२०॥**

यदि वर्त्तमानकाल का प्रश्न होवे और श्रेणी के आरम्भ में उत्तर स्वरवर्ण होवे तो वर्त्तमान में शुभ कहना, और यदि अधर स्वरवर्ण होवे तो अशुभ कहना चाहिये।

अब पिण्डद्वारा शुभाशुभ का विवेचन करते हैं, यदि वर्त्तमानकाल के वर्णपिण्ड २० को प्रश्न वर्ण तीन से गुणा किया तो ६० हुआ, स्वराङ्क २२ का योग किया तो ८२ हुआ, इसमें दो का भाग दिया तो शेष ० शून्य रहा इसलिए अशुभ प्रश्न कहना चाहिये और यदि एक शेष रहे तो श्रेष्ठ प्रश्न कहना चाहिये ॥२०॥

भविष्यप्रश्ने विशेषमाह।

**उच्चोत्तराद्यैः क्रमतो भविष्ये राज्यं शुभं हानिरुजे मृतिश्च।**
**पिण्डं शरात्तं क्रमतः फलं स्याद्वदेदथो पञ्चविधोऽस्ति मृत्युः ॥२१॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आदि में स्वरवर्ण उत्तरोत्तर होवे तो राज्यसम्बन्धी प्रश्न कहना चाहिये, यदि इस प्रश्न का उत्तर स्वरवर्ण होवे तो हानि कहनी चाहिये, अधराधर स्वरवर्ण होवे तो रोग प्रश्न कहना चाहिये, और यदि दग्ध स्वरवर्ण होवे तो मृत्यु सम्बन्धीप्रश्न कहना चाहिये। अब पिण्ड द्वारा कहते हैं। पूर्वोक्त पिण्ड ८३ में पांच का भाग देने से जो शेष बचे उसका फल पूर्वोक्त क्रम से जान लेना चाहिये और पांच शेष बचने से मृत्यु का प्रश्न होता है, वह मृत्यु पांच प्रकार की कही गई है ॥२१॥

**अपमृत्युरभिहिते स्यादनभिहिताख्ये विदेशे च**
**अभिघाते रणभूमावधराधरसंयुतौ च रुजा ॥२२॥**

यदि मृत्यु सम्बन्धी प्रश्न अभिहित संज्ञक होवे तो अपमृत्यु कह देना, यदि अनभिहित संज्ञक प्रश्न होवे तो विदेश में मृत्यु होगी ऐसा जाने। यदि अभिघात अनभिघात संज्ञक प्रश्न होवे तो युद्धादि संग्राम में मृत्यु होगी और अधराधर स्वरवर्ण के योग से रोग के कारण मृत्यु कहनी चाहिये ॥२२॥

**यद्युत्तरोत्तराढ्याश्चोत्तरवर्णा भवेन्मृत्युः।**
**दीर्घे काले जरया विगलितदेहस्य पुरुषस्य ॥२३॥**

यदि प्रश्नश्रेणी में उत्तरोत्तर स्वरयुक्त उत्तर वर्ण होवे तो जन्म से अथवा प्रश्नकाल से उस पुरुष की देह को जरावस्था में अर्थात् दीर्घकाल में मृत्यु की स्थिति कहनी चाहिये ॥२३॥

**पिण्डमर्णभवमर्णमितिघ्नं सेंद्वजङ्कयुतमक्षिहतं स्यात्।**
**पञ्चहृच्च जरयारुजयास्राद्यैर्विदेश इह वा अपमृत्युः ॥२४॥**

अब पूर्व प्रतिपादित समस्त उदाहरण नालिकेर के ऊपर देवेंगे, यहाँ लकार में दीर्घ ईकार मान करके पिण्ड बनाया है, नालीकेर ऐसा उच्चारण करने से अनभिघात संज्ञक प्रश्न हआ अनभिघात चक्र से पिण्ड ४१ हुआ, उसे अपने गुणक १७ से गुणा

किया तो ६९७ हुआ, यहां प्रश्नश्रेणी के आदि में दग्धवर्ण अभिधूम्र स्वरयुक्त है, इसलिए एक हीन (कम) किया तो ६९६ स्फुट पिण्ड हुआ जिसे चक्र में स्पष्ट लिखा है देख लेना। अब क्रिया बताते हैं - वर्णपिण्ड ३२ को वर्ण प्रमाण ४ से गुणा किया तो १२८ हुआ, एकसहित जो मात्राङ्क दश युक्त किया तो १३८ हुआ, इसको द्विगुणित किया तो २७६ हुआ इसमें पांच का भाग दिया तो शेष १ बचा इसलिए वृद्धावस्था में मृत्यु कहनी चाहिये। यदि दो शेष बचे तो रोग से मृत्यु, तीन बचे तो शस्त्र से मृत्यु, चार शेष बचे तो विदेश में मृत्यु, शून्य शेष रहे तो अपमृत्यु कहनी चाहिये ॥२४॥

| ना | ली | के | र | प्रश्नवर्णाः |
|---|---|---|---|---|
| ना | ली | के | ० | उत्तरवर्णाः |
| ० | ० | ० | र | अधरवर्णाः |
| १० | १० | ३ | ९ | वर्णाङ्काः |
| २ | ४ | २ | १ | मात्राङ्का |
| वर्णाङ्कयोगः | | | | ३२ |
| मात्राङ्कयोगः | | | | ९ |

मृत्युः कदा भविष्यति तज्ज्ञानमाह।

**उत्तराधरमितार्णजपिण्डं भिन्नमेव विरचय्य पृथगास्थम्।**
**आधरं त्रिगुणितं शरभक्तं चौत्तरं शरगुणंत्रिहतं स्यात् ॥२५॥**

मृत्यु कब होगी इसके लिए यदि प्रश्नश्रेणी के उत्तराधर वर्णजन्य पिण्ड को पृथक् पृथक् स्थान में स्थापित करें। यथा- उत्तर वर्ण पिण्ड २३, अधर वर्ण पिण्ड ९ अब आगे उदाहरण से ही क्रिया करते हैं, अधर पिण्ड ९ को त्रिगुणित किया तो २७ हुआ इसे पांच से भाग दिया तो लब्धी ५ आई, उत्तरपिण्ड २३ को पांच से गुणा किया तो ११५ हुआ इसमें तीन से भाग दिया तो लब्धी ३८ हुई उत्तर राशि २३/३८ हुई और अधर राशि ९/५ हुई॥२५॥

**आधरं ह्यथ हुताशनभक्तं मूलराशिरिह तस्य भवेत्सः।**
**औत्तरं शरगुणं स च राशिस्तस्यनन्दसहितश्च विधेयः ॥२६॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आदि में अधर स्वर होवे तो उत्तर में उत्तर का योग करें, अधर में अधर का योग करें, श्रेणी की आदि में उत्तर स्वर होवे तो उत्तर में उत्तर का अन्तर करें अधर में अधर का अन्तर करें, फिर अधर राशि पिण्ड में तीन का भाग दे लब्धी जो आवे वह अधर की मूल राशि होती है, उत्तर राशिद्वय पिण्ड को पांच से गुणा

करें, फिर नव (नो) संख्या का योग करें वह उत्तर की मूलराशि होती है। इस उदाहरण में प्रश्नश्रेणी की आदि में अधर स्वर का योग है, इसलिए उत्तर राशि २३/३८ दोनों का योग किया तो ६१ हुए, अधरराशि ९/५ दोनों का योग करने से १४ हुआ अधर राशि १४ में तीन का भाग दिया तो लब्धी ४ अधर की मूलराशि हुई, उत्तर राशि ६१ को पांच से गुणा किया तो ३०५ हुआ इसे युक्त किया तो ३१४ उत्तर की मूल राशि हुई॥२६॥

**प्रश्ने चेदधरस्वरस्तदनयोर्योगं यदा चोत्तरो**
**विश्लेषं च विधाय तच्छतकयोर्विश्लेषमायुर्भवेत्।**
**ऊर्ध्वं चेच्छततः शताप्तमवशेषं स्यात्तथार्णाहतं**
**भाप्तं षड्गुणितं नरस्य जनुषः स्युर्यातवर्षाश्च ते॥२७॥**

पुनः चकार के ग्रहण से और व्याख्या लिखते हैं - श्रेणी के आदि में अधर स्वर होवे तो दोनों मूल राशियों का योग करें, उत्तर स्वर हो तो अन्तर करें, इस उदाहरण में अधर स्वर का योग है इसलिए दो ३१४/४ मूल राशियों का योग किया तो ३१८ हुआ, इसका शताङ्क अन्तर किया तो २१८ आयुर्दाय हुआ। यह अंक शताधिक होवे तो शत से भाग देना, शेष आयुर्दाय होता हैं। आयुर्वर्षों को १८ प्रश्न वर्ण ४ से गुणा किया तो ७२ हुए इसमें २७ का भाग दिया तो लब्ध हुए २ इसको (२) को ६ गुणा से किया तो १२ जन्मकाल से गत वर्ष हुए इन गत वर्षों को प्रश्न संवत्सर में हीन (कम) करने से जन्मकाल का संवत् आ जायगा॥२७॥

**प्रश्नार्णघ्नाः सूर्यतष्टाश्च मासास्ते वर्णघ्नाः खाग्नितष्टाश्च तिथ्यः।**
**मात्राङ्कघ्नाः सप्ततष्टाः कुजात् स्युस्ते पिण्डघ्नाः षष्टितष्टाष्टघट्यः॥२८॥**

पुनः चकार के ग्रहण से आयुर्वर्ष १८ को प्रश्नवर्ण ४ से गुणा किया तो ७२ हुए द्वादश का भाग लिया तो शेष शून्य बचा तो मासाभाव हुआ शून्य को द्वादश मास कल्पना किया। वक्ष्यमाण कार्यसिद्धि के लिए मास द्वादश को प्रश्नवर्ण ४ से गुणा किया तो ४८ हुए, ३० से भाग दिया तो शेष १८ तिथि प्राप्त हुई। तिथि १८ को मात्राङ्क ९ से गुणन किया तो १६२ हुआ, ७ से भाग दिया तो शेष एक बचा तो सौमवार निर्याण का हुआ, वार के एक को पिण्ड ४१ से गुणा किया तो ४१ हुआ ६० से तष्ट किया तो ४१ घटिका प्राप्त हुईं, प्रश्न समय से वर्ष १८ मास० कृष्णपक्ष तृतीया भौमवार के दिन ४१ घटी के होने पर मृत्यु होगी, इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये॥२८॥

शेषायुषि सुखं वा दुःख वेति ज्ञानमाह।

**प्रश्नार्णघ्नं प्रश्नवर्णोत्थपिण्डं मात्राङ्काढ्यं द्व्याप्तिशेषे सुखान्ये।**
**आलिङ्गाद्यैश्चोत्तराद्यैः क्रमेण द्रव्ये नाढ्या निर्द्धनाः शून्ययुक्ताः ॥२९॥**

वर्णपिण्ड ३२ को प्रश्नवर्ण ४ से गुणा किया तो १२८ हुआ मात्राङ्क ९ का योग किया तो १३७ हुआ, इसमें दो का भाग दिया तो शेष एक बचा तो सुख से कालक्षेप होवेगा, शून्य शेष बचने से दुःखसे कालक्षेप होवेगा। प्रकारान्तर से कहते हैं। प्रश्नश्रेणी के आदि में आलिंगित स्वर होवे तो द्रव्ययुक्त कालक्षेप होवेगा; अभिधूम्र स्वर होवे तो निर्धनता से कालक्षेप होवेगा, दग्धस्वर होवे तो कष्ट से काल व्यतीत होवेगा, श्रेणी की आदि में उत्तर वर्ण होवे तो द्रव्ययुक्त कालयापन होगा, और अधरवर्ण होवे तो निर्धनता के साथ कालयापन होगा, दग्धवर्ण होवे तो कष्ट से काल व्यतीत होवेगा॥२९ ॥

**द्विघ्नः प्रश्नाद्यवर्गाङ्कः प्रश्नवर्णाङ्कसंयुतः ।**
**सप्तहृद्विषमे शेषे धनाढ्या निर्धनाः समे ॥३० ॥**

प्रश्न श्रेणी के प्रथम वर्ण के वर्गाङ्क ६ को द्विगुणित करने पर १२ हुए। इस १२ में वर्णपिण्ड ३२ मेंजोडने पर ४४ हुए और फिर ७ का भाग देने पर यदि शेष राशि विषम बचे तो द्रव्ययुक्त और शेष यदि सम बचे तो निर्धनता के साथ जीवन यापन होगा । चूंकि यहाँ पर शेष दो अर्थात् सम बचे हैं इसलिए निर्धनता के साथ समय व्यतीत होगा।

अथाखिलप्रश्नेषु साधारणेषु शुभाशुभज्ञानमाह।

**उत्तरवर्णस्वरयोर्योगः शस्तोऽन्यथाधरयोः ।**
**मिश्रे च मिश्रमुक्तं फलं वर्णानां च योगेन ॥३१ ॥**

प्रश्नश्रेणी के आदि में यदि उत्तर स्वरवर्ण होवे तो श्रेष्ठ प्रश्न कह देना और यदि अधर स्वरवर्ण होवे तो अशुभ प्रश्न कह देना, और उत्तराधर स्वरवर्ण होवे तो मिश्र प्रश्न कहना चाहिए, इस उदाहरण में दग्धवर्ण अधर स्वर हैं इसलिये अशुभ कहना ॥३१ ॥

अथ लाभप्रश्नमाह।

**लाभप्रश्ने चोत्तरैर्लाभ उक्तो हानिस्त्वन्यैर्दग्धवर्णा च्युतिश्चेत्।**
**हानिर्लाभे युद्धकाले मृतिः स्यान्निःसन्दिग्धं जल्पितं शंभुदेवैः ॥३२॥**

प्रश्नश्रेणी में यदि उत्तराधिक स्वरवर्ण होवे तो लाभ कहना चाहिए, अधराधिक् स्वरवर्ण होवे तो हानि कहना चाहिए, दग्धादिक स्वरवर्ण हो और लाभ का प्रश्न होवे तो

हानि कहना चाहिए, और युद्ध के प्रश्न में दग्धाधिक स्वरवर्ण होवे तो निःसन्देह मृत्यु कहना चाहिए, ऐसा श्रीमहादेवजी ने कहा है ॥३२॥

युद्धप्रश्ने विशेषमाह।

**दीर्घामात्रा आदिमध्यान्तसंख्या जेता दग्धालिङ्गितैर्नोजयः स्यात्।**
**सूक्ष्मैः पिण्डं द्व्याप्तमिन्दौ जयश्रीः शून्ये हानिर्निश्चितं युद्धकाले ॥३३॥**

प्रश्नश्रेणी के आदि मध्यान्त वर्ण में दीर्घ मात्रा हो तो प्रश्न कर्ता की जय कहना, और दग्धालिंगित स्वर होवे तो पराजय कहना, और अन्य का विचार पिण्डद्वारा कहते हैं। युद्धप्रश्न में सूक्ष्माङ्क चक्र से पिण्ड बनाना इतर चक्रों से नहीं बनाना, फिर पिण्ड में दो से भाग लेना, जो शेष बचे तो जय होवे, लक्ष्मी प्राप्ति होवे, यदि शून्य शेष बचे तो युद्धकाल में निश्चय ही हानि होवे ॥३३॥

इति प्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां संयुक्तादिप्रकरणं द्वितीयम्।

## मूकादिप्रकरणम्

अथास्य मनसि किमिति प्रश्ने, मम मनसि किमिति प्रश्ने च यथार्थज्ञानार्थं जीवादिप्रकरणमवतारयति। तत्राखिलजगतस्त्रियोनिकत्वादादौ सामान्यम्। त्रियोनिकज्ञानमाह-

**जीवं मूलं धातुरक्तस्तदर्णैस्तन्मात्राढ्यैः प्रश्नवर्णाद्यसंस्थैः।**
**जीवं मूलं धातुरालिङ्गिताद्यैः प्रश्नेऽनल्पायतस्वरा सैव योनिः ॥१॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आदि वर्ण में पूर्वोक्त जीवपक्ष संज्ञक स्वरवर्ण होवे तो जीवयोनि जानना, और मूलपक्ष संज्ञक स्वरवर्ण होवे तो मूलयोनि जानना, धातुपक्ष संज्ञक स्वरवर्ण होवे तो धातु योनि कह देना। प्रकारान्तर से कहते हैं। आलिङ्गित स्वर जीवपक्ष संज्ञक है, अभिधूम्र स्वरमूलपक्ष संज्ञक है, दग्धस्वर धातु पक्षसंज्ञक है, प्रश्नश्रेणी में जिस पक्ष के स्वर बहुत होवे वह पक्ष कहना चाहिये ॥१॥

अथ मुष्टिलूकाप्रश्ने विशेषमाह।

**मुष्टिप्रश्ने जीववर्णेषु मूलं मूले धातुर्जीवमुक्तं च धातौ।**
**लूकाप्रश्ने धातुरुक्तं च जीवे धातौ मूलं जीवमुक्तं तु मूले ॥२॥**

मुष्टिप्रश्न के विषय में पूर्वोक्त जीवपक्ष का वर्णमात्रा में मूल योनि कहना, और मूलपक्ष का वर्णमात्रा में धातुयोनि कहना, और धातुपक्ष का वर्णमात्रा में जीवयोनि

कहना, और लूकाप्रश्न के विषय में जीवपक्ष का वर्णमात्रा में धातुयोनि कहना, और धातुपक्ष का वर्ण मात्रा में मूलयोनि कहना, और मूलपक्ष का वर्णमात्रा में जीवयोनि कहना चाहिये। चक्र में स्पष्ट लिखा है समझ लेना चाहिये ॥२॥

१/२ श्लोकोक्तं चक्रम्

| मूकप्रश्ने | मुष्टिप्रश्ने | लूकाप्रश्ने |
|---|---|---|
| जीवाक्षराणि | जीवाक्षराणि | जीवाक्षराणि |
| क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह ऊ आ इ ओ अः ए | त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं | ङ ञ ण न म ल व स ई ऐ औ |
| धात्वक्षराणि | धात्वक्षराणि | धात्वक्षराणि |
| त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं | ङ ञ ण न म ल व स ई ऐ औ | क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह अ आ इ ए औ अः |
| मूलाक्षराणि | मूलाक्षराणि | मूलाक्षराणि |
| ङ ञ ण न म ल व स ई ऐ औ | क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह अ आ इ ए ओ अः | त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं |

अथ प्रकारान्तरेण त्रियोनिज्ञानमाह।

**अनष्टं स्थापितं पूर्वं यत्तदर्णघ्नमग्निहृत्।**
**ज्ञेया शेषाङ्कतो योनिर्वक्ष्यमाणादितो बुधैः ॥३॥**

पूर्व प्रतिपादित भूतादि त्रिकाल ज्ञान के विषय में अष्टादश श्लोक के बीच में जो अनष्ट लब्ध कहा है, उसको प्रश्नवर्ण से गुणा करे और उसमें तीन का भाग दे और शेषाङ्कसे वक्ष्यमाण रीति करके पण्डितों को जीवादि योनि जान लेनी चाहिये ॥३॥

**मूकप्रश्नात्सर्वमेवात्र वेद्यं वेलामानालिंगिते लिङ्गितस्थे।**
**जीवं मूलं धातुरुक्तोऽभिधूम्रे मूलं धातुर्जीवसंज्ञश्च दग्धे ॥४॥**

मूकप्रश्न की तरह मुष्टिलूका प्रश्न में भी पूर्वोक्त प्रक्रिया करके जीव १ मूल २ धातु ३ योनि कहें, आलिंगित वेला में अभिधूम्र मुक्ति होवे तो एकादि शेष करके मूल १ धातु २ जीव ३ योनि कहनी चाहिए ॥४॥

**धातुर्जीवं मूलमेवाभिधूम्रे चेदालिङ्गं धातुजीवे च मूले।**
**स्वस्मिन् धूम्रे जीवमूले च धातुर्दग्धे मूलं धातुजीवे क्रमेण ॥५॥**

आलिङ्गित वेला में दग्धभुक्ति होवे तो एकादि शेष करके धातु १ जीव २ मूल ३ योनि कहें, अभिधूम्र वेला में आलिङ्गित भुक्ति होवे तो एकादि शेष करके धातु १ जीव २ मूल ३ योनि कहें, अभिधूम्र वेला में अभिधूम्र भुक्ति होवे तो एकादि शेष करके जीव १ मूल२ धातु ३ योनि कहें, अभिधूम्र वेला में दग्ध भुक्ति होवे तो एकादि शेष करके मूल १ धातु २ जीव ३ और योनि कहें ॥५॥

**चेदालिंगं दग्धवेलाविभागे मूलं धातुर्जीवमेवाभिधूम्रे।**
**धातुर्जीव मूलकं चाथ दग्धे जीवं मूलं धातुरुक्तोऽत्र मूके ॥६॥**

दग्धवेला में आलिङ्गित भुक्ति होवे तो मूल १ धातु २ जीव ३ योनि क्रम से कहें, दग्धवेला में अभिधूम्र भुक्ति होवे तो धातु १ जीव २ मूल ३ योनि कहें, और दग्धवेला में दग्धभुक्ति होवे तो एकादि शेष करके जीव १ मूल २ धातु ३ योनि कहें ॥६॥

**प्रोक्तवन्मूकतो ज्ञात्वा मुष्टिलूकासमुद्भवम्।**
**प्रश्नं विद्वान्वदेत्सम्यग्विमृश्य स्वमनीषया ॥७॥**

मूक प्रश्न की प्रक्रिया से पूर्वोक्त प्रकार को सम्यक् रुप से जान करके पण्डितों को स्वबुद्ध्यनुसार मुष्टि लूका प्रश्न में भी कहना चाहिये ॥७॥

४/५/६ श्लोकोक्तं मूकप्रश्नविचारचक्रम्।

| आ० व० आ० भु० | आ० वे० अ ० भु० | आ० व० द० भु० | वेला |
|---|---|---|---|
| जी मू धा १,२,३ | मू धा जी १,२,३ | धा जी मू १,२,३ | योनिः १,२,३ |
| आ० वे० अ ० भु० | अ० वे० द० भु० | अ० वे० आ० भु० | वेला |
| जी मू धा १ २ ३ | मू धा जी १ २ ३ | धा जी मू १ २ ३ | योनिः |
| द० वे० द० भु० | द० वे० आ० भु० | द० वे आ० भु० | वेला |
| जी मू धा १ २ ३ | मू धा जी १ २ ३ | धा जी मू १ २ ३ | योनिः |

७ श्लोकोक्तं मुष्टौ विचारचक्रम्।

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० वे० आ०<br>भु० | आ० वे० अ ०<br>भु० | आ० व० द०<br>भु० | वेला |
| धा जी मू<br>१ २ ३ | जी मू धा<br>१ २ ३ | मू धा जी<br>१ २ ३ | योनिः |
| अ० वे० अ०<br>भु० | अ० वे० द०<br>आ० भु० | ब० वे० आ०<br>भु० | वेला |
| मू धा जी<br>१ २ ३ | धा जी मू<br>१ २ ३ | जी मू धा<br>१ २ ३ | योनि |
| मू धा जी<br>आ० वे० आ०<br>भु० | धा जी मू<br>आ० वे० अ०<br>भु० | जी मू धा<br>आ० वे० द०<br>भु० | |
| धा जी मू<br>१ २ ३ | जी मू धा<br>१ २ ३ | मू धा जी<br>१ २ ३ | योनि |
| अ० वे० अ०<br>भु० | अ० वे० द०<br>भु० | अ० वे० आ०<br>भु० | वेला |
| धा जी मू<br>१ २ ३ | जी मू धा<br>१ २ ३ | मू धा जी<br>१ २ ३ | योनि |
| द० व० द०<br>भु० | द० वे० आ०<br>भु० | द० वे० अ०<br>भु० | वेला |
| धा जी मू<br>१ २ ३ | जी मू धा<br>१ २ ३ | मू धा जी<br>१ २ ३ | योनि |

अथ प्रकारान्तरैस्त्रियोनिज्ञानमाह।

**मूकप्रश्ने पृच्छकश्चोर्ध्वदृक् चेज्जीवं मूलं भूमिदृग्धातुरन्यः ॥**
**मिश्रे मिश्रं चाथ बाह्वास्यकानां स्पर्शे जीवं चोदरं हृत्कटी च ॥८॥**

मूक प्रश्न करने के समय यदि पृच्छक की ऊर्ध्वदृष्टि होवे तो जीव योनि कहना, भूमिदृक् होवे तो मूलयोनि कहना, तीर्यक् दृष्टि होवे तो धातुयोनि कहना, मिश्रदृक् होवे तो मिश्रयोनि कहना। मूकप्रश्न करने के समय यदि पृच्छक बाहु, मुख, शिर का स्पर्श करे तो जीव की चिन्ता कहना ॥८॥

**स्पर्शे धातुर्बस्तिगुह्योरुपद्धिर्मूलं चोर्ध्वं सन्मुखाधस्थितैः स्यात्।**
**आसन्नस्थे तोय अन्ने हुताशे प्राग्वज्ज्ञेयं मुष्टिलूकागतं च ॥९॥**

चकार करके पूर्व श्लोक के अनुसार उदर, हृदय, कटि इनका स्पर्श करे तो धातु चिन्ता कहना, यदि वस्ति, गुह्य, जंघा, चरण आदि इनका स्पर्श करे तो मूलचिन्ता कहना, पृच्छक ऊर्ध्व स्थित होकर प्रश्न करे तो जीव की चिन्ता कहना, यदि पृच्छक सन्मुख होकर प्रश्न करे तो मूल की चिन्ता कहना, अधः स्थित होकर प्रश्न करे तो धातु की चिन्ता कहना, प्रश्न के समय यदि जल समीपस्थ होवे तो जीव की चिन्ता कहना, प्रश्न के समय यदि अन्न समीपस्थ होवे तो मूल की चिन्ता कहनी चाहिये, अग्नि समीपस्थ होवे तो धातु की चिन्ता कहें। पूर्व प्रकार की तरह मुष्टि लूका प्रश्न में ही कहना चाहिये, इन सभी को चक्र में स्पष्ट रुप लिखा है। समझ लीजिये ॥९॥

अथ प्रकारान्तरेणाह।

**पूर्वापराग्नेयस्थे धातुर्याम्येशसौम्योर्ध्वे।**
**जीवं स्थिते च दूते मूलं वातासुराधः स्थे ॥१०॥**

यदि पृच्छक पूर्व, पश्चिम अथवा अग्निदिक् स्थित होकर प्रश्न करे तो धातु की चिन्ता कहें, दक्षिण अथवा ईशान अथवा उत्तर स्थित होकर किंवा ऊर्ध्व स्थित होकर प्रश्न करे तो जीव की चिन्ता कहें, वायव्य अथवा नेर्ऋत अथवा अधस्थित होकर प्रश्न करे तो की मूल चिन्ता कहें, यह पूर्व प्रकार की रीति से मुष्टिलूका प्रश्न में कहें ॥१०॥

अथ मुष्टौ वर्णज्ञानमाह।

**द्व्यालिङ्गितैकधूम्रे मुष्टौ श्वेतं भवेद्वस्तु।**
**धूम्रद्वयदग्धं च पीतं दग्धद्व्यालिङ्गे ॥११॥**

अब तीन श्लोक में मुष्टि का वर्णज्ञान प्रतिपादित करते हैं। प्रश्न श्रेणी में पूर्व के दो स्वर आलिङ्गित होवे और तृतीय स्वर धूम्र होवे तो मुष्टि में श्वेत वर्ण की वस्तु कहनी चाहिए, पूर्व के दो स्वर अभिधूम्र होवे और तृतीय दग्धस्वर होवे तो पीतवर्ण की वस्तु कहना चाहिए, पूर्व के दो स्वर दग्ध और तृतीय आलिङ्गित होवे तो रक्त अथवा श्यामवर्ण की वस्तु कहनी चाहिए ॥१॥

**मूक प्रश्ने चक्रम् -**

| जीवसंज्ञा | मूलसंज्ञा | धातुसंज्ञा | मिश्रसंज्ञा |
|---|---|---|---|
| ऊर्ध्वदृक् | भूमिदृक् | मध्यदृक् | मिश्रदृक् |
| बाहुमुख शिरःस्पर्शे | वस्तुगुह्यजंघा पादस्पर्शे | उदरहृत्कटिस्पर्शे | सर्वस्पर्शे |
| ऊर्ध्वस्थित्या | सन्मुखस्थित्या | अधःस्थित्या | मिश्रस्थित्या |
| तोये आसन्ने | अन्ने आसन्न | हुताशे आसन्ने | मिश्रे आसन्ने |
| याम्येशसौम्योर्ध्वस्थेच | वायव्यनैर्ऋत्यधःस्थे | पूर्वापराग्नेयस्थे | दिशायाम् |

**रक्तश्यामं दग्धालिङ्गितधूम्रेऽसिते श्वेतम्।**
**आलिङ्गितदग्धधूम्रे कृष्णं हरितं त्रिहस्ताद्ये ॥१२॥**

यदि प्रश्नश्रेणी में प्रथम स्वर दग्ध होवे और, द्वितीय आलिंगित स्वर और तृतीय अभिधूम्र स्वर होवे तो श्याम श्वेतवर्ण की वस्तु कहना, प्रथम आलिंगित स्वर होवे द्वितीय दग्धस्वर होवे और तृतीय अभिधूम्र स्वर होवे तो कृष्णवर्ण की वस्तु कहना, यदि प्रथम दग्धस्वर होवे द्वितीय अभिधूम्र स्वर होवे और तृतीय आलिंगित स्वर होवे तो हरितवर्ण (हरे रंग) की वस्तु कहनी चाहिए॥

**मुष्टिप्रश्ने ८/९/१० श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| जीव | मूल | धातु |
|---|---|---|
| मध्यदृक् | ऊर्ध्वदृक् | भूमिदृक् |
| उदरहृत्कटिस्पर्शे | बाहुमुखशिरःस्पर्शे | वस्तिगुदाजंघापादस्पर्शे |
| अधःस्थित्या | ऊर्ध्वस्थित्या | सन्मुखस्थित्या |
| हुताशे आसन्ने | तोये आसन्ने | अन्ने आसन्ने |
| पूर्वापराग्नेयस्थे | याम्येशसौम्यौर्ध्वस्थे | वायव्यनैर्ऋत्यधःस्थे |

**लूकाप्रश्ने ८/९/१० श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| जीव | मूल | धातु |
|---|---|---|
| भूमिदृक् | मध्यदृक् | ऊर्ध्वदृक् |
| वस्तिगुदाचरणजंघास्पर्शे | उदरहृत्कटिस्पर्शे | बाहुमुखशिरःस्पर्शे |
| सन्मुखस्थित्या | अधःस्थित्या | ऊर्ध्वस्थित्या |
| अन्ने आसन्ने | हुताशे आसन्ने | तोये आसन्ने |
| वायव्यनैर्ऋत्यधःस्थे | पूर्वापराग्नेयस्थे | याम्येशसौम्यौर्ध्वस्थे च |

**द्व्यादित्रितये चित्रं शृङ्गाभं लिङ्गितत्रितये।**
**दग्धत्रितये नीलं धूम्रत्रितये सुवर्णाभम् ॥१३॥**

यदि प्रश्नश्रेणी में प्रथम अभिधूम्र स्वर होवे और द्वितीय आलिंगित स्वर होवे और तृतीय दग्धस्वर होवे तो विचित्र वर्ण की वस्तु कहना, तीनों स्वर यदि आलिंगित होवे तो शृंगवर्ण की वस्तु कहना, तीनों दग्ध स्वर होवे तो नीलवर्ण की वस्तु कहना और यदि तीनों अभिधूम्र स्वर होवे तो सुवर्ण का वर्ण कहना चाहिए। इसे स्पष्ट रुप से समझने के लिए चक्र देखें । जैसे- गुलाब इस श्रेणी में प्रथम स्वर दग्ध द्वितीय स्वर अभिधूम्र तृतीय स्वर आंलिगित है तो हरितवर्ण की वस्तु कहना, इस प्रकार अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए॥१३॥

११/१२/१३ श्लोकोक्तं मुष्टौ वर्णज्ञानचक्रम्।

| श्वेत | पीत | रक्तश्याम | श्यामश्वेत | कृष्ण | हरित | विचित्र | शृंगाभ | नील | सुवर्णाभ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ १ | धू १ | द १ | द १ | आ १ | द १ | अ १ | आ १ | द १ | धू १ |
| आ २ | धू २ | द२ | आ २ | द २ | धू २ | आ २ | आ २ | द २ | धू २ |
| धू ३ | द ३ | आ ३ | धू ३ | धू ३ | आ ३ | द ३ | आ ३ | द ३ | धू ३ |

अथ चंपकेत्यादिपदैः सर्वदा एक एव प्रश्नः स्यादित्याशंक्य पूर्वोक्तसंयुक्तादिकालवशात्सुनिश्चितार्थमखिलप्रधानं योनिज्ञानं विवक्षुस्तत्र नियममाह :-

**अथ संयुक्तादीनां प्रोक्ते काले भवेत्पिंडे।**
**प्रोक्तैश्चक्रैर्जाते गुणकस्थाने क्रिया ह्येषा ॥१४॥**

इस प्रसंग में विशेष कहते हैं, चंपक, गुलाब और नारिकेल आदि रूढ़ि शब्दो का सभी समय में एक ही प्रश्न आता है, यह शङ्का मान करके पूर्वोक्त संयुक्तादि कालवश निर्णय करके निश्चितार्थ प्रधान योन्यादि के ज्ञान को कहते हैं। पूर्वोक्त संयुक्तादि तीन चक्रों से जो पिण्ड उत्पन्न होवे उस पिण्ड में गुणक के स्थान में वक्ष्यमाण क्रिया करनी चाहिये, पूर्वोक्त संयुक्ते तद्द्विगुणमित्यादि गुणक नहीं करना चाहिये॥१४॥

तत्र पूर्वसंयुक्तकाले तदाह।

**संयुक्तेऽक्षरपिण्डे नागहतं मात्रिकाङ्कयुतम्।**
**भक्तं त्रिभिः क्रमात्स्याज्जीवं धातुस्तथा मूलम् ॥१५॥**

अब आगे उदाहरण के साथ ही क्रिया लिखते हैं। संयुक्तादि आठ पक्षों के बीच में संवत् १९४८ शालिवाहन शके १८१३ माघमासे कृष्णे पक्षे प्रतिपदायां भृगुवारे तत्रेष्टं ८/१५ नारीकेल इति श्रेण्याम् अक्षरपिण्ड ३२ को ८ से गुणा किया तो २५६ हुआ और इसमें मात्राङ्क ९ को युक्त किया तो २६५ हुआ और तीन से भाग दिया तो शेष १ बचा तो जीवयोनि कहना॥१५॥

असंयुक्ते च तदाह।

**कालेऽसंयुक्ते च भवेदक्षरपिण्डं द्विधा निघ्नम्।**
**प्रश्नार्णैर्मात्रांकैस्तद्योगे वह्निहद्योनिः ॥१६॥**

यदि प्रश्नकर्ता असंयुक्तकाल में प्रश्न करे तो अक्षरपिण्ड को दो जगह स्थापित करे, यथा- वर्णपिण्ड ३२ को एक स्थान में प्रश्नवर्ण अर्थात् ४ से गुणा किया तो १२८ हुआ, द्वितीय जगह मात्रिकाङ्क ९ से गुणन किया तो २८८ हुआ, दोनों का योग ४१६ हुआ इसमें तीन का भाग दिया तो शेष २ बचे तो धातुयोनि कहना॥१६॥

अभिहितकाले चाह।

**अभिहितवेलाप्रश्ने कार्याvधरोत्तरैः पृथग्राशी।**
**दूतोच्चारितवर्णेष्वथ चेदाद्यर्ण उत्तरामात्रा।**
**अधरायुगुत्तरं स्यादधरेऽनल्पे च संयुक्तम्॥१७॥**

यदि प्रश्नकर्ता अभिहित काल में प्रश्न करे तो प्रश्नवर्ण के अधरोत्तर राशि को पृथक् पृथक् स्थापित करें, फिर प्रश्न श्रेणी के प्रथम वर्ण में यदि उत्तरा मात्रा होवे तो अधर राशि का शोधन उत्तर राशि में करें और यदि अधर राशि विशेष होवे अर्थात् अधिक हो और उत्तर राशि न्यून (कम) होवे तो दोनों का योग करें॥१७॥

**आद्यर्णे चेदधरामात्रा कार्यस्तयोर्योगः।**
**सैकः स्वराङ्कयुक्तो वह्निविभक्तः क्रमाद्योनि॥१८॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आरम्भिक वर्ण में अधरा मात्रा होवे तो दोनों राशियों का योग करें और योग में सैकता क्रिया वक्ष्यमाण रीति से करें, फिर उसमें स्वरा युक्त करें और तीन का भाग दे इसमें शेषाङ्क जो हो उसे जीवादि योनि कहना चाहिये। उदाहरण- अधरराशि ९ उत्तरराशि २३ इस उदाहरण में प्रश्नश्रेणी आदि वर्ण में अधरा मात्रा है इसलिए दोनों २३/९ राशियों का योग किया तो ३२ हुआ। अब सैकताकी रीति लिखते हैं। तदुक्त वृद्धैः **'वियोगे विषमाङ्के चेत् संयोगे तदा कुयुक्। भूहीनस्तन्यथा कार्या सैकता सात्र कीर्त्तिता॥''** पूर्वोक्त अधरोत्तर राशियों का वियोग यदि विषमांक

होवे अथवा योग समांक होवे तो एक युक्त करें, वियोग समांक होवे या योग विषमांक होवे तो एक हीन करें, इस उदाहरण में राशियों का योग ३२ समांक हुआ इसलिये एक युक्त किया ३३ फिर स्वरांक ९ युक्त किया ४२ हुआ और इसमें तीन का भाग दिया तो शेष शून्य बचा इसलिए मूलयोनि हुआ ॥१८॥

अनभिहिते चाह।

**चेदनभिहिते काले मात्रार्णोत्थे च तत्पिण्डे।**
**प्रश्नार्णैर्मात्रांकैर्निघ्ने योगस्त्रिहृद्योनिः ॥१९॥**

यदि अनभिहितकाल में प्रश्न होवे तो मात्रापिण्ड ९ को प्रश्नवर्ण ४ से गुणा करें ३६ और वर्णपिण्ड ३२ को मात्रांक ९ से गुणा करें तो २८८ हुए फिर दोनों के योग अर्थात् ३२४ में तीन का भाग दे शेषांक से जीवादि योनि जानना चाहिये, यहां शेष ३ बचा तो मूल योनि हुई ॥१९॥

अभिघातकाले तदाह।

**अभिघातकवेलायामधरोत्तरवर्णजे पिण्डे।**
**चतुराशीतिविशुद्धा मात्राङ्कास्तच्च तत्पिण्डम् ॥२०॥**

यदि अभिघातक की वेला (समय) में प्रश्न होवे तो अधरोत्तर वर्णजन्य पिण्ड को भिन्न-भिन्न स्थापित करें और मात्रांक को चतुरशीति चौरासी में शोधन करने से मात्रापिण्ड होता है, इस प्रकार पिण्ड तीन बनावें ॥२०॥

**पिण्डान्येवं कुर्यादुत्तरवेला तदा कुयुक् योगः।**
**द्विघ्नः स्वरपिंडाढ्यः स्फुटपिण्डं स्याद्यदाधरीवेला ॥२१॥**

पूर्वोक्त प्रकार से पिण्डोत्पत्ति करें, फिर अभिघातक वेला में यदि औत्तरी (बादकी) वेला होवे तो अधरोत्तर राशि का योग करें, योग में एक और भुक्त करें, फिर उसको द्विगुणित करें और स्वरपिण्ड युक्त करें तो स्फुटपिण्ड होता है ॥२१॥

**अधराङ्कोना भूपाश्चेदल्पाः स्युर्युता द्विघ्नाः।**
**द्विघ्नोत्तरपिण्डाढ्या मात्राङ्काढ्यास्त्रित्हृद्योनिः ॥२२॥**

यदि अभिघातक वेला में आधरी वेला होवे तो अधर पिण्ड को षोडश अंक कम हीन करें, अधर पिण्ड विशेष होवे तो षोडश अंक युक्त करें अर्थात् जोड़े, फिर उसको द्विगुणित करें और उत्तर पिण्ड को दुगुना करके युक्त करें, फिर मात्र पिण्ड युक्त करें उसमें तीन का भाग दे जो शेषांक बचे उसे जीवादि योनि कहें, उदाहरण-उत्तर पिण्ड

२३ अधर पिण्ड ९ मात्रा पिण्ड ७५ औत्तरवेला में उत्तराधर राशि के योग ३२ में युक्त किया तो ३३ इसे फिर दुगुना किया तो ६६ हुआ इसमें स्वरपिण्ड ७५ का योग किया १४१ तो स्फुट पिण्ड हुआ इसमें तीन का भाग देना शेषांक से जीवादि योनि जान लेना चाहिए। यह शेष तीन बचे तो मूलयोनि हुआ। आधरी वेला का उदाहरण है। आगे प्रायः सरलता हेतु उदाहरण सरल संस्कृत में ही लिखा है "अधरांको ९ ना भूपा १६ जाता ७ द्विघ्ना १४ उत्तरपिंडेन २ द्विगुणितेन ४६ युक्ता ६० मात्रांकै ७५ र्युक्ता १३५ गुणो ३ द्धृताः शेषं ३ मूलयोनिर्ज्ञेया" ॥२२॥

आलिङ्गितवेलायामह।

**आलिङ्गेऽजङ्काग्न्यर्णाङ्काब्धिहतिर्युता योनिः ॥२३॥**

यदि आलिङ्गित वेला में प्रश्न होवे तो मात्रांक ९ को त्रिगुणित २७ करें फिर वर्णांक २३ को चतुर्गुणित १२८ करके युक्त करें १५५ और युक्तांक में तीन का भाग दे, शेषांक जो बचे उस से जीवादि योनि कहें, यहां शेष २ बचे तो धातुयोनि हुआ॥२३।

अभिधूमितकाले चाह।

**अभिधूमितवेलायां सितपक्षत्यादितस्तिथ्यः।**
**आद्यर्णजतिथिहीना युक्ता वारघ्नवर्णाङ्कैः॥**
**वारयुताजङ्काढ्यास्तष्टारामैः स्मृता योनिः॥२४॥**

यदि अभिधूमित वेला में प्रश्न होवे तो शुक्लप्रतिपदा से वर्त्तमान तिथि पर्यन्त तिथि का ग्रहण करें, इस उदाहरण में पौषशुक्ल प्रतिपदा से माघ कृष्ण प्रतिपदा भृगुदिन पर्यन्त १६ तिथि हुई, वर्णांक ३२ को प्रश्नवारांक ६ से गुणा करें १९२ और इसमें शुक्लादि तिथि १६ युक्त २०८ करें, फिर प्रश्नश्रेणी के प्रथम वर्णजन्य तिथि ३० को हीन करें १७८ फिर प्रश्न दिन ६ युक्त स्वरांक १५ युक्त करें १९३ उसमें तीन का भाग दें शेषांक जो बचे उसे जीवादि योनि कहें, यहां शेष १ बचा तो जीवयोनि हुआ॥२४॥

दग्धे काले चाह।

**दग्धेऽर्णवर्गमात्रापिण्डैः सूक्ष्मैर्यदोत्तरानेहा।**
**सेष्वगवर्णाङ्कयुतिः पक्षे तिथ्योऽथ संयुक्ताः॥२५॥**
**अधरेऽर्णपिण्डहीनैः पश्चाश्वैः संयुताश्च युताः।**
**अधरादिगे कुहीनाः सैकाः परगे गुणोद्धृता योनिः॥२६॥**

यदि दग्ध वेला में प्रश्न करे तो सूक्ष्म चक्र से वर्णपिण्ड, वर्गपिण्ड और मात्रापिण्ड उत्पन्न करें। संयुक्तादि आठ पक्षों में यदि कोई पक्ष का प्रश्न होवे, और यदि दग्ध वेला में औत्तरी वेला होवे तो वर्णपिण्ड में ७५ युक्त करें उस अंक में शुक्लादि तिथि युक्त करें, तिथियुक्त पिण्ड में त्रिपिंड का योग हीन (कम) करें, उत्तर मात्रा होवे तो एक युक्त करें उसमें तीन का भाग दे, शेषांक से जीवादि योनि कहना चाहिये। और यदि दग्धकाल में आधरी वेला होवे तो वर्ण पिण्ड हीन तिथियुक्त जो ७५ उसमें त्रिपिंडका योग युक्त करें, फिर श्रेणी के आदि में अधरमात्रा होवे तो एक हीन करें, उत्तर मात्रा होवे तो एक युक्त करें और तीन का भाग दे, शेषांकसे जीवादि योनि कहना चाहिये। उदाहरण-सूक्ष्म चक्र से औत्तरी वेला के समय में वर्णपिण्ड ४० वर्गपिण्ड ३३ मात्रा पिण्ड २६ त्रिपिण्ड का योग स्फुट पिण्ड ९९ का हुआ, वर्णपिंण्ड ४० में ७५ युक्त किया ११५ हुआ, शुक्लादि तिथि १६ युक्त किया तो ३१ हुआ इसमें स्फुटपिण्ड ९९ शोधन किया तो शेष ३२ रहा, इस उदाहरण में श्रेणी के आद्यर्ण में अधरमात्रा है इसलिये एक हीन किया तो ३१ हुआ,तीन से भाग दिया तो अवशिष्ट १ बचा इस प्रकार जीवयोनि हुआ। और दग्धकाल में आधरीवेला होवे तो वर्णपिण्ड में ४० हीन, शुक्लादि तिथि में १६ युक्त ७५ किया तब ५१ हुआ इसमें स्फुट पिण्ड ९९ युक्त किया तो १५० हुआ यहां श्रेणी के आदि में अधरमात्रा है इसलिये एक हीन किया तो १४९ हुआ इसमें तीन से भाग लिया तो अवशिष्ट २ रहे इस प्रकार धातुयोनि हुआ॥२५॥२६॥

अथ प्रसङ्गप्राप्तं गुणनियममाह।

**यत्र नोक्तं गुणं पिण्डं तत्र प्रश्नोद्भवा गुणाः।**
**ज्ञेया यत्र क्रिया प्रोक्ता तत्र पिण्डं च केवलम्॥२७॥**

जिस स्थान में पिण्ड का गुणक नहीं कहा गया है उस स्थान में पिण्ड को प्रश्न वर्ण की संख्या से गुणा करें तथा जिस स्थान पर क्रिया कही गई है वहाँ केवल पिण्ड का ही ग्रहण करना है ।

**अथ जीवकार्ये सति किं कार्यमित्याह ।**
**दृष्टं जीवं यदा तर्हि प्रश्ने आलिंगितादिषु ।**
**वेलासु तत्तद्गुणितं कृत्वा द्व्यंघ्र्यादिकान्वदेत् ॥**

पूर्वोक्त प्रकार से जीवादि योनि सिद्ध हुई, अब जीवादि योनि का भेद कहते हैं। यदि जीव की चिन्ता का प्रश्न होय तो आलिङ्गितादि वेला के विषय में वक्ष्यमाण गणित करके द्विपद, चतुष्पद, अपद और बहुपद के भेद कहना चाहिये॥२८॥

तदेवाह।

**लिंगिते शशियुतं यदोत्तरा पिण्डमिंदुरहितं तथाधरा।**

**वेदशेषित इह द्विपाच्चतुष्पादपाद्बहुपादयोनयः ॥२९॥**

यदि आलिङ्गितवेला में जीवचिन्ता का प्रश्न आवे तो उसका उदाहरण इस प्रकार है - प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में उत्तरामात्रा होवे तो एक युक्त पिण्ड करना, यदि अधरामात्रा होवे तो एक हीन पिण्ड करना तथा उसमें चार का भाग देना, शेषाङ्क १ से द्विपद, २ से चतुष्पद, ३ से अपद और ४ से बहुपदयोनि जान लेना चाहिये। इस उदाहरण में अधरमात्रा है पिण्ड ४१ को अनभिघात के गुणक १७ से गुणा किया तो ६९७ हुआ और एक हीन किया तो ६९६ इसमें चार का भाग दिया अवशिष्ट ४ बचा, इसलिए तो बहुपाद योनि हुआ ॥२९॥

**दग्धादिमात्रा यदि तत्र पिण्डं द्विधा त्रिहल्लब्धियुगाब्धिभक्तम्।**

**ज्ञेयावशेषे द्विपदादियोनिस्त्वथोऽभिधूम्रे समये विधेयम् ॥३०॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में दग्धमात्रा होवे तो पिण्ड को द्विधा दो जगह स्थापित करें, एक स्थान में तीन से भाग दे, लब्ध जो आवे उसको द्वितीय स्थान में युक्त करें, फिर चार का भाग दे, शेषांक जो रहे उससे द्विपदादि योनि कहना चाहिए ॥३०॥

अभिधूम्रसमये चाह।

**मात्रार्णपिण्डान्तरसंगुणः स्याद्विपिण्डयोगोऽब्धिहतोऽत्र योनिः ॥३१॥**

यदि अभिधूम्र समय के विषय जीवचिन्ता का प्रश्न उत्पन्न हो तो उसका उदाहरण देते हैं। द्विपिण्ड योग का अर्थात् मात्रापिण्ड और वर्णपिण्ड का अन्तर से गुणा करें, उसमें चार का भाग दे, शेषांक से द्विपदादि योनि कहना, मात्रापिण्ड ९ वर्णपिण्ड ३२ का योग द्विपिण्ड ४१ हुआ इसको मात्रार्ण पिण्डान्तर २३ से गुणा किया तो ९४३ हुआ, और इसमें चार का भाग दिया तो शेष तीन बचे जो अपदादि योनि हुई ॥३१॥

दग्धसमये चाह।

**आलिङ्गितादिर्यदि दग्धकाले पिण्डं द्वियुक् चेदपरौ कुहीनम्।**

**वेदैर्हतं स्वाद्द्विपदादियोनिश्चत्वार उक्ता द्विपदेऽपि भेदाः ॥३२॥**

दग्धवेला में जीवचिन्ता का प्रश्न आवे तो उसका उदाहरण देते हैं। प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में आलिंगित मात्रा होवे तो पिण्ड में दो युक्त करना और यदि अधिधूम्र दग्धमात्रा होवे तो एक हीन करना तथा उसमें चार का भाग देना जो शेषांक हो उसे

द्विपदादि योनि कहना। इस उदाहरण में अभिधूम्र मात्रा है, पिण्ड ४१ स्वगुणक १७ गुणितं जातं स्फुटपिण्ड ६९७ कुहीनं ६९६ वेदैंहृतं शेषं ४ बहुपादयोनिर्जाता। द्विपद के चार भेद कहे हैं - वक्ष्यमाण प्रकार से जान लेना चाहिए ॥३२॥

द्विपदभेदमाह।

**द्विपदेऽपि तुर्यभेदा वेलाक्रमतो बुधैर्ज्ञेयाः।**
**तत्तद् गुणितं कृत्वा तादृग्भिर्वर्णमात्रासु ॥३३॥**

द्विपद योनि के चार भेद को आलिङ्गितादि वेला क्रम से पण्डितों को जान लेना चाहिये, तत् तत् वेला में वक्ष्यमाण गुणित वर्णमात्रा क्रम से होती है ॥३३॥

**आलिङ्गितवेलायां द्वाभ्यामाद्यर्णवर्गाङ्कैः।**
**द्विस्थं मात्रापिण्डं हत्वा संयोजयेद्विद्वान्।**
**वेदहृते शेषाङ्कैर्देवा नृखगाः सुराः क्रमशः ॥३४॥**

आलिङ्गितवेला में द्विपद योनि का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसमें मात्रा पिण्ड को दो जगह स्थापित करे, एकत्र प्रश्नश्रेणी के प्रथम वर्णांक क से गुणा करें अन्यत्र श्रेणी का प्रथम वर्ण के वर्गांक से गुणा करे, फिर दोनों के योग में चार का भाग देना, शेषांक १ से देव, २ से मनुष्य, ३ से पक्षी, ४ से असुर आदि योनि क्रम से जान लेना, मात्रापिण्ड ९ को प्रथम वर्णांक १० से गुणन करने पर ९० हुआ, द्वितीय स्थान में वर्णांक ६ से गुणा किया ५४ हुआ, दोनों का योग १४४ इस में चार का भाग दिया तो शेष ४ बचे तो यह असुर योनि हुई ॥३४॥

अभिधूमितकाले चाह।

**अभिधूमितवेलायां पिण्डं सूक्ष्माक्षरैश्च समाढ्यम्।**
**नवगुणितं श्रुतिभक्तं शेषैः प्राग्वत् मृता योनिः ॥३५॥**

अभिधूमित वेला में द्विपद योनि का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। अभिधूमित काल में द्विपद योनि का प्रश्न होवे तो सूक्ष्म चक्र से पिंडोत्पत्ति करें उसको स्वगुणक से गुणा करके फिर उसमें सात युक्त करें पुनः नव से गुणा करें और चार का भाग देना अवशिष्टांक से देवादि योनि क्रम से जान लेना चाहिए। सूक्ष्मचक्र का पिंड ६५ को स्वगुणक १७ से गुणा किया तो ११०५ हुआ इसमें सप्त युक्त किया तो १११२ हुआ इसमें नव गुणा किया तो १०००८ हुआ, चार का भाग दिया तो शेष ४ बचे इस प्रकार असुरयोनि हुई ॥३५॥

दग्धकाले चाह।

**वर्णाङ्कं वर्णाङ्कैर्गुणिता मात्रांकसंयुक्ताः।**
**वेदविभक्ता योनिः प्राग्वत् स्याद्दग्धवेलायाम् ॥३६॥**

दग्धवेला में द्विपद योनि का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वर्णांक को वर्गांक से गुणा करें फिर मात्रांक युक्त करें उसमें चार का भाग देना, शेषांक से देवादि योनि कहना चाहिए। यथा, वर्णांका ३२ वर्गांकैस्तथोक्तै १७ र्गुणिता ५४४ मात्रांकै ९ र्युक्ता ५५३ वेदै ४ र्विभक्ताः शेषे १ एके देवयोनिर्जाता ॥३६॥

देवादिज्ञानं प्रकारान्तरेण चाह।

**त्रिसप्तनवमात्राभिर्देवाद्व्यन्त्यादिभिर्नराः।**
**पक्षिणोऽब्ध्यष्टदशभिर्दैत्याः षष्ठेशपञ्चभिः ॥३७॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में त्रि ३ सप्त ७ और नव ९ मात्रा होवे तो देवयोनि कहना और यदि द्वितीय २ द्वादश १२ और प्रथम १ मात्रा होवे तो नर योनि कहना, और चतुर्थ ४ अष्टम ८ और दशम १० मात्रा होवे तो पक्षी योनि कहना, तथा पञ्च ५ षष्ठ ६ और एकादश ११ मात्रा होवे तो दैत्ययोनि कहना चाहिये। इस उदाहरण में द्वितीय मात्रा है इसलिए यहाँ इसे नरयोनि कहना चाहिए ॥३७॥

प्रसङ्गात्कुत्र सा देवता इति ज्ञानमाह।

**आदावालिङ्गिता मात्रा स्वर्गे मर्त्येऽभिधूमिता।**
**दग्धमात्रा यदादौ चेत्पाताले देवता स्मृता ॥३८॥**

प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में आलिङ्गित मात्रा होवे तो देवता स्वर्गलोक में कहना, अभिधूम्र मात्रा होवे तो मृत्युलोक में देवता कहना चाहिए, दग्धमात्रा होवे तो पाताललोक में देवता कहना चाहिए। इस उदाहरण में अभिधूम्र मात्रा है अतः देवता मृत्युलोक में कहना चाहिये ॥३८॥

मनुष्ये ज्ञाते पुनः किं कार्यमित्यत्राह।

**मनुजेऽपि वदेद्भेदान् पञ्चविप्रादिकान्बुधः।**
**आलिङ्गितादिवेलासु कृत्वा तद्गुणितं वदेत् ॥३९॥**

मनुष्य के पांच भेद पण्डितों को आलिङ्गितादि वेला के विषय में वक्ष्यमाण क्रम से ब्राह्मणादि पांच जाति जान लेना चाहिये ॥३९॥

**आलिंगितेऽर्णपिण्डं सप्तगुणं मात्रिकांकयुक्तम्।**
**अधरानेहसि कुयुतं भूवियुतं चोत्तरे काले ॥४०॥**

आलिङ्गित काल में मनुष्य की चिन्ता का प्रश्न होवे तो पिण्ड को सप्त (सात) से गुणा करें, फिर स्वराङ्क युक्त (योग) करें, फिर आलिङ्गित काल में यदि आधरी वेला होवे तो एक युक्त करें और यदि औत्तरीवेला होवे तो एक (कम) हीन करें ॥४० ॥

**पञ्चहृते स्युर्विप्राः क्षत्रियवैश्यांघ्रिजान्त्यभवाः ।**
**अभिधूमिते च पिण्डे द्विघ्ने बाणैर्हृते योनिः ॥ ४१ ॥**

पूर्व श्लोक में प्रतिपादित अंक समूह में पांच का भाग देना और अवशिष्टांक १ से विप्र, २ से क्षत्रिय, ३ से शूद्र और ५ से अन्त्यज वर्ण क्रम से जान लेना चाहिए। यथा- वर्णपिण्ड ३२ को सात से गुणा किया तो २२४ स्वरांक ९ को युक्त किया तो २३३ हुआ, इस अंक में आलिंगितवेला में यदि आधरी वेला होवे तो एक युक्त करे, औत्तरीवेला होवे तो एक हीन (कम) करे। इस उदाहरण में आधरीवेला है। इसलिए एक युक्त किया तो २३४ हुआ, इसमें पांच का भाग दिया तो अवशिष्ट चार बचे इसलिए शूद्रयोनि हुई। अभिधूमितकाल में मनुष्य की चिन्ता का प्रश्न होवे तो गुणक गुणित पिण्ड को द्विगुणित करके पांच से भाग दे अवशिष्टांक से ब्राह्मणादि वर्ण क्रम से जान लेना चाहिए। यथा गुणक १७ गुणित पिण्ड ६९७ को द्विगुणित किया तो १३९४ हुआ, इसे पांच से भाग दिया तो अवशिष्ट ४ बचे इस प्रकार यह शूद्रयोनि हुई ॥४१ ॥

**दग्धे काले पिण्डे कृत्वोत्तराधरैर्वर्णैः ।**
**प्रश्नार्णघ्ने योगो मात्राङ्काढ्यः शरोद्धृता योनिः ॥४२ ॥**

दग्धकाल में मनुष्य की चिन्ता का प्रश्नहोवे तो उत्तराधर वर्णजन्य पिण्ड को दो जगह स्थापित करें, एकत्र उत्तरवर्ण पिण्डको उत्तरार्ण संख्या से गुणा करें, अधरवर्ण पिण्ड को अधरार्ण संख्या से गुणा करें, फिर दोनों का योग करके स्वरांक युक्त करें, पांच से भाग ले, शेषांक से ब्राह्मणादि योनि क्रम से जान लेना चाहिए। यथा- उत्तर वर्णपिण्ड २३ को उत्तरार्ण ३ संख्या से गुणा किया तो ६९ हुआ, अधरवर्णपिण्ड ९ को अधरार्ण १ संख्या से गुणा किया तो ९ हुआ, दोनों का योग ७८ में स्वरांक ९ युक्त किया तो ८७ हुआ, पांच से भाग दिया शेष २ बचे इस प्रकार यहाँ क्षत्रिय योनि हुई ॥४२ ॥

प्रकारान्तरेण योनिज्ञानमाह।

**अ इ ए ओ विप्राः स्युः आ ऐ क्षत्रं विशस्तथा ई।**
**औ शूद्रा उ ऊ तथान्त्यावन्त्यजवर्णाः समुद्दिष्टाः ॥४३ ॥**

प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में एक, तीन, सात और नौ यदि मात्रा होवे तो विप्रयोनि कहना चाहिए, द्वितीय अष्टम मात्रा होवे तो क्षत्रिययोनि कहना, चतुर्थ मात्रा होवे तो

वैश्ययोनि कहना चाहिए, दशम मात्रा होवे तो शूद्रयोनि कहना चाहिए, पञ्चम, षष्ठ, एकादश, द्वादश मात्रा रहे तो अन्त्यजयोनि कहना चाहिए, इस उदाहरण में द्वितीय मात्रा है इसलिए क्षत्रिय योनि कहना चाहिए ॥४३॥

जातिज्ञाने सति किं कार्यं तदाह।

**आलिङ्गितादिवेलाभिर्ज्ञेया बालादिकाश्च ते।**
**तत्तत्क्रियानुसारेण विमृश्य सुधिया धिया ॥४४॥**

पूर्वोक्त विप्रादि पांच योनि की बालाद्यवस्था का ज्ञान आलिङ्गितादि कालवश करके तत्तत्क्रियानुसार पण्डितों को स्वबुद्धि विवेक से विचार करके जान लेना चाहिये।४४॥

**आलिङ्गितेऽर्णपिण्डे धृतिनिघ्ने मात्रिकाङ्कहते ।**
**बालः कुमारतरुणौ मध्यवृद्धौ शरैस्तष्टे ॥४५॥**

आलिङ्गितकाल का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वर्णपिण्ड को अष्टादश (अठारह) से गुणा करें, पुनः स्वरांक से गुणा करें, और पांच से भाग दे शेषाङ्क १ से बाल, २ से कुमार, ३ से तरुण, ४ से मध्यम, ५ से वृद्ध, इस क्रम से जान लेना चाहिए। यथा- वर्णपिण्ड ३२ को अष्टादश (अठारह) से १८ गुणा किया तो ५७६ हुआ, पुनः स्वरांक ९ से गुणा किया तो ५१८४ हुआ, पांच से भाग लिया तो शेष ४ बचे इस प्रकार ४ शेष बचने के कारण मध्यमावस्था हुई। पञ्चाशद्वर्षनिकटे मध्यवयाः प्रोक्तः ॥४५॥

**अभिधूमिते च दग्धे प्रश्नश्रेणीगजैर्निघ्ना।**
**नवहतपिंडयुता स्याद्बाणैस्तष्टा क्रमाद्योनिः ॥४६॥**

यहाँ अभिधूम्र दग्धकाल का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों की एक ही प्रक्रिया है, श्रेणी वर्णसंख्या को आठ ८ से गुणा करना उसमें नव ९ गुणित पिण्डयुक्त करना, पांच से भाग देना जो शेषांक हो उस से बालाद्यवस्था क्रम से जान लेना चाहिए। यथा, श्रेणीसंख्या ४ को ८ (आठ) से गुणा किया तो ३२ हुआ, फिर पिण्ड ४१ को गुणक १७ से गुणा किया ६९७ हुआ नवगुणित पिण्ड ६२७३ इसमें ३२ युक्त किया तो ६३०५ हुआ, पुनः पांच से भाग दिया तो शेष ५ बचे इस प्रकार वृद्धावस्था हुई ॥४६॥

स च जीवति मृतो वेतिं ज्ञानं तथा कुब्जखञ्जादिज्ञानं चाह -

**उत्तरैर्जीवितं विन्द्यादधरैर्मृतमेव च।**
**स्वान्यदेशांधकुब्जादिसंज्ञाप्रकरणोक्तवत् ॥४७॥**

यदि प्रश्नश्रेणी का प्रथम वर्ण उत्तर होवे तो जीवित कहना चाहिए, यदि अधर वर्ण होवे तो मृतक कहना चाहिए, अन्य देश, ग्राम, अन्ध- कुब्जादि चिह्न संज्ञा प्रकरणोक्तवत् जान लेना चाहिए ॥४७॥ इति मनुष्यभेदाः ॥

अथ पक्षिभेदानाह।

**पक्षिणो द्विविधा ज्ञेया जलजाः स्थलजास्तथा।**
**उत्तरैर्जलजा ताः स्युरधरैः स्थलजाः स्मृताः ॥४८॥**

इस प्रकार मनुष्य भेद कहने के अनन्तर पक्षियों का भेद प्रस्तुत करते हैं। पक्षी दो प्रकार के कहे गये हैं, एक तो जलज, (जो जल में निवास करें) द्वितीय स्थलज, (जो भूमि पर निवास करें) उत्तरवर्ण से जलज पक्षी कहना चाहिए, अधरवर्ण से स्थलज पक्षी कहना चाहिए ॥४८॥

**पिंडेऽर्कघ्ने चोत्तराजादियाते षड्वर्गोनेऽल्पे गजाब्ध्यन्विते चेत्।**
**नीचात् षड्वर्गान्विते सप्ततष्टे युग्मे बद्धः स्यादयुग्मे विमुक्तः ॥४९॥**

पिण्ड को द्वादश १२ से गुणा करें, फिर प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में उत्तरा मात्रा होवे तो उसमें ३६ कम करें, यदि द्वादश गुणित पिंड न्यून (कम) होवे तो ४८ युक्त करें और उसमें सात का भाग देना यदि शेष समांक होवे तो बद्ध पक्षी जान लेना और यदि विषमांक होवे तो स्वच्छन्दचारी पक्षी जान लेना। प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में अधरमांत्रा होवे तो १२ द्वादश गुणित पिण्ड में षट्त्रिंशत् (छत्तीस) युक्त करना, फिर सात का भाग देना यदि समांक बचे तो पिञ्जरादिस्थ पक्षी जान लेना, विषमांक बचे तो स्वच्छन्दचारी पक्षी कहना। यथा पिंड ४१ को १२ से द्वादश गुणा किया तो ४९२ हुआ, यहां अधरमात्रा है इसलिए ३६ को युक्त किया तो ५२८ हुआ, सात से भाग देने पर शेष ३ बचे तो विमुक्त पक्षी हुआ ॥४९॥ इति पक्षिभेदाः ॥

अथ राक्षसभेदानाह।

**राक्षसा द्विविधाः प्रोक्ताः कर्मजा योनिजास्तथा।**
**मात्रापिण्डे द्वितष्टे स्युः कर्मजा योनिजाः क्रमात् ॥५०॥**

राक्षस दो प्रकार के कहे गये हैं, एक तो कर्मज और द्वितीय योनिज, भूत प्रेतादिक कर्मज कहे गये हैं, असुरादि वंश में उत्पन्न को योनिज कहा है, मात्रापिण्ड ९ में दो का भाग देना विषम शेष होवे तो कर्मज राक्षसयोनि कहना चाहिए, सम शेष बचे तो योनिज राक्षस कहना चाहिए । इस उदाहरण में शेष १ बचा इसलिए यहाँ कर्मज राक्षसयोनि हुई ॥५०॥ इति द्विपदभेदाः ॥

अथचतुष्पदभेदानाह।

**खुरी नखी तथा दन्ती शृंगी भेदाश्चतुष्पदे।**
**खछौ ठथौ धफौ तेषां रसौ प्रोक्ताः क्रमादमी ॥५१॥**

चतुष्पद चार प्रकार के कहे गये हैं, प्रथम खुरी, द्वितीय नखी, तृतीय दन्ती और चतुर्थ शृङ्गी। अब वर्णों की चतुष्पद संज्ञा कहते हैं, ख छ इन दोनों वर्णों की खुरी संज्ञा कही गई है, अश्व खरादि। ठ थ इन दोनों वर्णों की नखी संज्ञा कही गई है, नखी में सिंह मार्जारादि । ध फ इन दोनों वर्णों की दन्ती संज्ञा कही गई है, दन्ती गजादि। र स इन दोनों वर्णों की शृङ्गी संज्ञा कही है, शृंङ्गी में गो महिष्यादि। प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में खकारादि आठ वर्ण होवे तो ये संज्ञा कहना चाहिए। यदि ये वर्ण नहीं होवे तो उसका भी प्रकार लिखते हैं ॥५१॥

**तिसृभिस्तिसृभिर्ज्ञेया मात्रिकाभिः क्रमात्तथा।**
**बुधैर्वर्णापेक्षयोक्ता मात्रा बलवती सदा ॥५२॥**

प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्ण में जो मात्रा होवे उसके वश करके चतुष्पद संज्ञा करनी चाहिए उसे कहते हैं, अ आ इ, इन तीन स्वरों की खुरी संज्ञा होती है, ई उ ऊ इन तीन स्वरों की नखी संज्ञा होती है, ए ऐ औ, इन तीन स्वरों की दन्तीसंज्ञा होती है, औ अं अः इन तीन स्वरों की शृंगीसंज्ञा कही गई है वर्णापिक्षया मात्रा सर्वकाल में बलवान् कही गई है, यह पंडितजनों को जानने योग्य है।५२॥

**यद्युत्तरसमयः स्याद्वर्णाङ्काश्चाद्यवर्गाङ्कैः।**
**सूक्ष्मैर्निघ्ना युक्ता द्विघ्नाजङ्कैर्युगोद्धृता योनिः ॥५३॥**

यदि औत्तरीवेला में प्रश्न होवे तो वर्णपिण्ड को सूक्ष्म चक्रोद्भव प्रश्न श्रेणी के प्रथम वर्ण को वर्गांक से गुणा करें, द्विगुणित मात्रांक युक्त करे उसमें चार का भाग देना अवशिष्टांक से खुरी पूर्वादि योनि जान लेना चाहिए। यथा वर्णांकाः ३२ सूक्ष्म चक्रीभ वैराद्यस्य नकारस्य वर्गांकै ८ गुंणिता २५६ द्विगुणितमात्राङ्कै १८ र्युक्ता २७४ युग ४ भक्ताः शेषे २ नखी योनिः ॥५३॥

**यद्यधरानेहा स्यात्प्राग्वत्पिण्डं स्वगुणांकघ्नम्।**
**वेदैस्तष्टं योनिः खुरीपूर्वाणां चतुर्णां स्यात् ॥५४॥**

यदि आधरीवेला में प्रश्न होवे तो गुणक गुणित पिण्ड में चार से भाग देना चाहिये और जो शेषांक बचे उससे खुरी पूर्व योनि जान लेना चाहिये। यथा, पिण्डं ४१ स्वगुणक १७ गुणितं ६८७ वेदैस्तष्टं १ खुरी योनिः ॥५४॥

स च ग्राम्यो वन्यो वेति ज्ञानमाह।

**मात्राङ्का अधरार्णैं संयुक्ताः सप्त सन्तष्टाः।**
**विषमे ग्रामनिवासी वनवासी स्यात्समे शेषे ॥५५॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के अधरवर्ण संख्या में मात्रांकयुक्त करके उसमें सात का भाग देना, यदि विषम शेष बचे तो ग्रामनिवासी चतुष्पद, और यदि सम शेष बचे तो वनवासी चतुष्पद कहना चाहिए। यथा, मात्रांकाः ९ अधरवर्णेन १ युक्ताः। १० सप्तसंतष्टाः शेषे ३ ग्रामनिवासी इति ॥५५॥

सोऽपि जीवति मृतो वेति ज्ञानमाह।

**पञ्चोनितं स्वपिण्डं ज्वलनैस्तष्टं समे शेष।**
**मरणं विषमे जीवन्मुक्तं प्राज्ञैः क्रमेणैव ॥५६॥**

गुणक गुणित पिण्ड में पांच हीन (कम) करके उसमें तीन का भाग देना यदि अवशिष्ट समांक रहे तो मृतक चतुष्पद कहना और यदि विषम अवशिष्ट रहे तो जीवित चतुष्पद कहना। यथा, स्वपिण्डं ६९७ पञ्चोनितं ६९२ ज्वलनै ३ स्तष्टं समे सति न जीवति सः ॥५६॥ इति चतुष्पदभेदाः॥

अथापादभेदानाह।

**जलेचरास्त्र्यादिमवर्गवर्णैः स्थलेचरा युग्मचतुर्थजैश्च।**
**उभयचराः पञ्चमवर्गवर्णैर्दीर्घापराज्भिः सविषाविषौ स्तः ॥५७॥**

यहाँ प्रश्नश्रेणी के आदि के वर्ण से अपद भेद कहते हैं, वर्गों के प्रथम तृतीय वर्णों की जलचर संज्ञा कही है, द्वितीय चतुर्थ वर्णों की स्थल चर संज्ञा कही है, ग्रहादिक जलचर कहे गये हैं, कृमि सर्पादिक स्थलचर कहे गये हैं, वर्ग के पञ्च वर्णों की उभयचर संज्ञा कही गई है, जल सर्पादिक उभयचर कहे गये हैं, दीर्घस्वर विषसंयुक्त कहे गये हैं, ह्रस्वस्वर निर्विष कहे गये हैं, इस उदाहरण में उभयचर अपद सविष हुआ है ॥५७॥

**प्रश्नश्रेण्यामुत्तरा स्यादिगस्य पिण्डं तद्वच्चाधरा स्यादिगस्य।**
**ऐक्यं कृत्वा सप्ततष्टेऽत्र शेषं शोध्यं श्रेणीसम्भवे सर्वपिण्डे ॥५८॥**

यदि प्रश्न श्रेणी का आदि का उत्तर वर्णपिण्ड का तद्वत् श्रेणी प्रथमाधर वर्णपिण्ड का योग करके सप्त (सात) का भाग दें और अवशिष्टांक को श्रेणी सम्भव सर्व पिण्ड में शोधन करें ॥५८॥

**चेन्नो शुद्धे युक्तदेवे विशोध्ये युग्मायुग्मे तोयनिर्नीरजाता।**
**पिण्डे द्विघ्ने सप्ततष्टे विषाढ्यो युग्मेऽयुग्मे निर्विषः स्यात् क्रमेण ॥५९॥**

यदि श्रेणीसंभव सर्व पिण्ड न्यून (कम) होवे तो ३३ युक्त करके शोधन करें, शोधन करने पर शेष युग्म होवे तो जलचर अपद कहना, विषम होवे तो स्थलचर अपद कहना चाहिये। यथा "प्रश्ने श्रेण्यां आदिगस्य उत्तरवर्णस्य नस्य पिण्डं १० अधरस्य रस्य पिण्डं ९ एकीकृत्य १० सप्ततष्टेऽत्र शेषं ५ तच्छ्रेणीसम्भवे सर्वपिण्डे ४१ विशोध्यं ३६ अत्र युग्मशेषे सति जलचरोऽपदः पिण्डे ६९७ द्विघ्ने १३९४ सप्ततष्टेऽत्र शेषं १ विषमे शेषे सति निर्विषोऽपद इति ॥५९॥ इति अपदभेदाः॥

अथ बहुपादभेदानाह -

**बहुपादद्विभेदाः स्युरंडजाश्च जरायुजाः।**
**ई ए ओ ऐ उ अं अस्युरंडजाः परजाः परे॥ ६०॥**

यहाँ बहुपाद दो प्रकार के कहे गये हैं एक तो अंडज और द्वितीय जरायुज कहे गये हैं, चतुर्थ, सप्तम, नवम, अष्टम, पञ्च, एकादश और द्वादश इन स्वरों की अंडज संज्ञा कही गई है, अंडजाः खारजूकादयः। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, षष्ठ, दशम इन स्वरों की जरायुज संज्ञा कही है। जरायुजाः सरभादयः॥ प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में जो मात्रा होवे उसके वश करके जान लेना इस उदाहरण में जरायुज बहुपाद हुआ है ॥६०॥

**उत्तरकाले द्विघ्नं स्यात्पिंडं वर्णजेऽब्धिहते।**
**युक्ताद्रिहज्जरायुजपरयोर्नोस्तसमासमयोः ॥६१॥**

यदि औत्तरीवेला में प्रश्न होवे तो द्विगुणित मात्रापिंड को चतुर्गुणित वर्णपिण्ड में युक्त करके उसमें सात का भाग देना, सम बचने से जरायुज जानना चाहिए, विषम बचने से अंडज जानना चाहिए। यथा मात्रापिण्ड द्विघ्नं १८ वर्णजे पिण्डे ३२ अब्धि ४ हते १२८ युक्ता १४६ सप्त भक्ताः ६ समशेषेण जरायुजो बहुपादः ॥६१॥

**अधरानेहसि मात्राङ्कानागघ्नयुताश्च वर्णभवैः।**
**नगतष्टाः समविषये योनिः प्रोक्ता जरायुजांडजयोः ॥६२॥**

यदि आधरीवेला में प्रश्न होवे तो अष्टगुणित मात्रा पिण्ड को वर्ण पिण्ड में युक्त करके उसमें सात का भाग देना चाहिये और सम बचने से जरायुज बहुपाद कहना, विषम शेष रहे तो अंडज बहुपाद कहना चाहिए। मात्राङ्का ९ अष्ट ८ गुणिता ७२ वर्णभवैरङ्कैः ३२ र्युता १०४ नग तष्टा ६ समशेषत्वाज्जरायुजो बहुपादः ॥६२॥ इति जीवभेदाः॥

अथ धातुभेदानाह ।

**धाम्याधाम्यविभेदेन धातुर्योनिर्द्विधा मता ।**
**अधाम्यमधरैः प्रोक्तमुत्तरैर्धाम्यमेव च ।।६३।।**

सुवर्णादिक को धाम्यधातु कहते हैं, वज्रादिक को अधाम्यधातु कहते हैं, उत्तर वर्णों की धाम्य संज्ञा होती है, अधरवर्णों की अधाम्य संज्ञा होती है ।।६३ ।।

**आलिङ्गितादियुक्ते प्रश्नाद्यर्णे क्रमात्पिंडे ।**
**त्रिचतुर्द्वियुक् समाङ्केऽधाम्यंधाम्यं तथा युग्मे ।।६४ ।।**

यदि प्रश्नश्रेणी के आद्यर्णमें आलिङ्गित मात्रा होवे तो पिण्ड में ३ युक्त करें, यदि अभिधूम्र मात्रा होवे तो ४ युक्त करें, दग्ध मात्रा होवे तो २ युक्त करें, अत्रोदाहरणेऽभिधूम्रमात्रा योगस्तेन पिण्डं ४१ चतुर्युक् ४५ अयुग्मे शेषे सति धाम्यं धातुरूपं, समे शेषे अधाम्यमिति ।।६४ ।।

अथ प्रथमं धाम्यभेदानाह ।

**धाम्यमपि द्विविधं स्याद्घटितमघटितं क्रमेणैव ।**
**अष्टौ तद्भेदाः स्युः स्वर्णं रौप्यं तथा ताम्रम् ।**
**कांस्यं तारत्रपुषी पित्तललोहे ह्यवर्गाद्यैः ।।६५ ।।**

धाम्यधातु दो प्रकार का कहा गया है, एक तो घटित और दूसरा अघटित। उसके आठ भेद होते हैं, अवर्गादि आठ वर्ग स्वर्णादि धातु के स्वामी क्रम से जान लेना चाहिए । यदि प्रश्नश्रेणी का प्रथम वर्ण जिस वर्ग का होवे उसके अनुसार सुवर्णादि धातु जान लेना चाहिये जिसे सुगमता के लिये चक्र में स्पष्ट रुप से प्रतिपादित किया गया है ।।६५ ।।

**६५ श्लोकोक्तं चक्रम् ।**

| अ | क | च | ट | त | प | य | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वर्ण | रौप्य | ताम्र | कांस्य | सीस | रंग | पित्तल | लोह |

**वर्णाङ्कं श्रेणिघ्नं युक्तं स्वरपिण्डवर्गेण ।**
**तष्टं नागैः शेषे ज्ञेया स्वर्णादिका योनिः ।।६६ ।।**

वर्णपिण्ड को श्रेणी की वर्णसंख्या से गुणा करे, और मात्रापिण्ड का वर्ग करके युक्त करें, उसमें आठ का भाग देना, शेषांक से स्वर्णादिक योनि जान लेना चाहिए । यथा-वर्णपिण्डं ३२ श्रेणी ४ गुणितं १२८ स्वरपिण्ड ९ वर्गेण ८१ युक्तं २०९ नागै ८ स्तष्टं शेषं १ शेषत्वात् १ स्वर्णयोनिः ।।६६ ।।

**ज्ञात्वा स्वर्णादिकान् धातुरुत्तराधरकालतः ।**
**कृत्वा तत्तत्क्रियां विद्वान्वदेदघटितादिकम् ॥६७॥**

इस प्रकार स्वर्णादिक योनि जान करके उत्तराधर काल से तो पूर्व में प्रतिपादित तत्तत् क्रियानुसार पण्डितों (विद्वानों) को अघटितादिक भेदों को वर्णन करना चाहिये ॥६७॥

**मात्राङ्काः श्रेणिघ्ना द्विस्थास्तिथ्याप्तलब्धाढ्याः ।**
**वर्णाङ्काढ्यास्तष्टाः शैलैर्युगयुग् ह्यघटितान्ये ॥६८॥**

यदि औत्तरीवेला में प्रश्न होवे तो मात्रापिण्ड को श्रेणीसंख्या से गुणा करें और उसे दो जगह स्थापित करें, एक जगह १५ का भाग दे, लब्ध के द्वितीय स्थान में उसको युक्त (योग) करें, फिर वर्णपिण्ड युक्त करें उसमें ७ का भाग देना यदि शेष सम होवे तो अघटित योनि कहना, विषम शेष होवे तो घटित योनि कहना। यथा मात्रांकाः ९ श्रेणि ४ घ्ना ३६ द्विस्थ ३६ तिथ्याप्त १५ लब्धेन २ युक्ता ३८ वर्णांकैश्च ३२ युक्ता नगै स्तष्टा ७ विषमशेषत्वात् घटितयोनिरिति ॥६८॥

**अधरानेहसि पिण्डे मात्रार्णोत्थेऽश्विवर्णघ्ने ।**
**योगोऽद्रिहृत्समे स्यादघटितमसमे तथा घटितम् ॥६९॥**

यदि आधरीवेला में प्रश्न होवे तो मात्रापिण्ड को द्विगुणित करके वर्णपिण्ड को श्रेणीसंख्या से गुणा करें, और दोनों के योग में ७ का भाग दे, जो शेष होवे उसे अघटित धातु योनि कहनी चाहिये। मात्रापिण्डे ९ द्विघ्ने १८ वर्णजे पिण्डे ३२ श्रेणि ४ घ्ने १२८ द्वयोर्योगे १४६ सप्तभक्ते समे शेषे ६ सति अघटितं धातुरूपम् ॥६९॥

घटितभेदानाह।

**आभरणभाण्डमुद्राः त्रेधा घटितः स्मृतो धातुः ।**
**आलिङ्गितादिभिः स्यादुत्तरपूर्वैस्तथा वर्णैः ॥७०॥**

घटित धातु तीन प्रकार की कही गयी है, प्रथम आभरण १ द्वितीय भाण्ड २ तृतीय मुद्रा ३। यदि प्रश्नश्रेणी के आद्यर्णमें आलिंगित मात्रा होवे तो आभरण कहना, यदि अभिधूम्र मात्रा होवे तो भाण्ड कहना, यदि दग्ध मात्रा होवे तो मुद्रा कहना, श्रेणी का प्रथम वर्ण उत्तर होवे तो आभरण कहना, अधर वर्ण होवे तो भाण्ड धातु कहना, दग्धवर्ण होवे तो मुद्रा कहना चाहिये ॥७०॥

**वर्णाङ्कघ्नश्रेणी खण्डमजंकैर्युतं त्रयाप्तम् ।**
**शेषैराभरणाद्य ह्यथ चेदधरोद्भवा वेला ॥७१॥**

यदि औत्तरीवेला में प्रश्न होवे तो वर्णपिण्ड को श्रेणीसंख्या से गुणा करें, उसके अर्द्ध (आधे) में स्वरपिण्ड युक्त करें और तीन का भाग देना एकादि शेष करके आभरणादि धातु योनि को जान लेना चाहिए। यथा-वर्ण पिण्डेन ३२ गुणिता श्रेणी ४ जाता १२८ अस्य खण्डं ६४ स्वराङ्कै ९ युंत ७३ त्रिभि ३ र्भक्तं शेषं १ आभरणयोनिर्जाता ॥७१॥

**द्विघ्नश्रेण्या गुणिता मात्रांका द्व्याहतश्रेण्या।**
**युक्तास्त्रिभिर्विभक्ता आभरणाद्यं स्मृतं शेषैः ॥७२॥**

यदि आधरीवेला में प्रश्न होवे तो द्विगुणित श्रेणी करके मात्रापिण्ड को गुणा करें और द्विगुणित श्रेणी युक्त करें उसमें तीन से भाग लेना, एकादि शेष करके आभरणादि धातु योनि कहना चाहिए। यथा - द्विघ्न २ श्रेण्या ८ मात्रांका ९ गुणिता ७२ द्व्या २ हत श्रेण्या ८ युक्ता ८० त्रिभिर्भक्ता ३ शेषं २ भांडयोनिर्जाता॥७२॥

तत्र विशेषमाह।

**स्वदेशादिकमत्रापि संज्ञाप्रकरणोक्तवत्।**
**वक्ष्यमाणप्रकारेण तन्नामापि वदेत्सुधीः ॥७३॥**

यहां स्वदेशादिकों की संज्ञा प्रथम प्रकरण में जो प्रतिपादित की गई है उसके अनुसार जान लेना चाहिए, वक्ष्यमाण प्रकार के अनुसार तत्तद्वस्तुओं का नाम भी पंडितों (विद्वानों) को कहना चाहिये॥७३॥

अथ आभरणभेदानाह।

**षड्विधमाभरणं स्याच्छिरः श्रवोबाहुकण्ठगतम्।**
**कटिपादयोः क्रमेण द्वाभ्यां द्वाभ्यां च मात्राभ्याम्॥७४॥**

आभूषण ६ प्रकार के कहे गये है, अकारादि द्वादश मात्रा को ६ वर्ग करके शिरादि ६ अङ्गों का आभरण जान लेना चाहिये, जिसे सारणी में स्पष्ट रुप से प्रतिपादित कर दिया है समझ लेना चाहिये ॥७४॥

चतुःसप्ततिश्लोकोक्तं चक्रम्।

| अआ | इई | उऊ | एऐ | ओऔ | अंअः |
|---|---|---|---|---|---|
| शिर | कर्णौ | बाहू | कण्ठ | कटी | पाद |

पिण्डेनाह।

**प्रश्नार्णांकं त्रिघ्नं सशरं मात्रांकसंयुक्तम्।**
**षड्भिस्तष्टं षोढा भूषणभेदाः क्रमात्ते स्युः ॥७५॥**

वर्णपिंड को त्रिगुणित करके उसमें ५ युक्त करें, और स्वराङ्क युक्त करें इसमें ६ का भाग देना चाहिए तथा एकादि शेष करके शिरादि ६ अंग का आभूषण क्रम से समझ लेना चाहिए। यथा- प्रश्नवर्णपिंडं ३२ त्रिघ्नं ९६ पञ्च ५ युतं १०१ मात्राङ्कै ९ श्च युतं ११० षड्भि ६ स्तष्टं शेषं २ पूर्वोक्तेषु षोढाभूषणभेदेषु कर्णभूषणम्॥७५॥

किमङ्गभूषणमिति ज्ञानमाह।

**मात्राङ्कयुतश्रेण्या हीनं लब्धं तदूनं चेत्।**
**युक्तं समविषमांकैर्वामाङ्गान्याङ्गभूषे स्तः॥७६॥**

पूर्व में ६ का भाग देने से जो लब्ध आया है उसमें मात्रांकयुत श्रेणी को हीन करें, जो लब्ध न्यून होवे तो उसका योग करें, शोधन शेष सम होवे तो वामभाग का भूषण कहना चाहिए, यदि विषम शेष होवे तो दक्षिण अंग का आभूषण कहना चाहिए। यथाः- पूर्वोक्तं ११० षड्भि ६ स्तष्टे लब्धं १८ मात्राङ्के ९ र्युतया श्रेण्या १३ हीनं शेषं ५ विषमाङ्कैः शेषैर्दक्षिणांगभूषाभूषणम्॥७६॥ इति धाम्यभेदाः।

अथाऽधाम्यभेदानाह।

**अधाम्यभेदास्त्रय उत्तराद्यैरालिङ्गिताद्यैश्च वरान्तरान्त्याः।**
**स्युरुत्तमा वज्रमुखाश्च मध्या अश्माभ्रकाद्या लवणादयोऽन्त्याः॥७७॥**

अधाम्य धातु तीन प्रकार का होता है, प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में उत्तर वर्ण होवे तो अधाम्यधातु उत्तम कहना चाहिए, हीरा माणिक इत्यादि जान लेना चाहिए, अधरवर्ण होवे तो अधाम्यधातु मध्यम कहना चाहिए, स्फटिक, अभ्रक इत्यादि जानना चाहिए, यदि दग्धवर्ण होवे तो अधाम्यधातु अधम कहना चाहिए, लवणप्रभृति जानना चाहिए, श्रेणी के आद्यर्ण में आलिंगित मात्रा होवे तो अधाम्यधातु उत्तम कहना चाहिए, अभिधूम्र मात्रा होवे तो अधाम्यधातु मध्यम कहना, दग्धमात्रा होवे तो अधाम्यधातु अधम कहना चाहिये॥७७॥

पिण्डेन चाह।

**पिण्डं स्वरपिण्डघ्नं त्रिघ्नार्णांकाः स्वरांकोनात्।**
**शेषयुगुत्तरकाले तष्टं रामैर्वरिष्ठाद्याः॥७८॥**

यदि औत्तरीवेला में प्रश्न होवे तो पिंड को स्वरपिंड से गुणा करें और त्रिगुणित वर्णपिण्ड में मात्रा पिंड को हीन करके शेष को युक्त करें उसमें ३ का भाग दे शेषांक से श्रेष्ठ मध्यमाधम भेद जान लेना चाहिए। यथा-पिंडे ४१ स्वरपिंडेन ९ गुणितं

३६९ त्रि ३ घ्नाद्वर्ण ३२ पिंडात् ९६ स्वराङ्की ९ नात् ८७ शेषयुक् ४५६ रामै ३ स्तष्टं ३ त्रिभिः शेषैरधाम्ययोनिः ॥७८॥

**अधरानेहसि पिंडं सप्तगुणं तद् द्विधात्रिलब्धाढ्यम्।**
**रामैर्हृतेऽवशेषैर्ह्युत्तममध्याधमास्ते स्युः ॥७९॥**

यदि आधरीवेला में प्रश्न होवे तो सप्तगुणित पिंड को दो जगह स्थापित करके एक जगह तीन से भाग लेना चाहिए, लब्धी को द्वितीय स्थान में युक्त करना, उसमें ३ से भाग देना चाहिए, शेषांक से श्रेष्ठ मध्यमाधम भेद जान लेना चाहिए। यथा पिंड४१ सप्त ७ गुणं २८७ द्विधा २८७ त्रि ३ हल्लब्धेन ९५ युतं ३८२ रामै ३ र्हृते शेषं १ उत्तमयोनिर्जाता॥७९॥

तत्र विशेषमाह।

**उत्तरैर्घटितं विन्द्यात् समैरघटितं तथा।**
**आदिगार्णैः स्वरैश्चान्यद्वक्तव्यं सुधिया धिया ॥८०॥**

यदि प्रश्न श्रेणी के आद्यर्ण में स्वरवर्ण उत्तर होवे तो घटित धातु योनि कहना चाहिए, यदि आद्यर्ण में अधर स्वरवर्ण होवे तो अघटित धातुयोनि कहना चाहिए। अन्य विशेष पंडितों (विद्वानों) को स्वबुद्धि से विचार कर कहना चाहिये॥८०॥ इति धातुभेदा॥

अथ मूलभेदानाह।

**मूलं पञ्चविधं प्रोक्तं वृक्षो गुल्मं लता क्रमात्।**
**वल्ली कन्दं पञ्चवर्गैः कटुतिक्तकषायकाः ॥८१॥**
**अम्लक्षाररसास्तद्वच्छिन्नाछिन्ने परोत्तरैः।**
**त्वक्पत्रपुष्पाणि फलं निर्यासं पञ्चवर्गकैः ॥८२॥**

मूल योनि पांच प्रकार की कही गई है। वृक्ष १, गुच्छ २, लता ३, वल्ली ४, और कन्द ५ इनको अवर्गादि नव वर्गों के पांच वर्ग करके क्रम से जान लेना चाहिये, इसी प्रकार कटुकादि रस भी समझ लेना चाहिए, त्वचादि भी पूर्वोक्त प्रकार से जान लेना चाहिए, उत्तरवर्णों से अच्छिन्न और अधर वर्णों से छिन्न जान लेना चाहिये। प्रश्नश्रेणी का आद्यर्ण वशात् यह पूर्वोक्त समझ लेना चाहिये, जिसे स्पष्ट रुप से समझने के लिये चक्र (सारणी) में प्रतिपादित किया गया है ॥८१॥८२॥

| अ | ए | क | च | ट | त | प | य | श | वृक्ष,कटुरस, त्वक्, अच्छिन्न। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ | ऐ | ख | छ | ठ | थ | फ | र | ष | गुल्म, तिक्तरस, पत्र, छिन्न |
| इ | ओ | ग | ज | ड | द | ब | ल | स | लता, कषायरस, पुष्प अछिन्न। |
| ई | औ | घ | झ | ढ | ध | भ | व | ह | वल्ली, अम्लरस, फल, छिन्न। |
| उऊ | अंअः | ङ | ञ | ण | न | म | ० | ० | कन्द, क्षाररस, निर्यास (गूंद) छिन्नाछिन्न |

पिंडेन चाह।

**सूक्ष्माख्यपिण्डं पृथगग्निलब्धं युतं शराप्तं तरुपूर्वयोनिः।**
**लब्धाढ्यपिंडं शरहृत् रसा स्युः स्निग्धं तथाद्यैः परिशेष-मुक्तात्॥८३॥**

मूलयोनि का भेद कहने के लिये सूक्ष्मचक्र से पिंडोत्पादन करना चाहिये, उसको दो जगह स्थापित करना चाहिए, एक जगह ३ से भाग देना, लब्धको द्वितीय स्थान में युक्त करना, ५ का भाग देना शेषांक से तरु पूर्व योनि जान लेना। लब्धयुक्त पिंड में ५ का भाग देना एकादि शेष करके कटुकादि रस जान लेना चाहिए। उत्तरवर्णों की स्निग्धसंज्ञा कही गयी है, अधरवर्णों की शुष्कसंज्ञा कही गयी है। परिशेष नाम आकारादिक जो है, उसे संज्ञा प्रकरण में बताये अनुसार जान लेना चाहिये। यथा-सूक्ष्माख्यपिण्डं ६५ पृथक् ६५ रामै ३ र्लब्धेन २१ युतं ८५ पञ्चविभक्तं शेषं १ तरुयोनिर्जाता। पिण्डं ६५ पञ्च ५ भक्तेन लब्धेन १७ युक्तं ८२ पञ्च ५ भक्तं शेषं २ तिक्तरसस्तरुः। प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण से आर्द्र और शुष्क भेद जान लेना चाहिए॥८३॥

**वटशालनिम्बपूर्वाः करवीरकरीरकुन्दकर्पासाः।**
**कूष्माण्डाद्याः कुशतृणगोधूमाद्या हरिद्राद्याः॥८४॥**

वट शाल, निम्ब इत्यादि वृक्ष कहे गये हैं, करवीर, करीर, कुन्द, कर्पासादिक गुल्म कहे, हैं, कूष्माण्डादिक लता कही गयी हैं, कुश, तृण, गोधूमादिक वल्ली कही गयी हैं, हरिद्रादिक कन्द कहे गये हैं॥८४॥

पिण्डेन चाह।

**श्रेण्याद्यर्णाङ्काहतं वर्णपिण्डं द्वाभ्यां तष्टं स्यादभिन्नं च भिन्नम्।**
**अस्मिन् भेदाः पञ्चोक्तास्त्वगाद्याः कन्दे भेदाः संविमृश्योहनीयाः॥८५॥**

वर्णपिण्ड को प्रश्नश्रेणी के प्रथम वर्ण के वर्गांक से गुणा करें, उसमें दो का भाग देना, यदि १ शेष बचे उसे अच्छिन्न कहना चाहिये, यदि शून्य शेष बचे तो छिन्न कहना चाहिये। त्वगादिक पांच प्रकार का देश व्यवस्था के अनुसार जान करके बताना

चाहिये। यथा वर्णपिंडं ३२ श्रेण्यादि वर्गांकेन १० हंत ३२० द्वाभ्यां २ तष्टं शून्यशेषत्वात् छिन्नमिति ॥८५॥

**श्रेणीमुखं यद्यधरार्णयुक्तं तदाधराङ्कैर्वियुताः श्रुतीभाः ॥**
**यद्युत्तराद्यं च तदर्णपिंडे युक्तं श्रुतीभैः शरहृत्त्वगादिः ॥८६॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्ण में अधर वर्ण होवे तो चतुरशीति (चौरासी) ८४ में अधरवर्ण पिण्ड को हीन (कम) करें, उत्तर वर्ण होवे तो चतुरशीति (चौरासी) में उत्तरवर्ण पिण्ड को युक्त (योग) करें, उसमें पांच का भाग देना, एकादि शेष करके त्वगादिक क्रम से जान लेना चाहिए, इस उदाहरण में उत्तर मुख श्रेणी हैं यथा - वर्णपिण्डं ३२ श्रुतीभै ८४ र्युक्तं ११६ पञ्चभक्तं शेषं १ त्वगिति ॥८६॥ अत्र मुष्टिलूकागतं पूर्वोक्तरीत्यैव ज्ञात्वा वदेत् ॥

इति प्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां मूकादिगतजीवादिप्रकरणं तृतीयम्।

**अथ नामबन्धप्रकरणम्**

अथ सर्वोपजीविनामबन्धप्रकरणमाह।

**कु १ द्वि २ त्र्य ३ ब्धी ४ षु ६ सप्त ७ द्वि २ युग ४ रस ६ रसा ६ ग्नी ३ षवो ५ मात्रिकाङ्का।**
**वर्णाङ्कैः सूक्ष्मचक्रादधरपरभवं राशियुग्मं विधाय।**
**आदौ चेदुत्तरार्णं तदधररहिता उत्तराङ्का यदादौ।**
**नीचं योगस्वराङ्कैर्गुणित ऋषिहृतः शेषितैर्नामवर्णाः ॥१॥**

यहाँ पर दश श्लोकों के द्वारा नाम का निष्कासन प्रतिपादित करते हैं, अकारादि द्वादश मात्रा का एकादि क्रम से अंक जान लेना और वर्णांक सूक्ष्म चक्र से सम्पादन करें फिर उत्तराधर वर्णजन्य पिण्ड को पृथक् पृथक् स्थापित करें, यदि प्रश्नश्रेणी का प्रथम वर्ण उत्तर होवे तो अधरवर्ण पिण्ड को उत्तर वर्णपिण्ड में हीन (कम) करें, यदि श्रेणी का प्रथम वर्ण अधर होवे तो दोनों का योग करें, फिर मात्रांक से गुणा करें और उसमें सात का भाग दे जो शेषांक बचे उससे नाम का वर्ण जानना चाहिए। यथा- सूक्ष्मचक्रादधरवर्णपिण्डम् ११ उत्तरवर्णपिण्डं २९ मात्रापिण्डं ८ अत्रादौ उत्तरवर्णस्तेन अधरांका ११ रहिता उत्तरा २९ जाताः १८ स्वरांकै ८ र्गुणिताः १४४ सप्त ७ भक्ताशेषै ४ श्चतुरक्षरं नामेति सर्वत्र ॥१॥

**१ श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ७ | २ | ४ | ६ | ६ | ३ | ५ |

प्रकारान्तरेणाह।

**समाङ्कमुत्तरैर्नाम विषमाङ्कं तथाधरैः।**
**मिश्रयोरधिकेनात्र समं विषममेव च ॥२॥**

प्रश्नश्रेणी में उत्तरवर्णों से समांक नाम कहना चाहिए, दो चार वर्ण का अधरवर्णों से विषमांक नाम कहना चाहिए एक तीन पांच वर्ण का प्रश्नश्रेणी में उत्तरवर्ण यदि अधिक होवे तो समांक नाम कहना चाहिए यदि अधरवर्ण अधिक होवे तो विषमांक नाम कहना चाहिए और यदि उत्तराधर समान होवे तो आद्यर्ण से नाम कहना चाहिये॥२॥

प्रकारान्तरेण वर्णसंख्यामाह।

**द्वाभ्यामेकर्द्धितो नाम षड्भिः संयुक्तपूर्वकैः।**
**आलिंगाद्यैस्त्रिपञ्चार्णं चतुरर्णं चतुर्द्विकम्॥३॥**

संयुक्तादि ६ पक्षों का द्वित्र्यादि (दो, चार, छः) संख्या से नाम का वर्ण कहना चाहिये। यदि आलिङ्गित प्रश्न होवे तो तीन पांच वर्ण का नाम कहना चाहिये अभिधूम प्रश्न होवे तो चार वर्ण का नाम कहना, दग्ध प्रश्न होवे तो दो चार वर्ण का नाम कहना चाहिए। इसी को स्पष्ट एवं सहज रुप से समझने के लिए सारणी (चक्र) में प्रतिपादित किया गया है॥३॥

३ श्लोकोक्तं चक्रम्।

| संयुक्त | असंयुक्त | अभिहित | अनभिहित | अभिघात | अनभिघात | आलिङ्गित | | अभिधूमित | दग्ध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ५ | ४ | २ | ४ |

तत्र प्रथमवर्णज्ञानमाह।

**संयुक्ताऽचतयैकवर्गजनितः प्रश्ने भवेत्तस्य यो।**
**नाम्नोऽर्णः प्रथमोऽथ कादिषु बुधैर्ज्ञेयोऽभिघातादिषु॥**
**प्रश्नजैः। संयुक्तादिगजैः शरा ५ ङ्ग ६ मुखजा ७ ष्टा ८ ब्ध्य ४ ग्नि ३ खैः**
**कुब्जान्धाद्यवशेषितं च सुधिया बोध्यं च पूर्वोक्तवत्॥४॥**

संयुक्त प्रश्न होवे तो प्रश्नकर्त्ता की विचारित वस्तु का किंवा चौरादिकों के नाम का प्रथम वर्ण अ च त य इन चतुर्वर्गों के बीच में किसी वर्ग का वर्ण समझना चाहिये,

और अभिघात प्रश्न होवे तो कवर्ग का वर्ण कहना, आलिङ्गित प्रश्न होवे तो च वर्ग का वर्ण कहना, अभिधूम्र प्रश्न होवे तो टवर्ग का वर्ण कहना, दग्धप्रश्न होवे तो तवर्ग का वर्ण कहना, अनभिहित प्रश्न होवे तो पवर्ग का वर्ण कहना, अभिहित प्रश्न होवे तो यवर्ग का वर्ण कहना, असंयुक्त प्रश्न हो तो शवर्ग का वर्ण कहना, और कुब्जान्धादिक लक्षण संज्ञाप्रकरण में बताये गये के आधार पर पण्डितों को कहना चाहिये है ॥४॥

**४/५ श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| संयुक्त | असंयुक्त | अभिहित | अनभिहित | अभिघात | आलिङ्गित | अभिधूम्र | दग्ध | पक्षाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ च त य | श | य | प | क | च | ट | त | वर्गाः |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | गुणकाः |

अथ पूर्वजातान् समस्तवर्णान् स्वरूपतश्चिकीर्षुस्तदर्थं गुणांकानाह।

**द्वि२ त्र्य ३ ब्धिय ४ ष्वं ५ ग ६ सप्ता ७ ष्ट ८ नन्दाः ९ स्युर्नामबन्धने।**

**संयुक्तादिगुणा एते ग्राह्या नो पूर्वकीर्तिताः ॥५॥**

नाम प्रबन्ध के प्रकार में असंयुक्तादि पक्षों का द्वित्र्यादि गुणका का ग्रहण करना, में प्रतिपादित गुणक का ग्रहण नहीं करना, संयुक्तप्रकरण में कहा गया है कि तदुक्तं संयुक्ते तद्विगुणमित्यादि ॥५॥

**पिंडं संयुतपूर्वचक्रजनितं निघ्नं गुणेनाष्टहृ।**
**वर्गः पिंडयुतं च लब्धमिषुहृद्वर्णो भवेच्चादिमः।**
**वेदाप्तं यशयोरथाप्तियुतपिंडं नागहृद्व्यर्णजो।**
**वर्गश्चैव पुनः पुनश्च रचयेन्नामर्णसंख्यावधिः ॥६॥**

संयुक्तादि चक्रजन्य पिण्ड को स्वगुणक से गुणा करना और उसमें आठ का भाग देना शेषाङ्क से अवर्गादि वर्ग समझना चाहिए, आठ का भाग देने से जो लब्धी होवे उसको पिण्ड में युक्त करना तथा उसमें पांच का भाग देना, शेषाङ्क से उस वर्ग का वर्ण समझ लेना चाहिये। और यवर्ग तथा शवर्ग में चार का भाग देने पर वर्ण प्राप्त होगा फिर उस लब्धि को पिण्ड में जोड कर उसमें आठ का भाग देना, शेषाङ्क से द्वितीय वर्ग का वर्ण समझ लेना चाहिए, इसी प्रकार नाम के वर्णसंख्या पर्यन्त पुनः पुनः करें। यथा

- पिण्डं ४१, अत्रानभिघाताभावादभिघातगुणेनानेन ६ गुणितं २४६ अष्ट ८ हृतं शेषं ६ पवर्गो जातः लब्धं ३० पिण्ड २४६ युतं २७६ पञ्च ५ भक्तं शेषं १ पवर्णो जातः। अथ प्रथमाक्षरकथनानन्तरं आप्त्या ५५ युतं पिण्डं २७६ जातं ३३१ नाग ८ हृतं शेषं ३ द्वितीयवर्गश्चवर्गः। लब्धं ४१ पिण्ड ३३१ युतं ३७२ पञ्चहृतं शेषं २ छकारो द्वितीयाक्षरः। लब्धं ७४ पिण्ड ३७२ युतं ४४६ अष्ट ८ हृतं शेष ६ पवर्गस्तृतीयः। लब्धं ५५ पिण्ड ४४६ युतं ५०१ पञ्च ५ हृतं शेषं १ पवर्गस्तृतीयः। लब्धं १०० पिण्ड ५०१ युतं ६०१ अष्ट ८ हृतं शेषं १ अवर्गश्चतुर्थः। लब्धं ७५ पिण्ड ६०१ युतं ६७६ पञ्चहृतं शेषं १ अकारश्चतुर्थवर्णः एवं जाता नामवर्णाः प १ छ २ प ३ अ ४ एवं सर्वत्र ॥६॥

तेषु मात्राज्ञानमाह।

**पिण्डे संयुक्तादिजाद्यर्णवर्गाङ्कघ्नेऽर्का १२ प्ते नामजाद्यर्णमात्रा।**
**लब्धेनाढ्यात् पिण्डतोऽर्का १२ वशेषे द्व्यर्णे मात्रा चैवमेवं पुनश्च ॥७॥**

संयुक्तादि चक्रजनित प्रथम वर्ण को वर्गाङ्क से गुणा करें और उसमें बारह १२ का भाग दें तथा एकादि शेष करके अकारादि मात्रा समझ लेना, फिर लब्ध को पिण्ड में युक्त करके बारह का भाग देना एकादि शेष करके अकारादिक मात्रा द्वितीय वर्ण को समझ लेना, इसी प्रकार वारंवार करना चाहिए। यथा- अत्रादिवर्णस्य पकारस्य वर्गांक ६ स्तेन पिण्डे ४१ गुणिते २४६ द्वादशभक्ते शेषं ६ नाम्नि जातो यः प्रथमो वर्णः पस्तस्य मात्रा ऊ लब्धेन २० युक्तात् पिण्डात् २६६ अर्कैरवशेषं २ द्वितीयवर्णः छकारस्य मात्रा आ लब्धेन २२ युक्तात्पिण्डात् २८८ द्वादशहृते शेषं १२ तृतीयवर्णपकारस्य मात्रा अः लब्धेन २४ युक्तात्पिण्डात् ३१२ चतुर्थो वर्णः अवर्गजस्तेन द्वितष्टान्मात्रा ज्ञेया। तदुक्तं वृद्धैः अवर्गे ह्रस्वदीर्घाख्ये मात्रा ज्ञेये मनीषिभिरिति द्वितष्टे शेषं १ ह्रस्वमात्रा जाता ॥७॥

**यावन्नामार्णसंख्या स्यात्तावत्कृत्वा पुनः पुनः।**
**नामार्णाचां क्रियां तद्वद्युक्तान् नाम वदेत्सुधीः ॥८॥**

जितने नामके वर्ण हों उतनी ही संख्या नामके वर्ण के मात्राके आनयन में क्रिया करनी चाहिए, सुधी पदग्रहण करने से देश काल का विचार करके पूर्वोत्पन्न वर्णों का योग करके नामको कहना चाहिये जिसे प्रदर्शित करते हैं। पूछा पः अ इस उदाहरण में तीसरे वर्ण में विसर्ग स्वर है इस लिए तीन अक्षर का नाम हुआ ऐसा रुद्रका मत है।

तदुक्तं वृद्धैः ('द्वित्र्यादिष्वेव वर्णेषु विसर्गो यदि दृश्यते। तदा तदन्तं नाम स्यादिति शंभुमतं स्मृतम्॥') इति॥८॥

अथ प्रकारान्तरेण चाह।

**द्व्यर्का: १२२ पञ्चेषुचन्द्रा १५५ गजरसशशिनो १६८ द्व्येकयुक् २१७ सिद्धपक्षाः २२४। पञ्चेभाक्षीणि २८५ शून्यं द्विरदकरमिताः २८० चन्द्रवेदाग्नितुल्याः ३४१। वर्गाङ्काश्चाथ हत्या १८ हिमकिरण गुणै ३१ र्द्व्यग्निभिं ३२ र्देवताभि ३२। र्द्विःशक्रै २८ स्तत्त्वतुल्यै २५ र्द्विरदकरमितैः २८ र्भूगुणै ३१ र्वृद्धितोर्णैः॥९॥**

अवर्गादि अष्टवर्गों का एकसौ बाईस की संख्या के क्रम से जान लेना चाहिए, उन वर्गों का वर्ण है जिसकी धृत्यादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धिसे पूर्त्ति करना चाहिए, इसको चक्र के माध्यम से स्पष्ट रुप से प्रतिपादित किया गया है।॥९॥

| अ<br>१२२ | आ<br>१४० | क<br>१५५ | च<br>१६८ | ट<br>२१७ | त<br>२२४ | प<br>२८० | य<br>२८० | श<br>३४१ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ<br>१५८ | ई<br>१७६ | ख<br>१८६ | छ<br>२०० | ठ<br>२५० | थ<br>२५२ | फ<br>३१० | र<br>३०८ | ष<br>३७२ |
| उ<br>१९४ | ऊ<br>२१२ | ग<br>२१७ | ज<br>.२३२ | ड<br>२८३ | द<br>२८० | ब<br>३३६ | ल<br>३३६ | स<br>४०३ |
| ए<br>२२० | ऐ<br>२४८ | घ<br>२४८ | झ<br>२६४ | ढ<br>३१६ | ध<br>३०८ | भ<br>३६० | व<br>३६४ | ह<br>४३४ |
| ओ<br>२६६ | औ<br>२८४ | ङ<br>२७९ | ञ<br>२९६ | ण<br>३४९ | न<br>३३६ | म<br>३८५ | अं<br>३०२ | अः<br>३२० |

**पिण्डं चेन्नीचवेला खदहतगुणितं गोद्वियुक्तं गजाप्तं।**
**प्राग्वद्वर्णा यदाद्या खरसगुणितङ्केषु युक्तं गजाप्तम्।**
**वर्गो लब्धाढ्यपिण्डं विशिखमितिहृतं तज्जवर्णौ यशौ चेत्।**
**वेदाप्तं मात्रिकाद्यं निखिलमपि बुधैः प्राग्वदत्रापि बोध्यम्॥१०॥**

यदि आधरीवेला में प्रश्न किया गया हो तो नवम श्लोक से उत्पन्न हुआ जो पिण्ड है उसको तीस से गुणा करें, फिर एकोनत्रिंशत् (उनतीस) २९ उसमें युक्त करें, उसमें आठ का भाग देना चाहिए, अवशिष्टाङ्क से अवर्गादिक वर्ग जान लेना, फिर लब्धको पिण्ड में युक्त करके उसमें पांच का भाग देना, शेषांक से उस वर्ग का वर्ण जान

लेना, इसी प्रकार वारंवार करना चाहिए। और यदि औत्तरी वेला में प्रश्न होवे तो पिण्ड को ६० से गुणा करना, फिर नवपञ्चाशत् (उनसठ) को युक्त करके उसमें आठका भाग देना शेषांक से अवर्गादिक वर्ग जानना, फिर लब्ध को पिण्ड में युक्त करके पांच का भाग देना, अवशिष्ट अंक से उस वर्ग का वर्ण जान लेना, इसी प्रकार वारंवार करना। यवर्ग श वर्ग का वर्ण चार के भाग से जान लेना, और मात्रा पूर्वोक्त प्रकार करके यहां भी जान लेना चाहिये। यथा - पिण्डं १७८५ अत्राधरीवेला तेन त्रिंशद्गुणितं ५३५५० गोद्वि २९ युक्तं ५३५७९ गजैराप्तं ६६९७ शेषं ३ चवर्गो जातः। प्रथमाक्षरस्य लब्धेन ६६९७ पिंण्डं ५३५७९ युतं ६०२७६ पंचहृतं १२०-५५ शेषं १ चकारः प्रथमो वर्णः लब्धेन १२०५५ पिण्डम् ६०२७६ युतं ७२३३१ अष्टहृतं ९०४१ शेषं द्वितीयाक्षरस्यापि चवर्गः लब्धेन ९०४१ पिंडं ७२३३१ युतं ८१३७२२२ पञ्चभक्तं १६२७४ शेषं २ छकारो जातः। एवमन्यत्रापि मात्रिकाद्यं तु प्राग्वत्। तत्र पिंडे १७८५ संयुक्तादि चक्रवर्गांकेन ६ गुणिते जातं १०७१० द्वादशहृते ८९२ शेषं ६ ऊ मात्रापिंडे १०७१० लब्धेन ८९२ युते ११६०२ द्वादशहृते ९६६ शेषं १० औमात्रायोगे चूछौ। इस प्रकार सभी जगह पंडितों को देश काल का विचार करके स्वबुद्ध्यनुसार नाम कहना चाहिये ॥१०॥

इति प्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां नामबन्धप्रकरणं चतुर्थम्।

**अथ मिश्रप्रकरणम्।**

तत्र प्रथमं चौरज्ञानं दशभिर्विवक्षुस्तत्र नष्टद्रव्यस्थितिमाह।

**संयुक्ते गृहमध्ये द्रव्यं स्यान्नो ह्यसंयुक्ते।**
**युक्तयुतालिङ्गाद्यैर्भित्तौ चाधोऽस्ति लूकास्थम् ॥१॥**

चोरप्रश्न में सर्वप्रथम नष्टद्रव्य के स्थान का निश्चय करते हैं। यदि संयुक्त प्रश्न होवे तो स्वगृह अपने ही घर में द्रव्य कहना, संयुक्तव्यतिरिक्त प्रश्न होवे तो स्वगृह से बाह्य (घर के बाहर) द्रव्य कहना, यदि आलिंगितस्वरयुक्त संयुक्त प्रश्न होवे तो भित्ति (दीवार) में द्रव्य की स्थिति कहना, और अभिधूम्र स्वरयुक्त संयुक्त प्रश्न होवे तो अधोभूमि (जमीन के अन्दर) में द्रव्य की स्थिति कहना, दग्धस्वरयुक्त संयुक्तप्रश्न होवे तो लूका में अर्थात् संदूक में द्रव्य की स्थिति कहनी चाहिये ॥१॥

पिण्डेन चाह।

**श्रेणिघ्नं वर्गपिंडं स्यान्मात्राङ्काढ्यं युगैर्हृतम्।**
**गृहमध्ये कुमध्ये चोर्ध्वदेशे तस्करागृहे ॥२॥**

वर्गपिंड को श्रेणीसंख्या से गुणा करें, फिर मात्रांकयुक्त करें, उसमें चार का भाग देना चाहिए, एक शेष रहे तो स्वगृह में नष्ट द्रव्य कहना, दो शेष रहे तो पृथ्वी (जमीन) में द्रव्य कहना, तीन शेष रहे तो ऊर्ध्वदेश (ऊँचे स्थान) में द्रव्य कहना, अर्थात् पर्वत के ऊपर, वा वृक्ष के ऊपर या गवाक्षादिकों में द्रव्य कहना, शून्य शेष होवे तो चौर के घर के समीप नष्टद्रव्य कहना चाहिये। यथा वर्गपिण्डं २५ श्रेणि ४ घ्नं १००मात्राङ्कै ९ र्युक्तं १०९ युग ४ भक्तं शेषं १ गृहमध्य एवं नष्टद्रव्यम्॥२॥

तल्लाभालाभज्ञानमाह।

**उत्तरोत्तरमुखोत्तरपूर्वे लाभ उक्तपरगे नहि लाभः।**
**सैकवृद्धियुतपूर्वभवाङ्कैः संयुतादिगजपक्षसमुत्थैः ॥३॥**

प्रश्नश्रेणी का प्रथमवर्ण उत्तरोत्तर होवे अथवा उत्तर होवे तो नष्ट वस्तु का लाभ कहना चाहिए, अधराधर वर्ण होवे अथवा अधरवर्ण होवे तो नष्ट द्रव्य का लाभ नहीं होता। अब पिंड द्वारा नष्ट द्रव्य का लाभालाभ कहते हैं, संयुक्त पूर्व जिस पक्ष का प्रश्न होवे उसी पक्ष के चक्र से पिंडोत्पादन करना, नष्टद्रव्य का लाभालाभ ज्ञान के विषय में पूर्वोक्त पिण्ड का ग्रहण नहीं करना चाहिए॥३॥

**३ श्लोकोक्तं संयुक्ताद्यष्टपक्षचक्रम्।**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ<br>४ | आ<br>५ | क<br>५ | च<br>६ | ट<br>७ | त<br>८ | प<br>९ | य<br>१० | श ११ |
| इ<br>६ | ई<br>७ | ख<br>६ | छ<br>७ | ठ<br>८ | थ<br>९ | फ<br>१० | र<br>११ | ष<br>१२ |
| उ<br>८ | ऊ<br>९ | ग<br>७ | ज<br>८ | ड<br>९ | द<br>१० | ब<br>११ | ल<br>१२ | स<br>१३ |
| ए<br>१० | ऐ<br>११ | घ<br>८ | झ<br>९ | ढ<br>१० | ध<br>११ | भ<br>१२ | व<br>१३ | ह<br>१४ |
| ओ<br>१२ | औ<br>१३ | ङ<br>९ | ञ<br>१० | ण<br>११ | न<br>१२ | म<br>१३ | अं<br>१४ | अः<br>१५ |

**असंयुक्तचक्रम्**

| अ<br>६ | आ<br>७ | क<br>७ | च<br>८ | ट<br>९ | त<br>१० | प<br>११ | य<br>१२ | श १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ<br>८ | ई<br>९ | ख<br>८ | छ<br>९ | ठ<br>१० | थ<br>११ | फ<br>१२ | र<br>१३ | ष<br>१४ |
| उ<br>१० | ऊ<br>११ | ग<br>९ | ज<br>१० | ड<br>११ | द<br>१२ | ब<br>१३ | ल<br>१४ | स<br>१५ |
| ए<br>११ | ऐ<br>१२ | घ<br>१० | झ<br>११ | ढ<br>१२ | ध<br>१३ | भ<br>१४ | व<br>१५ | ह<br>१६ |
| ओ<br>१४ | औ<br>१५ | ङ<br>११ | ञ<br>१२ | ण<br>१३ | न<br>१४ | म<br>१५ | अं<br>१६ | अः<br>१७ |

**अभिहितपक्षचक्रम्।**

| अ<br>४ | ए<br>५ | क<br>६ | च<br>७ | ट<br>८ | त<br>९ | प<br>१० | य<br>११ | श १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ<br>५ | ऐ<br>६ | ख<br>७ | छ<br>८ | ठ<br>९ | थ<br>१० | फ<br>११ | र<br>१२ | ष<br>१३ |
| इ<br>६ | आ<br>७ | ग<br>८ | ज<br>९ | ड<br>१० | द<br>११ | ब<br>१२ | ल<br>१३ | स<br>१४ |
| ई<br>७ | औ<br>८ | घ<br>९ | झ<br>१० | ढ<br>११ | ध<br>१२ | भ<br>१३ | व<br>१४ | ह<br>१५ |
| उ<br>८ | अं<br>९ | ङ<br>१० | ञ<br>११ | ण<br>१२ | न<br>१३ | म<br>१४ | ऊ<br>९ | अः<br>१० |

**अनभिहितपक्षचक्रम्**

| अ<br>५ | ए<br>६ | क<br>७ | च<br>८ | ट<br>९ | त<br>१० | प<br>११ | य<br>१२ | श १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ<br>६ | ऐ<br>७ | ख<br>८ | छ<br>९ | ठ<br>१० | थ<br>११ | फ<br>१२ | र<br>१३ | ष<br>१४ |
| इ<br>७ | ओ<br>८ | ग<br>९ | ज<br>१० | ड<br>११ | द<br>१२ | ब<br>१३ | ल<br>१४ | स<br>१५ |
| ई<br>८ | औ<br>९ | घ<br>१० | झ<br>११ | ढ<br>१२ | ध<br>१३ | भ<br>१४ | व<br>१५ | ह<br>१६ |
| उ<br>९ | अं<br>१० | ङ<br>११ | ञ<br>१२ | ण<br>१३ | न<br>१४ | म<br>१५ | ऊ<br>१० | अः<br>११ |

## अभिघातानभिघातयोश्चक्रम्

| अ ६ | ए ७ | क ८ | च ९ | ट १० | त ११ | प १२ | य १३ | श १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ ७ | ऐ ८ | ख ९ | छ १० | ठ ११ | थ १२ | फ १३ | र १४ | ष १५ |
| इ ८ | ओ ९ | ग १० | ज ११ | ड १२ | द १३ | ब १४ | ल १५ | स १६ |
| ई ९ | औ १० | घ ११ | झ १२ | ढ १३ | ध १४ | भ १५ | व १६ | ह १७ |
| उ १० | अं ११ | ङ १२ | ञ १३ | ण १४ | न १५ | म १६ | ऊ ११ | अः १२ |

## आलिङ्गितपक्षचक्रम्

| अ ७ | आ ८ | क ८ | च ९ | ट १० | त ११ | प १२ | य १३ | श १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ ९ | ई १० | ख ९ | छ १० | ठ ११ | थ १२ | फ १३ | र १४ | ष १५ |
| उ ११ | ऊ १२ | ग १० | ज ११ | ड १२ | द १३ | ब १४ | ल १५ | स १६ |
| ए १३ | ऐ १४ | घ ११ | झ १२ | ढ १३ | ध १४ | भ १५ | व १६ | ह १७ |
| ओ १५ | औ १६ | ङ १२ | ञ १३ | ण १४ | न १५ | म १६ | अं १७ | अः १८ |

## अभिधूम्रपक्षचक्रम्।

| अ ८ | आ ९ | क ९ | च १० | ट ११ | त १२ | प १३ | य १४ | श १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ १० | ई ११ | ख १० | छ ११ | ठ १२ | थ १३ | फ १४ | र १५ | ष १६ |
| उ १२ | ऊ १३ | ग ११ | ज १२ | ड १३ | द १४ | ब १५ | ल १६ | स १७ |
| ए १४ | ऐ १५ | घ १२ | झ १३ | ढ १४ | ध १५ | भ १६ | व १७ | ह १८ |
| ओ १६ | औ १७ | ङ १३ | ञ १४ | ण १५ | न १६ | म १७ | अं १८ | अः १९ |

दग्धपक्षचक्रम्।

| अ ९ | आ १० | क १० | च ११ | ट १२ | त १३ | प १४ | य १५ | श १६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ ११ | ई १२ | ख ११ | छ १२ | ठ १३ | थ १४ | फ १५ | र १६ | ष १७ |
| उ १३ | ऊ १४ | ग १२ | ज १३ | ड १४ | द १५ | ब १६ | ल १७ | स १८ |
| ए १५ | ऐ १६ | घ १३ | झ १४ | ढ १५ | ध १६ | भ १७ | व १८ | ह १९ |
| ओ १७ | औ १८ | ङ १४ | ञ १५ | ण १६ | न १७ | म १८ | अं १९ | अः २० |

**युक्तादिगजसंख्याघ्नी संख्यायाः स्वरवर्णजा।**
**युक्ता च पूर्वपिण्डेन पिंडं तस्करहृद्धने ॥४॥**

अन्य प्रकार से पिंड आनयन की प्रक्रिया का प्रतिपादन करते हैं - प्रश्नश्रेणी की स्वरवर्णसंख्या को संयुक्तादि पक्षसंख्या से गुणा करें, उस गुणन फल को पूर्व पिंड में युक्त करें तो तस्करहृत (चोर द्वारा चुराये गये) धन का लाभालाभ ज्ञान में वही पिंड हो जायगा। यथा- वर्णसंख्या ४ मात्रासंख्या ४ संयुक्तादिप्रश्नसंख्यया ५ गुणिता २०/२० युक्ता ४० पूर्वपिंडे ४१ योजिता ८१ तच्चक्रजनितमेव पिंडं भवति ॥४॥

**पिण्डयुक्तगुणनिघ्नमजङ्कैः संयुतं नगहृतं विषमाङ्कैः।**
**नष्टलाभ उदितो न समाङ्कैराद्विकैर्मधुमुखा ऋतवोऽर्कैः ॥५॥**

अजङ्क नाम वर्णपिण्ड को स्वगुणक से गुणा करें, और उस गुणनफल में मात्रांक युक्त करें, उसमें सात का भाग देना, शेष यदि विषमांक होवे तो नष्ट द्रव्य का लाभ कहना, समांक होवे तो लाभ नहीं होगा ऐसा कहना। लाभ के समय का निश्चय करते हैं। अकारादि द्वादश मात्रा के द्वारा वसन्तादि छ ऋतु जानना, दो दो मात्रा की एक एक ऋतु होती है जिसे चक्र में स्पष्ट रुप से समझने के लिए स्पष्ट कर दिया है, देख लेना। प्रश्नश्रेणी का प्रथम वर्णजन्य मात्रा करके ऋतु कहना, नष्ट द्रव्य का तत्तदृतु में लाभ कहना, इस उदाहरण में वसन्त ऋतु में लाभ जानना ॥५॥

**५ श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| अ आ | इ ई | उ ऊ | ए ऐ | ओ औ | अं अः |
|---|---|---|---|---|---|
| वसन्त | ग्रीष्म | वर्षा | शरत् | हेमन्त | शिशिर |
| चैत्र वैशाख | ज्येष्ठ आषाढ | श्रावण भाद्रपद | आश्विन कार्तिक | मार्गशीर्ष पौष | माघ फाल्गुन |

तत्र मासपक्षतिथिज्ञानमाह।

**उत्तरवर्णैः काद्यैः शुक्ले तिथ्योऽपरैः खाद्यैः।**
**कृष्णे दग्धाज्वर्णैः पिण्डे द्व्याप्ते तयोरन्तौ।**
**ह्रस्वस्वरसंयोगे पूर्वो मासः परो दीर्घैः ॥६॥**

अकारादि उत्तरवर्णो की शुक्लप्रतिपदादि चौदह तिथियाँ कही गई हैं, खकारादि अधरवर्णो की कृष्णप्रतिपदादि चौदह तिथि कही गई हैं, यदि दग्ध स्वरवर्ण होवे तो पिण्ड में दो का भाग देना, एक रहे ते शुक्लपौर्णमासी कहना, ० शेष रहे तो कृष्ण अमावस्या कहना चाहिये। श्रेणी के आद्यवर्ण में ह्रस्व मात्रा होवे तो पूर्व मास कहना, दीर्घमात्रा होवे तो द्वितीय मास कहना। यथा-अत्रोदाहरणे आमात्रा तेन वसन्त ऋतुः दीर्घस्वरत्वाद् द्वितीयो वैशाखः दग्धाक्षरत्वात्पिण्डे ४१ गुणक १७ घ्ने ६९७ द्वि २ हृते शेषं १ पौर्णमासी जाता एवं सर्वत्र ॥६॥

**६ श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | तिथयः। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क | ग | च | ज | ट | ड | त | द | प | ब | य | ल | श | स | शुक्लपक्ष उत्तर वर्ण |
| ख | घ | छ | झ | ठ | ढ | थ | ध | फ | भ | र | व | ष | ह | कृष्णपक्ष अधरवर्ण |

कस्यां दिशि तद्द्रव्यं तदाह :-

**आलिङ्गितानेहसि वर्णपिण्डे श्रेणीहते नागहृतेऽवशेषात्।**
**पूर्वादिदिक्चेदभिधूमितं स्यादर्कघ्नमात्राङ्कयुगर्णपिंडे ॥७॥**
**प्रश्नाक्षराढ्ये गजशेषिते स्यात्पूर्वादिदिक्चेदिह दग्धवेला।**
**स्यात्केवले पिंड इभाप्तशेषे पूर्वादिदिक् नष्टधने च चौरे ॥८॥**

नष्ट द्रव्य की दिशा के ज्ञान का प्रतिपादन करते हैं, यदि आलिङ्गित वेला में प्रश्न होवे तो पिण्ड को प्रश्नवर्णसंख्या से गुणा करें, उसमें आठ का भाग देना, एकादि

शेष करके पूर्वादि दिशा जान लेना, यदि अभिधूम्र वेला में प्रश्न होवे तो द्वादश गुणित मात्रापिण्ड को वर्णपिण्ड में युक्त करना, फिर श्रेणीसंख्या युक्त करके उसमें आठ का भाग देना, शेषांक से पूर्वादि दिशा जान लेना, यदि दग्ध वेला में प्रश्न होवे तो केवल पिण्ड में ही आठ का भाग देना शेषांक से नष्टद्रव्य चौर की दिशा जान लेना। यथा - वर्णपिंडे ३२ श्रेणी ४ हते १२८ नाग ८ हृते शेषं ८ ईशदिक् जाता। अभिधूमितकालः स्यात्तदाऽर्क १२ घ्नमात्रांकै ९ र्जातै १०८ र्युक्तेऽर्ण ३२ पिण्डे १४० श्रेणी ४ युते १४४ नागहृते शेषं ८ ईश दिक्। दग्धवेला स्यात्तदा केवले पिण्डे ४१ इभा ८ प्त शेषे १ पूर्वदिक् जाता ॥७॥८॥

अथ चौरसंख्यामाह।

**संयुक्ताद्यष्टभिः प्रश्नैश्चौरसंख्यां वदेद्बुधः।**
**सांगाब्ध्य ४६ र्णाङ्काद्यजङ्काहति नागहृता तथा॥९॥**

संयुक्तादि आठपक्ष करके पण्डितों को चोर की संख्या का कथन कहना चाहिये। यथा - संयुक्त प्रश्न होवे तो एक चोर कहना, असंयुक्त प्रश्न होवे तो दो चोर कहना, इसी प्रकार से समझ लेना, वर्णपिंड में षटचत्वारिंशत् (छियालीस) ४६ युक्त करें, फिर श्रेणी के प्रथम वर्ण में जो स्वर होवे उसकी संख्या से गुणा करें उसमें आठ का भाग दे शेषांक से चोर संख्या कहना। यथा साङ्गाब्धय ४६ श्च ते वर्णाङ्का ३२ श्च ७८ तेषामाद्येज् आकारस्तस्य अङ्का द्वौ २ अनयोर्हति १५६ नाग ८ हृता ४ जाताश्चौरसंख्या चत्वारश्चौराः॥९॥

**९ श्लोकोक्तं चक्रम्।**

| संयुक्त | असंयुक्त | अभिहित | अनभिहित | अभिघात | आलिङ्गित | अभिधूम्र | दग्ध | पक्षाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | चौराः |

मुख्यचौरस्य नामज्ञानमाह।

**उत्तरार्णाऽधराज्योगेऽसमांकव्यत्ययेऽन्यथा।**
**समांकं स्यादुत्तरयोः परयोर्विषमार्णयुक्॥**
**पिंडं सप्तहतं वा स्यात्संख्या तन्नाम वर्णजा॥१०॥**

यदि प्रश्नश्रेणी का प्रथम वर्ण उत्तर होवे और मात्रा अधर होवे तो विषमाक्षर नाम कहना, अधर वर्ण और उत्तर स्वर होवे तो समाक्षर नाम कहना, स्वरवर्ण दोनों

उत्तर होवे तो समाक्षर नाम कहना। स्वरवर्ण दोनों अधर होवे तो विषमाक्षर नाम कहना चाहिए। पिण्डद्वार का वर्णन करते हैं - पिंड ६९७ सप्त ७ हृतं शेषं ४ जाता नामवर्णसंख्या। इति ॥१०॥

प्रथमाक्षरज्ञानमाह।

**चोरमितिघ्ना श्रेणीपिण्डे नाड्याऽष्टभि ८ स्तष्टा।**
**क्र १ ष्टा ८ गा ७ ङ्गे ६ ष्व ५ त्र्य ३ ब्ध्य४ श्वि २ मितैः शेषितैर्ज्ञेयः।**
**आदिष्वादिमवर्णो वर्गेषु प्रौढचौरस्य ॥११॥**

चोरसंख्या गुणित श्रेणी को पिंड में युक्त करें उसमें आठ का भाग देना शेषांक से अवर्गादि वर्गो का वर्ण मुख्य चौर के नाम का प्रथम वर्ण होगा, ऐसा समझना चाहिये। यथा- श्रेणि ४ चौरप्रमाणेन ४ गुणिता १६ पिंडेन ४१ युक्ता ५७ अष्ट ८ तष्टा १ प्रौढचौरस्य एकशेषे सति अवर्गे नाम्न आदिवर्णः ॥११॥

इति केरलीप्रश्नसुन्दरीटीकायां चौरप्रश्नम्।

अथ गमनप्रश्नमाह।

**अधराजाद्यर्णयुतौ शीघ्रं गमनं न चोत्तराज्युक्ते।**
**पिण्डाष्टहतिः शैलैस्तष्टायानं समांकैः स्यात् ॥१२॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के प्रथम वर्ण में अधरमात्रा होवे तो शीघ्र गमन कहना, उत्तर मात्रा होवे तो गमन नहीं कहना, पिण्ड को आठ से गुणा करें, उसमें सात का भाग देना, शेष समाङ्क होवे तो गमन कहना, विषमांक होवे तो गमन नहीं कहना चाहिये। यथा पिण्डस्य ४१ अष्टभि ९ र्हतिः ३२८ शैलै ७ स्तष्टे ६ समांकैर्यानं स्यात् ॥१२॥

अथागमनप्रश्नमाह।

**वर्णाङ्का द्विगुणास्त्रिघ्ना मात्रांकाढ्या द्विभाजिताः।**
**एकेनागमनं शीघ्रं शून्येन स्याद्विलम्बतः ॥१३॥**

वर्णपिण्ड को द्विगुणित (दुगना) करें, उसमें त्रिगुणित मात्रापिण्ड को युक्त करके दो से भाग देना एक बचे तो शीघ्र आगमन कहना, शून्य शेष होवे तो विलंब से आगमन कहना। यथा- वर्णाङ्काः ३२ द्विगुणाः ६४ त्रिघ्ना मात्रांक २७ युता ९१ द्विभक्ताः शेषं १ शीघ्रमागमनम् ॥१३॥

अथ रोगिप्रश्नमाह।

**स्याज्जीवनं व्याधिमृतिक्रमेण चालिङ्गिताद्यैरधरादिराशिः।**
**कृत्वा धराद्यर्णयुतो युतिःस्यात्परे धराङ्कै रहितोऽन्यराशिः।**
**स्वराङ्कयुक्तो हरिवर्त्मभक्तः सौख्यं रुजा वा मरणं क्रमेण ॥१४॥**

प्रश्नश्रेणी के आद्यर्ण में आलिङ्गित मात्रा होवे तो रोगी को साध्य कहना, अभिधूम्र मात्रा होवे तो कष्टसाध्य कहना, दग्ध मात्रा होवे तो मृत्यु कहना। इसका वर्णन पिण्डद्वारा कहते हैं। उत्तराधरवर्णजन्य पिण्ड को पृथक्-पृथक् स्थापित करें, श्रेणी के आद्यर्ण में अधर वर्ण होवे तो दोनों का योग करें, श्रेणी केआद्यर्ण में क उत्तर वर्ण होवे तो अधर पिण्ड को उत्तर पिण्ड में हीन करें, जो उत्तर पिण्ड न्यून होवे तो योग करें, फिर स्वरांक युक्त करके उसमें तीन का भाग दे एकादि शेष करके १ साध्य २ कष्टसाध्य ३ मृत्यु कहना चाहिये। यथा- अत्र उत्तराद्यर्णयुते सति अधरांकैः ९ अन्यराशिः २३ रहितः १४ स्वरांकै ९ र्युक्ते २३ हरिवर्त्मना ३ भक्तः शेषै २ रुजा नाम कष्टसाध्य इति ॥१४॥

अथ रोगज्ञानमाह।

**वर्गाङ्काः श्रेणिघ्ना वर्णाङ्का मात्रिकाङ्कहताः।**
**युक्ता युगतष्टा स्याद्वातः पित्तं कफो दोषः ॥१५॥**

प्रश्नश्रेणी के वर्गांक को श्रेणीसंख्या से गुणा करें, और वर्णपिण्ड के मात्रापिण्ड से गुणा करें, फिर दोनों का योग करके चार का भाग दें। यदि शेष एक रहे तो वातरोग, दो शेष बचे तो पित्तरोग, तीन रहे तो कफ रोग, चार शेष होवे तो भूतादि दोष कहना चाहिये। यथा - वर्गांकाः २५ श्रेणी ४ गुणिता १०० वर्णांका ३२ मात्रिकांकै ९ र्गुणिता २२८ युक्ता ३८८ युगैस्तष्टा ४ भूतादिदोषोऽस्ति ॥१५॥

प्रकारान्तरेण साध्यादीनाह।

**श्रेणीहलाचां गणना कुयुग्द्विघ्नी त्रिभाजिताः।**
**जीवनं व्याधिबाहुल्यं मरणंशेषितैः क्रमात् ॥१६॥**

श्रेणी की वर्णमात्रासंख्या को सैक करके दो से गुणा करें फिर तीन का भाग दें, एक शेष होवे तो रोगी का जीवन कहना, दो शेष रहे तो बहुत अधिक व्याधि कहना, तीन शेष होवे तो मरण कहना। यथा - श्रेण्यां हलाचां संख्यां ८ कु १ युक् ९ विघ्ना १८ त्रि ३ भक्ताशेषं ३ मरणं दृष्टमिति ॥१६॥

अथगर्भज्ञानमाह।

**मात्राङ्कघ्नं वर्णपिण्डं महीध्रैस्तष्टं शेषैर्नास्ति गर्भः समाङ्कैः।**
**आलिङ्गाद्यैः पुत्रयुक् कन्यकाढ्यः क्लीबाढ्यः स्यात्पञ्चमैर्गर्भहानिः ॥१७॥**

मात्रा पिण्ड से वर्णपिण्ड को गुणा करें, फिर ७ का भाग दे यदि विषम शेष होवे तो गर्भ कहना, सम शेष होवे तो गर्भ नहीं कहना, प्रश्नश्रेणी केआद्यर्ण में आलिङ्गितस्वर होवे तो पुत्र कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो कन्या कहना, दग्धस्वर होवे तो नपुंसक कहना, श्रेणी का प्रथमवर्ण मृत्युसंज्ञक होवे तो गर्भपात कहना चाहिये। यथा- वर्णपिण्डं ३२ मात्रांकै ९ र्गुणितं२८८ महीध्रै ७ स्तष्टं शेषं १विषमांकैर्गर्भोऽस्तीति ॥१७॥

**सूक्ष्मात्पिण्डे स्वेष्टवारर्क्षतिथ्याढ्यं सप्ताप्तं कन्यकायुग्मशेषे।**
**द्व्यंकद्व्याप्तं मासघस्रौ भवेतां गोसूर्यान्तर्जन्मनो मासघस्रौ ॥१८॥**

सूक्ष्मचक्रजन्य पिण्ड को स्वगुणक से गुणा करें, फिर गुणनफल में प्रश्न वार तिथि नक्षत्रयुक्त करें, सात का भाग दे यदि विषम शेष होवे तो पुत्र कहना चाहिए, सम शेष होवे तो कन्या कहना चाहिए। गुणकगुणितपिण्ड में दो सौ बानवे २९२ का भाग देना, शेषांक में ३० का भाग देना, लब्ध मासशेष दिन होते हैं, मास दिवसों का नवमास द्वादश दिनों से अन्तर करे, जो शेष होवे उतने मास दिवस के बाद गर्भमोक्ष कहना चाहिये। यथा- सूक्ष्मचक्रात्पिण्डं ६५ सप्तदश १७ गुणितं ११०५ स्वेष्टवार ६ नक्षत्र ८ शुक्लादि तिथिभि १६ र्युक्तं ११३५ सप्तभि७ र्भक्तं शेषं १ विषमे शेषे सति पुत्रगर्भः। तत्पिण्डं ११३५ द्व्यंकद्व्याप्तं २९२ शेषम् २५९ त्रिंशद्भक्तं लब्धं ८ मासाः शेषं १९ दिनानि मासघस्रौ ८/१९ गोसूर्याणां मासघस्रणां ९/१२ मध्यगतौजातौ ०/२३ प्रश्नसमयात् त्रयोविंशति २३दिनोत्तरं पुत्र जन्म अष्टमास ८ एकोनविंशतिदिनानि गर्भो वर्त्तते इति ॥१८॥

अथ रतिप्रश्नमाह।

**परस्परघ्नोत्तरनीचपिण्डे मात्रांकनिघ्ने नगभक्तशेषे।**
**समे रतिर्नो विषमे रतिः स्यादालिङ्गिताद्यैः सुखमध्यदुःखाः ॥१९॥**

उत्तरार्धवर्णपिण्ड को परस्पर गुणा करें, फिर उसे मात्रांक से गुणा करें सातका भाग दे यदि सम शेष होवे तो रति कहना चाहिए विषम शेष हो तो रति नहीं कहना चाहिये। प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्ण में आलिङ्गित स्वर होवे तो सुखपूर्वक रति कहनी चाहिए, अभिधूम्र स्यर होवे तो मध्यम रति कहनी चाहिए, दग्धस्वर होवे तो दुःखसे रति

कहना चाहिए। यथा-उत्तराधरपिण्डे २३/९ परस्परगुणिते २०७ मात्रांकै ९ गुंणिते १८६३ नग ७भक्तं शेषं १ विषमें रतिर्न ॥१९॥

अथ भोजनप्रश्नमाह।

**आलिंगाद्यैः क्रमात्प्रश्ने स्वेष्टं स्वल्पाशनं क्षुधा।**
**पिंडं च केवलं यत्तद्रामाप्तं पूर्ववत्तथा ॥२०॥**

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्ण में आलिङ्गित स्वर होवे तो इच्छापूर्वक भोजन कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो स्वल्प भोजन कहना, दग्धस्वर होवे तो न्यून भोजन कहना, केवल पिण्ड में ३ का भाग देना एकादि शेष करके पूर्वोक्त क्रम से फल समझ लेना चाहिए। यथा-पिण्डं केवलं ४१ रामै ३ र्भक्तं शेषं २ स्वल्पाशनं ज्ञेयमिति ॥२०॥

**आलिंगिताद्येषु तदुत्थपिण्डमाद्यर्णपिंडेन हतं रसाप्तम्।**
**शेषैःक्रमात्तीक्ष्णकटू कषायोऽम्लक्षारमाधुर्यरसाभवेयुः ॥२१॥**

आलिङ्गितादिजन्य पिण्ड को श्रेणीके प्रथम वर्णके पिण्ड से गुणा करें, फिर उसमें ६ का भाग देना, एक शेष होवे तो तीक्ष्णरस, दो शेष होवे तो कटु (कड़वा) तीन शेष रहे तो कषाय, चार रहे तो अम्ल, पांच शेष होवे तो क्षार, शून्य शेष होवे तो माधुर्य (मीठा) रस क्रम से जान लेना चाहिए। यथा-अत्राभिधूमित पिण्डं ४१ तन्मितमेव जातं आद्यर्णपिण्डेन १० गुणितं ४१० रसै ६ र्भक्तं शेषं २ कटुकरसो जातः ॥२१॥

तथान्यमाह।

**द्वादशमात्रासु तथा द्वाभ्यां द्वाभ्यां क्रमात्ते स्युः।**
**उत्तरपूर्वैर्वर्णैर्हास्याऽहास्येति दुःखाढ्यम् ॥२२॥**

अकारादि द्वादश मात्राका दो दो स्वर करके तीक्ष्णादि ६ रस क्रम से जान लेना, प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्णमें उत्तरवर्ण होवे तो हास्ययुक्त भोजन कहना, अधरवर्ण होवे तो अहास्य दुःखयुक्त भोजन कहना चाहिए, इसे स्पष्ट रुप से समझने के लिए चक्र में देख लेना चाहिए ॥२२॥

२२ श्लोकोक्तं चक्रम्।

| अ आ | इ ई | उ ऊ | ए ऐ | ओ औ | अं अः |
|---|---|---|---|---|---|
| तीक्ष्ण | कटु | कषाय | अम्ल | क्षार | मधुर |

अथ छत्रभङ्गमाह।

**आलिंगितोत्तरोत्तरयुक्तारिहतेषु नो भंगः।**
**छत्रस्याथ परेषु प्रोक्तो भंगो न सन्देहः ॥२३॥**

यदि प्रश्नश्रेणी का प्रथमवर्ण आलिंगित स्वरयुक्त उत्तरोत्तर होवे तो छत्रभङ्ग नहीं कहना चाहिये, और अधर दग्धवर्ण होवे तो निःसन्देह छत्रभङ्गः कहना चाहिए॥२३॥

**वर्गांकान्वर्णघ्नान् वर्णाङ्कान्मात्रिकाङ्काहतान्।**
**संयोज्य सप्ततष्टे विषमे नो छत्रभंगः स्यात्॥२४॥**

वर्गांक को श्रेणी की वर्णसंख्यासे गुणा करें और वर्णांक को मात्रांक से करें, फिर दोनों के योग में सात का भाग देना, विषम शेष गुणा होवे तो छत्रभंग नहीं कहना, सम शेष होवे तो छत्रभङ्ग जरूर कहना। यथा-वर्गांकान् २५ वर्णैं ४ गुंणितान् १०० वर्णांकान् ३२ मात्रिकांकै ९ गुंणितान् २८८ संयोज्याः ३८८ सप्ततष्टे विषमे शेषे सति न छत्रभङ्गः स्यात्॥२४॥

अथ देशोपद्रवज्ञानमाह।

**क्व १ ग्नी ३ न्द्व १ भ्र० कु १ भू १ ख० भू १ परिमितैः पिण्डं समुद्रैर्हृतं देशोपद्रवता दिशोऽर्णजनिताङ्कघ्नाश्च वर्गाक्षराः। आलिङ्गादिकमात्रिकाङ्कसहिताः सप्तावशेषे फलं। नाशान्तं ह्यतिवृष्ट्यवृष्टिशलभा मूषा निजान्या चमूः॥२५॥**

अवर्गादि अष्ट वर्गो का क्वग्नीन्द्वादि आठ संख्या क्रम से जान लेना तदुत्पन्न पिण्ड में चार का भाग देना, एकादि शेष करके पूर्वादि दिशा में उपद्रव जानना चाहिये। इसी को पिण्ड द्वारा कहते हैं, वर्गांक को वर्णपिण्डसे गुणा करें, फिर आलिङ्गादिचक्रजन्य मात्रांक युक्त करें, उसमें सात का भाग देना एकादि शेष करके क्रम से फल जान लेना। अतिवृष्टिः १, अवृष्टिः २, शलभा ३, मूषा ४, निजाचमू ५, अन्याचमूः६। शून्य शेष होवे तो नाश कहना चाहिए। यथा-क्वादिभिरष्टभिरष्टवर्गकैर्यत्पिण्डं ८ अभिघातगुणेन १७ गुणितं १३६ समुद्रे ४ र्भक्तं शेषं ४ देशेषु उपद्रवो जायते यासु तो दिशः अत्रोत्तरस्यां देशोपद्रव इति वर्गांका २५ अर्णजनितैरंकै ३२ गुंणिता ८०० आलिङ्गादिभवैर्मात्रिकांकैः १३ सहिता ८१३ सप्तावशेषे सति १ अत्रातिवृष्टिः॥२५॥

२५ श्लोकोक्तं चक्रम्।

| १ | ३ | १ | ० | १ | १ | ० | १ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ आ<br>इ ई<br>उ ऊ<br>ए ऐ ओ<br>औ अं अः | क<br>ख<br>ग<br>घ<br>ङ | च<br>छ<br>ज<br>झ<br>ञ | ट<br>ठ<br>ड<br>ढ<br>ण | त<br>थ<br>द<br>ध<br>न | प<br>फ<br>ब<br>भ<br>म | य<br>र<br>ल<br>व | श<br>ष<br>स<br>ह |

*अथ दुर्गभङ्गप्रश्नमाह।*

**संयुक्तोत्तरवर्णैरभिधूम्रैर्नैव भङ्गः स्यात्।**
**अधरायुक्तैर्वर्णैरालिङ्गैः खण्डपातोऽपि॥**
**शेषैर्घोरे युद्धे भंगो दुर्गस्य निर्दिष्टः॥२६॥**

यदि प्रश्नश्रेणी का प्रथम वर्ण उत्तर अभिधूमित स्वरयुक्त होवे तो दुर्गभंग नहीं कहना, अधरवर्ण आलिङ्गित स्वरयुक्त होवे तो खंडपात अर्थात् दुर्ग का किञ्चित् भंग कह देना, और शेष स्वरवर्णो को करके भीषण युद्ध के साथ दुर्ग का भंग कहना चाहिए॥२६॥

**श्रेणी वा मात्रांकाः शिखरघ्नाः संयुता नगैस्तष्टाः।**
**समशेषे भंगः स्याद्विषमे नो दुर्गसंभंगः॥२७॥**

प्रश्नश्रेणी की संख्या को और मात्रापिण्ड को दुर्ग की शिखर संख्या से गुणा करें, दोनों का योग करके ७ का भाग देना, विषम शेष होवे तो दुर्ग भंग नहीं कहना, सम शेष होवे तो दुर्ग भंग कहना चाहिये। यथा श्रेणी ४ अथवा मात्रांकाः ९ कल्पितैः दुर्गशिखरैः १०० गुंणिता ४००। ९०० संयुक्ता १३०० नगै ७ स्तष्टा ५ विषमशेषे सति नो दुर्गसंभंग इति॥ २७॥

तत्र दिग्ज्ञानमाह।

**पिण्डे शिखरैर्निघ्ने नागहृते शेषितैः प्राच्याः।**
**शिखराः प्रयान्ति भंगं वा तच्छिखरोत्थसंख्याप्ते॥२८॥**

निज गुणकगुणित पिण्डको शिखरसंख्या से गुणा करें, फिर ८ का भाग देना, एकादि शेष करके पूर्वादि दिशा में भंग होना जान लेना। अथवा पिण्ड में शिखरसंख्या का भाग देना, जो शेष पूर्वादि दिशा में जहां समाप्त होवे उसी शिखर का भंग कहना चाहिए। यथा-पिण्डे ४१ गुणक १७ गुणिते ६९७ शिखरै १०० गुंणिते ६९७०० नागै ८ र्भक्ते शेषं ४ अत्र नैऋत्यकोणस्थानां शिखराणां भंगः । अथवा पक्षान्तरेण तस्मिन् पिण्डे ६९७ तस्मिन् दुर्गे ये शिखरास्तेभ्य उत्था जाता या संख्या १०० तया भक्ते सति शेषितैः ९७ अङ्कैः पूर्वदिशातो यत्र संख्यासमाप्तिः स एव शिखरो भंगमायातीति॥२८॥

कथं भङ्गो भविष्यति तज्ज्ञानमाह।

**खण्डसंख्या स्वराङ्काढ्यास्त्रितष्टा रूपपूर्वकैः।**
**युद्धेन चातिभयतः सुरङ्गात्खण्डिरीरिता॥२९॥**

खण्डसंख्याको मात्रापिण्ड में युक्त करें, फिर उसमें तीन का भाग दें एक शेष होवे तो युद्ध से खण्ड कहना, दो शेष होवे तो अतिभय के कारण खण्ड कहना, शून्य शेष होवे तो सुरंग से खण्ड कहना चाहिए। यथा-खण्डसंख्याङ्काः ९७ स्वराङ्कैः ९ र्युता १०६ त्रितष्टा १ युद्धेन खण्डो भवतीति ॥२९॥

अथ सुभिक्षादिज्ञानमाह।

**सा लिंगाजुत्तरगे सुभिक्षमधराभिधूमिके मध्यम्।**
**शेषे दुर्भिक्षं स्यात्प्रश्नाद्यर्णस्वराभ्यां च ॥३०॥**

प्रश्नश्रेणी का प्रथम वर्ण उत्तर आलिङ्गित स्वरयुक्त होवे तो सुभिक्ष कहना, अधर वर्ण अभिधूम्र स्वरयुक्त होवे तो मध्यम जानना, दग्ध वर्ण दग्धस्वरयुक्त होवे तो दुर्भिक्ष कहना, प्रश्नश्रेणी का प्रथमवर्ण और मात्रा दोनों से मिलाकर कहना चाहिए ॥३०॥

पिंडेन चाह।

**वर्गजनसंख्यागुणितौ वर्णाजङ्कौ युतौ त्रिभिस्तष्टौ।**
**एकादिशेषतः स्यात् सुभिक्षसमते च दुर्भिक्षम् ॥३१॥**

वर्णपिण्ड और मात्रापिण्ड को वर्गजसंख्या से गुणा करें, फिर दोनों का योग करके तीन का भाग दें यदि एक शेष होवे तो सुभिक्ष, दो अवशिष्ट रहे तो समता, तीन शेष होवे तो दुर्भिक्ष कहना चाहिए। यथा- वर्णाजङ्कौ ३२। ९ वर्गजसंख्याभ्यां २५।५ गुणितौ ८००। ४५ युतौ ८४५ त्रिभि ३ स्तष्टौ २ समताफलं जातमिति ॥३१॥

**अथ वृष्टिज्ञानमाह।**

**वृष्ट्यल्पवृष्ट्यनावृष्टिश्चोत्तरालिंगितादिभिः।**
**मात्रापिण्डं त्रिभिस्तष्टं शेषाङ्कैः पूर्ववत्फलम् ॥३२॥**

यदि प्रश्न श्रेणी का प्रथम वर्ण उत्तर होवे तो वृष्टि कहना चाहिये, और अधरवर्ण हो तो अल्प वर्षा कहना तथा यदि दग्ध होवे तो अनावृष्टि कहना चाहिये। प्रश्न श्रेणी के आद्यवर्ण में आलिंगित स्वर होवे तो वृष्टि कहना चाहिये, अभिधूम्र स्वर होवे तो अल्पवृष्टि कहना और दग्धस्वर होवे तो अनावृष्टि कहना चाहिये। मात्रा पिण्ड को गुणक से गुणा करें और उसमें तीन का भाग दें जिसे एकादि शेष करके पहले की तरह फल क्रम से जानना। यथा- यात्रापिण्डं ९ गुणक १७ गुणितं १५३ त्रिभि ३ स्तष्टं ३ दुर्भिक्ष फलं जातम्।

वृष्टि, अल्पवृष्टि और अनावृष्टि आदि के उत्तर आलिंगित आदि स्वर से मात्रा पिण्ड से तीन का भाग देकर जो शेष अंक बचे उसके अनुसार पूर्व प्रतिपादित फल कहना चाहिए।

कूपादिप्रश्नमाह।

**आलिंगिताद्यादिगतद्गुणेनार्णाङ्कैश्च गुण्या निजवर्णसंख्या।**
**युक्ताविभक्ता धरणीधरैः स्यात् शेषे समे क्षारजलं परेऽन्यत् ॥३३॥**

प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्ण में जो आलिंगितादिक स्वर होवे तो उस स्वर का संयुक्तादि प्रकरणोक्त गुणक से श्रेणीवर्णसंख्या को गुणा करें, फिर वर्णाङ्कसे श्रेणीसंख्या को गुणा करके, दोनों का योग करके सात का भाग दे, यदि सम शेष हो तो क्षारजल कहना, विषम शेष होवे तो मिष्टजल कहना चाहिये। यथा-पूर्वोक्त भूकरेत्यादिनात्र गुणकः २ तेन श्रेणिवर्णसंख्या ४ गुणिता ८ वर्णाङ्कै ३२ श्च गुणिता १२८ युक्ता १३६ धरणिधरै ७ र्भक्ता ३ विषमे शेषे सति मिष्टं जलं जातमिति ॥३३॥

तत्र हस्तज्ञानमाह।

**लब्धं पिंडे विनिक्षिप्य चतुरशीति भाजितम्।**
**शेषाङ्कसमहस्तैः स्यात् पानीयं पूर्वनोदितम् ॥३४॥**

पूर्व श्लोकोक्त सात का भाग देने से जो लब्धी आवे, उसको पिण्ड में युक्त करें, फिर चतुरशीति (चौरासी) ८४ का भाग दे, शेषाङ्क के सम हस्त नीचे जल कहना चाहिये। यथा-लब्ध १५ पिंडे १३५ विनिक्षिप्य १५५ चतुरशीति ८४ भक्तं शेषांकैः ७१ समये हस्तास्तैः कृत्वा पूर्वनोदितं क्षारं मिष्टं वा पानीयं स्यात्। अत्र देशकालादिकं विचार्य वाच्यम् ॥३४॥

अथारामप्रश्नमाह ।

**उत्तरालिंगिताद्यैः स्याद् बहुद्रुमयुतं वनम्।**
**विरलद्रुमसंयुक्तं दग्धं वा त्र्याप्तपिण्डतः ॥३५॥**

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्ण में आलिंगित स्वर होवे तो बहुद्रुमयुक्त वन कहें, अभिधूम्र स्वर होवे तो स्वल्प द्रुमयुक्त वन कहें, दग्धस्वर होवे तो वह्नि कीटादिकों से जर्जरित वन कहें, यदि उत्तर वर्णश्रेणी होवे तो विरल द्रुमयुक्त वन कहें, दग्धवर्णाद्य श्रेणी होवे तो वह्नि कीटादिकों से जर्जरित कहें, पिण्ड में तीन का भाग देकर एकादि शेष करके पूर्ववत् फल जानना चाहिये । यथा-पिण्डं ६९७ त्र्याप्तं १ बहुद्रुमयुक्तं जातमिति ॥३५॥

अथ प्रासादप्रश्नमाह ।

**उत्तरालिंगिताद्यैः स्यात्प्रासादं तत्तु शीघ्रतः ।**
**विलम्बेन तथाऽल्पायू रिक्तं वा सद्विपिण्डतः ।।३६।।**

प्रश्नश्रेणी के आदि में उत्तर वर्ण आलिंगित स्वर होवे तो प्रासाद शीघ्र तैयार होगा, दग्धवर्ण अभिधूम्र स्वर होवे तो विलम्ब से प्रासाद तैयार होगा, दग्धवर्ण दग्धस्वर होवे तो प्रासाद का स्वल्प आयु होगा अथवा रिक्त रहेगा, पूर्व पिण्ड में दो युक्त करके तीन का भाग देना, एकादि शेष करके फल क्रम से जान लेना। यथा-द्वाभ्यां २ सहितो यः पिण्डः ६९९ त्रि ३ भक्तं शेषं ३ अल्पायुः रिक्तं वा फलं जातमिति ।।३६ ।।

गृहप्रश्नमाह।

**आलिंगाद्यैर्महालाभं स्वल्पलाभं दरिद्रता ।**
**ङादिदग्धस्वराढ्याश्चेत् कुलच्छेदकरं गृहम् ।।**
**पिण्डं व्याप्तं क्रमाद्गेहे लोभो वृद्धिर्दरिद्रता ।।३७।।**

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें आलिंगित स्वर होवे तो स्थान से लाभ कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो स्वल्प लाभ कहना, दग्ध स्वर होवे तो दरिद्रता कहना। ङादि पांच वर्ण दग्धस्वरयुक्त होवे तो कुल का नाश करने वाला स्थान कहना चाहिए, पिण्ड में तीन का भाग देना एकादि शेष करके क्रम से फल जान लेना चाहिए । यथा-पिण्डं ६९७ त्र्या ३ प्त शेषं १ लाभ इति।।३७।।

अथार्घप्रश्नमाह।

**पिण्डं निजगुणकघ्नं प्रश्नार्णघ्नं त्रिभिस्तष्टम् ।**
**रूपादिभि समर्घं समता ज्ञेया महर्घं च ।।३८।।**

निज गुणकगुणित पिण्ड को श्रेणीसंख्या से गुणा करें, तीन का भाग देने पर यदि एक शेष होवे तो समर्घ, दो शेष होवे तो समता, तीन शेष होवे तो महर्घता कहना चाहिये। यथा-पिण्डं ४१ निज गुणक १७ गुणितं ६९७ प्रश्नार्णै ४ र्गुणितं २७८८ त्रि ३ भिस्तष्टं १ सुभिक्षफलं जातं यन्मितं वर्त्तते ततोऽधिकं स्थास्यति।।३८।।

यत्र समर्घमहर्घे भवेतां तत्र विशेषमाह।

**आलिङ्गादियुते स्यात् पक्षे मासोर्ध्ववर्षोर्ध्वे ।**
**पिण्डं निजगुणकघ्नं प्रश्नार्णाढ्यं रसैस्तष्टम् ।।३९।।**
**पादेनर्द्धिः क्रमतो ह्याद्युत्तरगे ह्यनन्ताभ्रे ।**
**अधरादिगे च हानिः पादैः शन्ये महर्घं तत ।।४०।।**

प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्ण में आलिंगित स्वर होवे तो एक पक्ष के भीतर समर्घ महर्घ कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो मासोत्तर समर्घ महर्घ कहना, दग्धस्वर होवे तो वर्षोत्तर समर्घ महर्घ कहना चाहिये। निज गुणकगुणित पिण्ड में श्रेणी के वर्ण की संख्या को युक्त करें, फिर उसमें ६ का भाग दे शेषाङ्कौ से फल का विचार करें। प्रश्नश्रेणी के आदि में उत्तरवर्ण होवे और अंक शेष होवे तो चतुर्थांश वृद्धि दायक कहना, श्रेणी के आदि में उत्तरवर्ण और शून्य अवशिष्ट रहे तो अनन्तवृद्धि दायक कहना, श्रेणी के आदि में यदि अधरवर्ण होवे और अंक शेष होवे तो चतुर्थांश हानि कहना, श्रेणी के आदि में अधरवर्ण होवे और शून्य शेष रहे तो अनन्त हानि कहना चाहिए। यथा-पिण्डं ४१ निज गुणक १७ घ्ने ६९७ प्रश्नवर्ण ४ युतं ७०१ रसै ६ स्तष्टं ५ अत्रादौ उत्तरवर्णोऽभिधूमितः स्वरस्तेन मासात्परं पादयुतं सुभिक्षफलं जातमिति ॥३९॥ ४०॥

अथ गुप्तमन्त्रज्ञानमाह।

**आलिङ्गैर्धर्मचिन्तार्थकामौ चैवाभिधूमिते।**
**दग्धाद्ये विग्रहेच्छा स्याद्भूपतेर्गुप्तमन्त्रणे ॥४१॥**

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्ण में आलिङ्गित स्वर होवे तो धर्मचिन्तायुक्त जप कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो अर्थ और कामसम्बन्धी मन्त्र जप कहना, दग्धस्वर होवे तो विग्रहादियुक्त मन्त्र जप कहना चाहिए। यहाँ राजा का तो उपलक्षण मात्र संकेत है ॥४१॥

पिण्डेन चाह।

**केवलपिण्डं गुणितं स्वालिङ्गितपूर्वगुणकेन।**
**तष्टं त्रिभिश्च शेषैः प्राग्वत्प्रोक्तं फलं प्राज्ञैः ॥४२॥**

केवल पिण्ड को आलिंगितादि स्वरयुक्तजन्य गुणक से गुणा करें, फिर तीन का भाग दे तथा एकादि शेष करके पंडितजन पूर्ववत् फल को जान ले। यथा- केवल पिण्डं ४१ अत्राभिधूम्रगुणकेन २ गुणितं ८२ त्रिभि ३ स्तष्टं १ धर्मचिन्तास्तीति सर्वत्र ॥४२॥

अथास्मिन् पत्रे किमस्तीति ज्ञानमाह।

**मैत्रीलेखं क्षुद्रलेखं नृनार्योः कार्यं तत्रोच्चाटनं मारणं च।**
**पोष्यंशत्रोर्विग्रहाढ्यंक्रमेणसाधारण्यं संयुताद्यष्टवर्गैः ॥४३॥**

संयुक्तादि आठ पक्षों का फल क्रम से जान लेना चाहिए, जिस पक्ष का प्रश्न होवे उस पक्ष का फल मुद्रित (लिफाफे में बन्द) पत्र में कहना चाहिये। अत्र तु मारणं कस्यचिल्लिखितमिति वाच्यम् ॥४३॥

पिण्डेन चाह।

**वर्णाङ्कनिघ्नस्वरपिण्डयुक्तश्रेणीहृता नागमितैश्च शेषैः।**
**प्राग्वत् फलं मुद्रितपत्रलेखे चान्यद्विमृश्यापि वदेत् क्रियाभिः ॥४४॥**

मात्रापिण्डको वर्णपिण्ड से गुणा करें, फिर उसमें श्रेणीसंख्यायुक्त करके ८ (आठ) का भाग देना, एकादि शेष करके पूर्वोक्त फल क्रम से जान लेना। मुद्रितपत्र का प्रश्न कहने में और क्रिया से भी विचार कर कहना चाहिये। यथा- वर्णाङ्कैः ३२ निघ्नौ यः स्वरपिण्ड ९ स्तेन २८८ युक्ता या श्रेणी ४ जाता २९२ सा नागप्रमाणै ८ र्भक्ता शेषैरेकादिभिः ४ प्राग्वन्मैत्रीलेखनमित्यादि। मुद्रितं तत्पत्रं च तत्र लेखे फलं, तेनात्रोच्चाटनवार्त्ता लेखनमिति वाच्यम् ॥४४॥

४३ श्लोकोक्तं चक्रम्।

| पक्षाः | वार्त्ताः |
|---|---|
| दग्ध | साधारणम् |
| अभिधूम्र | शत्रुविग्रहः |
| आलिङ्गित | पोष्यम् |
| अभिघात अनभिघात | मारणम् |
| अनभिहित | उच्चाटनम् |
| अभिहित | नृनार्योः कार्यम् |
| असंयुक्त | क्षुद्रलेखम् |
| संयुक्त | मैत्रीलेखम् |

अथ मृगयाप्रश्नमाह।

**दग्धकटपयशैर्बद्धो मृगयायां घातमायाति।**
**अधरार्णैः संयुक्तैस्त्वन्यैः शून्या भवेन्मृगया ॥४५॥**

प्रश्नश्रेणी के आदि में, ङ ञ ण न म उ ऊ अं अः क ट प य श, यदि ये चतुर्दश (चौदह) वर्ण होवे तो बद्ध मृगया का लाभ कहना। श्रेणी के आदि में आ ई ऐ औ ख घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ र व ष ह, यदि ये अष्टादश (अठारह) वर्ण होवे तो मृगया घात कहना और श्रेणी के आदि में, अ इ ए ओ ग च ज ड त द ब ल स, यदि ये त्रयोदश वर्ण होवे तो मृगया लाभ नहीं होवेगा ऐसा कहना चाहिये ॥४५॥

पिण्डेन चाह।

**केवलपिण्डं भूपैर्निघ्नं भक्तं नगैः शेषे।**
**विषमे मृगलाभस्तत्रामाप्युक्तवज्ज्ञेयः ॥४६॥**

केवल पिण्ड को षोडश (सोलह) से गुणा करें: फिर उसमें (सात) ७ का भाग दे विषम शेष होवे तो मृगया लाभ कहना, सम शेष होवे तो लाभ नहीं कहना उसका नाम भी पूर्ववत् जान लेना चाहिए। यथा- केवलपिण्डं ४१ भूपै १६ गुंणितं ६५६ नगै ७ र्भक्तं शेषं ५ विषमे सति मृगयालाभ इति ॥४६॥

अथ युद्धप्रश्नमाह।

**उत्तरवर्णैः सन्धिर्युद्धं ह्यधरैर्द्विहृत्पिण्डम्।**
**युद्धं सन्धिर्दग्धे द्व्याप्तं शून्यं भवेद्युद्धम् ॥४७॥**

प्रश्नश्रेणी का आदि वर्ण उत्तर होवे तो सन्धि कहना, अधर होवे तो युद्ध कहना, पिण्ड में २ का भाग दे और यदि एक शेष रहे तो युद्ध कहना, शून्य शेष होवे तो सन्धि कहना चाहिये। प्रश्नश्रेणी के आदि में दग्धवर्ण होवे तो पिण्ड में दो का भाग देना, यदि एक शेष होवे तो सन्धि कहना, शून्य शेष होवे तो युद्ध कहना चाहिये। यथा- पिण्ड ६९७ द्वि २ हृत् शेषे १ युद्धं, दग्धे सति पिण्डं ६९७ द्वाभ्यां २ भक्तं १ शेषे सति सन्धिरिति ॥४७॥

**रूपे १ ष्व ५ ङ्गा ६ ब्ध्य ४ भ्रे० न्द्व १ ग्नि ३ द्विरमितैश्च वर्गाङ्कैः।**
**पिंडे द्विनामजातेऽद्र्याप्ते शेषेऽधिके जेता ॥४८॥**

अवर्गादि आठ वर्गो की एकादि संख्या क्रम से जान लेना, फिर वादी प्रतिवादी नामजन्य पिण्ड में (सात) ७ का भाग देना, जिस जगह बहुत अधिक शेष होवे उसी का जप कहना। यथा- रामरावणयोर्नामभ्यां जाते पिण्डे ६।१३ अद्रिभि ७ र्भक्ते ६।६ समे शेषे अत्रातिघोरयुद्धमिति सन्धिर्वा ॥४८॥

४८ श्लोकोक्तं चक्रम्।

| १ | ५ | ६ | ४ | ० | १ | ३ | २ | अङ्काः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ आ<br>इ ई<br>उ ऊ<br>ए ऐ ओ<br>औ अं अः | क<br>ख<br>ग<br>घ<br>ङ | च<br>छ<br>ज<br>झ<br>ञ | ट<br>ठ<br>ड<br>ढ<br>ण | त<br>थ<br>द<br>ध<br>न | प<br>फ<br>ब<br>भ<br>म | य<br>र<br>ल<br>व | श<br>ष<br>स<br>ह | वर्णाः |

अथ दिग्बलमाह ।

**मासाश्चैत्रादिगता द्विघ्नास्तिथ्यान्विताः समुद्राप्ताः ।**
**शून्यं० द्वीं २ द्व २ ग्नि३मितैः पूर्वादिस्थो भवेज्जेता ॥४९॥**

चैत्रशुक्लादि गत मासों को (दो) २ से गुणा करें, फिर उसमें तिथियुक्त करके (चार) ४ का भाग दे तथा उसे शून्यादि शेष करके क्रम से पूर्वादि दिक्स्थित मल्ल कुक्कुटादियों की विजय जान लेना चाहिये। यथा- चैत्रशुक्लादितो गतमासाः ९ द्विगुणिताः १८ शुक्लादिगततिथिभि १५ र्युताः ३३ समुद्रै ४ र्भक्ताः शेषं १ अत्र एकशेषे सति पश्चिमदिक्स्थो यः स जेष्यति ॥४९॥

अथ विवाहप्रश्नमाह।

**उत्तराजर्णयुक्ताद्ये शीघ्रं नीचे विलम्बतः ।**
**दग्धाजर्णयुताद्ये स्यान्न विवाहः कदाचन ॥५०॥**

यदि प्रश्नश्रेणी की आदि के उत्तर स्वरवर्ण होवे तो शीघ्र विवाह कहना, तथा यदि अधर स्वरवर्ण होवे तो विलम्ब से विवाह होना कहना, और यदि दग्ध स्वरवर्ण होवे तो विवाह नहीं होवेगा ऐसा कहना चाहिये ॥५०॥

पिण्डेन चाह।

**स्यादुत्तरार्णाढ्यमुखेऽर्णपिण्डं त्रिघ्नं स्वराङ्काढ्यमदोधराढ्यम्।**
**वर्णांकमब्धिघ्नमजंकहीनं सप्तोद्धृते चेद्विषमे विवाहः ॥५१॥**

प्रश्नश्रेणी के आदि में उत्तरवर्ण होवे तो वर्णपिण्ड को त्रिगुणित करें, और गुणनफल में मात्रापिण्ड युक्त करके सात का भाग दे, श्रेणी के आदि में अधरवर्ण होवे तो वर्णपिण्डको चतुर्गुणित करके उसमें मात्रापिण्ड हीन करें, फिर उसमें सातका भाग दे, यदि विषम शेष होवे तो विवाह कहना, सम शेष होवे तो विवाह नहीं कहना चाहिये। यथा-उत्तरेणार्णेन युक्तं मुखम् आदिर्यस्य तस्मिन् प्रश्ने सति वर्णपिण्डं ३२ त्रिगुणितं ९६ स्वरांकै ९ र्युक्तं १०५ सप्त ७ भिर्भक्तं शेषं ७ विषमशेषेण विवाहो भविष्यतीति ॥५१॥

अथ कृष्यादिप्रश्नमाह।

**लाभमलाभं कष्टं ह्यालिङ्गाद्यैश्च कृष्यादौ ।**
**सूक्ष्मांके वर्णघ्नेऽद्र्याप्ते विषमे तथा लाभः ॥५२॥**

प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्ण में आलिङ्गित स्वर होवे तो लाभ कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो लाभ नहीं कहना, दग्धस्वर होवे तो कष्ट कहना चाहिये। कृष्यादि प्रश्न में सूक्ष्मचक्र से पिण्डोत्पादन करके उस पिण्ड को श्रेणीवर्णसंख्या से गुणा करें और उसमें सात का भाग दे यदि विषम शेष होवे तो लाभ कहे, सम शेष होवे तो लाभ नहीं कहना। यथा-सूक्ष्मपिण्डे ६५ वर्णै ४ गुंणिते २६० सप्त ७ हृते १ विषमे शेषे सति कृष्यादौ इति ॥५२॥

अथ मैत्र्यादिकरणप्रश्नमाह।

**आलिङ्गाद्यैर्हितादीच्छोः सौख्यं दुःखं च कष्टता।**
**वर्णसंख्यास्वरांकघ्नी त्रिभक्ता पूर्ववत् फलम् ॥५३॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्ण में आलिङ्गित स्वर होवे तो मैत्रीकरण में इच्छा सौख्य कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो दुःख कहना, दग्धस्वर होवे तो कष्ट कहना। श्रेणी संख्या को मात्रापिण्ड से गुणा करके तीन का भाग देना, एकादि शेष का पूर्ववत् फल जान लेना। यथा वर्णसंख्या ४ स्वरांकै ९ गुंणिता ३६ त्रिभक्ता ३ त्रिशेषे सति मैत्रीसेवासम्बन्धादिषु कष्टतास्तीति ॥५३॥

अथ योन्यन्तरप्रश्नमाह।

**आलिङ्गाद्यैः क्रमात्स्वर्गे मर्त्ये नरकयोनिषु।**
**उत्तरादियुतैर्ज्ञेया उत्तमा मध्यमा परा ॥५४॥**

यदि प्रश्नश्रेणी के आद्यवर्ण में आलिङ्गित मात्रा होवे तो स्वर्गलोक में योनि कहना, अभिधूम्र स्वर होवे तो मर्त्यलोक में कहना, दग्ध स्वर होवे तो नरकलोक में कहना, यदि प्रश्नश्रेणी के आदि में उत्तर वर्ण होवे तो स्वर्गादि लोक में उत्तम योनि कहना, अधरवर्ण होवे तो मध्यम योनि कहना, दग्धवर्ण होवे तो अधम योनि कहना चाहिये ॥५४॥

पिंडेन चाह।

**प्रश्नाद्यवर्गपिण्डं निजगुणकघ्नं त्रिभिर्भक्तम्।**
**शेषैः प्राग्वज्ज्ञेयं नामाद्यं चापि विद्वद्भिः ॥५५॥**

प्रश्नश्रेणी के प्रथम वर्ण के वर्गाङ्क को निज गुणक से गुणा करें, उसमें तीन का भाग दें और एकादि शेष करके स्वर्ग १, मर्त्य २, नरक ३ लोक आदि जान लेना चाहिए। यथा-प्रश्ने आद्यो यो वर्गस्तस्य पिण्डं ६ निजेन गुणकेन १७ गुणितं १०२ त्रिभि

३ भक्तं शेषं ३ नारकीययोनिर्जाता। च पुनरस्या योनेर्नामाद्यमपि प्राग्वत् विद्वद्भिर्ज्ञेयम् ॥५५॥

अथ निधिज्ञानमाह।

**नास्त्यत्र यद्वा धनमस्ति किञ्चिद्वदेति पृष्टेऽहिबलाख्यचक्रम्।**
**सन्दिग्धभूमौ विदुषात्र लेख्यं तात्कालिकर्क्षोत्थविधुश्च कार्यः ॥५६॥**

यदि कोई प्रश्नकर्ता प्रश्न करें कि इस मकान में द्रव्य (धनादि) है या नहीं उस समय अहिबल चक्र को सन्दिग्ध भूमि में पण्डितजन लिखकर इसका निश्चय करें, अहिबल चक्र के विषय में तात्कालिक नक्षत्रजात चन्द्र सूर्य का स्पष्टीकरण करें ॥५६॥

तदेवाह।

**सूर्योदयाद्यातघटीभघाताभ्राङ्गांशकं भादिगतर्क्षयुक्तम्।**
**तत्कालभं तद्युगघातनन्दभागोऽत्र तत्कालखगो गृहादिः ॥५७॥**

तात्कालिक सूर्यादि ग्रहों की स्पष्टीकरण की क्रिया लिखते है, स्वेष्टकाल को कर्मभूमि में स्थित करके सप्तविंशति (सत्ताईस) २७ से गुणा करें, उसमें ६० (साठ) का भाग देने से लब्ध भादिक होते हैं, उनको गत नक्षत्र में युक्त करने से तात्कालिक नक्षत्र होते हैं, तात्कालिक नक्षत्र को चतुर्गुणित करके ९ का भाग देने से लब्ध राश्यादि स्पष्ट ग्रह होते हैं। अब उदाहरण देते हैं, सम्वत् १९४८ शालिवाहन शके १८१३ माघमासे कृष्णे पक्षे तिथौ तृतीयायां रविवासरे सूर्योदयात्कल्पितामिष्टं घट्यादिः ३७।१२ अत्र रविस्पष्टम् ९।४।५०।३६ चन्द्रस्पष्टम् ४।१६।४६।१ लग्नस्पष्टम् ५।२।१६।५१ सूर्योदयाद्यातघटीनां ३७/१२ सप्तविंशति २७ मितानां च यो घातो १००४/२४ ऽस्य अभ्राङ्गांश ६०कं नक्षत्रादि १६।४४।२४ तत् अश्विनीतो गतनक्षत्रैः स्फुटघटीयुक्तैरिति विशेषोऽत्र। तदित्थं भेतं भभोगहृद्भक्तभाढ्यमिति भस्य इतं घट्यादि १६।४९ भस्य भभोगेन सर्वघटीमानेन ६५।१८ हृतं लब्धं ००।१५।२७।६ अश्विन्यादिगतभै १० र्युतं १०।१५।२७।६ जातैरश्विन्यादिगतनक्षत्रै १०।१५।२७।६ र्युक्तं २६।५६।५९।६ तात्कालिकं नक्षत्रं जातं तात्कालिकर्क्षस्य युगा ४ नां च यो घात १०७।५९।२४।२५ स्तस्य नन्दां ९ शो गृहादिराश्यादिः स्पष्टचन्द्रः ११।२९।५८।१ अत्र तु नक्षत्रस्यैव प्रयोजनमस्ति तथापि प्रसंगात्प्रकटनांशज्ञानार्थ विधोः प्रदर्शित इति।

अब सूर्यका तात्कालिकीकरण लिखते हैं, प्रथम भभोगभयात साधन करते हैं। पौषशुक्ल १० शनौ उत्तराषाढायामर्कः ३७।२८ दिन को ६० में शोधन किया तो २२।३२ हुआ, माघकृष्णा ८ शुक्रे श्रवणेऽर्कः ४०।४२ इन दोनों का अन्तर वार १२

को ६० (साठ) से गुणा किया तो ७२० हुआ, इसमें २२/३२ और ४०/१२ युक्त किया तो ७८२।४४ भभोग हुआ, माघकृष्णा ३ रवौ सूर्योदयाद्गतघटि २७।१२ में पूर्व में शोधित अङ्क २२।३२ युक्त किया ५९।४४ और अन्तर वार ७ को ६० से गुणा किया ४३० और उसमें युक्त किया तो ४७९।४४ भयात हुआ, भयात में भभोग का भाग लेने से लब्ध गत नक्षत्र की स्पष्टघटी होती है। यथा-भस्य इतं घट्यादिः ४७९।४४ भभोगेन सर्वघटीमानेन ७८२।४४ हृतं लब्धं ०।३६।४६।२५ अश्विन्यादिगतभै २० र्युतं २०।३६।४६।२५ जातैरश्विन्यादिगतनक्षत्रै २०।३६।४६।२५ रभ्राङ्गांशकै १६।४४।२४ र्युक्तं ३७।२१।१०।२५ तात्कालनक्षत्रं जातं सप्तविंशति २७ भिस्तष्टं १०।२१।१०।२५ तात्कालर्क्षस्य युगा ४ नां च यो घात ४१।२४।४१।४० स्तस्य नन्दां ९ शो राश्यादि स्फुटरविः ४।१८।२।१९ इस प्रकार से साधित किया गया सूर्यचन्द्र का तात्कालिक करना लिखा गया है यह कष्टसाध्य तो होता है। अब हम बालबोध के लिये अर्थ का सुगमतर प्रकार लिखते है, दोनों क्रिया करने से फल एक ही आवेगा। स्वेष्टकाल में पांच का भाग दें लब्धराशि होती है, शेष को ३० (तीस) से गुणा करके फिर पांच से भाग दे लब्धअंश होती है, फिर शेष को (साठ) से ६० गुणा कर पांच का भाग दे लब्ध घटी होती है, इन राश्यादिकों को संज्ञातन्त्रका सूर्यादि स्पष्ट ग्रहों में युक्त करने से तात्कालिक ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं, क्योंकि संज्ञा तन्त्र का स्पष्ट ग्रह बताने को तो साधारण ब्राह्मण भी जानते हैं। यथा- सूर्योदयाद्गतघटी ३७।१२ पञ्च ५ भक्तं राशि ७ शेष २/१२ त्रिंशद्गुणितं ६६/०० पञ्चभक्तं लब्धं १३ अंशाः शेषं १ षष्टि ६० घ्नपञ्चभक्तं लब्धं १२ घटिका इन राश्यादिकों को ७।१३।१२।०० संज्ञातन्त्र का स्पष्ट चन्द्रमा ४।१६।४६।१ में युक्त किया तो ११।२९।५८।१ तात्कालिक चन्द्र पूर्वस्पष्ट समान हुआ, इस प्रकार सर्व ग्रह तात्कालिक कर लेना चाहिये ॥५७॥

अन्त्यं न्यासमाह।

**अन्त्यत्रिवह्निः पितृभत्रिभानि भाजांघ्रितत्वाब्ध्यहिपुष्यसूर्याः।**
**विधिः श्रवः सिद्धशशित्रिचित्राविश्वाद्विलोमं नगभानि चक्रे ॥५८॥**

तिर्यक्पंक्ति का क्रम करके अहिवलय चक्र का न्यास कहते है, अश्विन्यादि तीन नक्षत्र, कृत्तिका मघादि तीन नक्षत्र यह सात नक्षत्र प्रथम पंक्ति में लिखे, भसंख्या उत्तराभाद्रपद, पूर्वाभाद्रपद, शतभिषा, रोहिणी, आश्लेषा, पुष्य, हस्त सात नक्षत्र द्वितीय पंक्ति में लिखे, अभिजित् श्रवण धनिष्ठा, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, चित्रा यह सात नक्षत्र तृतीय पंक्ति में लिखें, उत्तराषाढा, पूर्वाषाढा, मूल, ज्येष्ठा, अनुराधा, विशाखा, स्वाती यह सात नक्षत्र चतुर्थ पंक्ति में लिखें ॥४८॥

प्रकारान्तरेणाह।

**ऊर्ध्वमध्यभवे कोष्ठे वह्निं कृत्वा भुजङ्गवत्।**
**दत्त्वा भानि लिखेच्चक्रं तदेवाहिबलं भवेत्॥५९॥**

ऊर्ध्व सप्तक पंक्ति का मध्य कोष्ठ में कृत्तिका नक्षत्र देकर के भुजंगवलयवत् नक्षत्र क्रम से लिखें तो अहिवलय चक्र का निर्माण होगा॥५९॥

५८।५९ श्लोकोक्तं अहिवलयचक्रम्॥

| रे चं | अ चं | भ चं शाखा | कृ चं द्वार | म चं शाखा | पू सू | उ सू |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उ सू | पू चं | शसू | रो सू | श्ले चं | पु चं | ह सू |
| अभिचं | श्र चं | ध सू | मृ सू | आ चं | पु चं | चि सू |
| उ चं | पू चं | मू सू | ज्ये सू | अनुसू | विसू | स्वासू |

अथ चन्द्रार्कयोर्नक्षत्राण्याह।

**स्युश्चन्द्रर्क्षाण्यब्धिपश्चाब्धिभान्यन्त्येशांऽभोभ्योजांघ्रितोऽन्यानि भानोः।**
**स्वर्क्षे चन्द्रे स्यान्निधिस्तत्र चार्के तत्तद्द्रव्यं तद्दृशागोंऽशहस्तैः॥६०॥**

सूर्य चन्द्र नक्षत्र का ज्ञान कहते है, रेवत्यादि चार, आर्द्रादि पांच पूर्वाषाढादि चार और पूर्वाभाद्रपदा यह चतुर्दश (चौदह) नक्षत्र चन्द्रमा के कहे गये हैं इनसे व्यतिरिक्त चतुर्दश नक्षत्र सूर्य का कहे गये हैं, तात्कालिक चन्द्र सूर्य चन्द्र नक्षत्र में होवे तो सन्दिग्ध भूमि में निधि कहना चाहिये। यहाँ इतना ही वर्णन है, नरपति ग्रन्थ में विषय विशेष लिखा है उसका वर्णन करते हैं। **'द्वारशाखे मघायाम्ये द्वारस्था कृत्तिका मता। चन्द्रऋक्षे यदार्केन्दू तत्रास्ति निश्चितं निधिः। भानुऋक्षे स्थितौ तौ चेत्तदा शल्यं च नान्यथा स्वस्वभे द्वितयं ज्ञेय नास्ति किञ्चिद्विपर्यये॥ स्थितं न लभते द्रव्यं चन्द्रक्रूरग्रहान्विते। पुष्टे चन्द्रे भवेन्मुद्रा क्षीणे चन्द्रेऽल्पको निधिः॥'** तात्कालिक चन्द्रमा को जो जो ग्रह देखते हैं उन ग्रहों का द्रव्यनिधि स्थान में कहना, चन्द्रभुक्त नवांश संख्या करके उतने हस्त (हाथ) परिमित भूमि के नीचे द्रव्य कहना चाहिये॥६०॥

अथ द्रव्यमाह।

**स्वर्णं रौप्यं ताम्रकं रत्नयुक् स्वं वंगं नागं लोहमुक्तं क्रमेण।**
**चन्द्रेऽर्काद्यैर्वीक्षितेऽल्पादिचन्द्रात् व्यस्तर्क्षस्थौ वारिभेऽस्मिन्न लाभः॥६१॥**

सूर्यादि ग्रहों का स्वर्णादि धातु क्रम से जान लेना, चन्द्रमा जिस ग्रह के निमित्त दृष्ट होवे उस ग्रह का द्रव्य कहना चाहिये, कोई ग्रह करके भी दृष्ट नहीं होवे तो द्रव्य का अभाव कहना चाहिये, चन्द्रमा हीन बल होवे तो स्वल्प द्रव्य कहना, मध्यम बली होवे तो मध्यम द्रव्य कहना, चन्द्रमा उत्तम बली होवे तो पूर्ण द्रव्य कहना चाहिये, चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्रों में होवे और सूर्य चन्द्रमा के नक्षत्रों में होवे अथवा चन्द्रमा शत्रुराशि का होवे तो द्रव्य लाभ नहीं कहना चाहिए। यहाँ इस विषय में इतना ही लिखा है, और नरपतिग्रन्थ में विशेष लिखा है उसे लिखते हैं, **'मिश्रैर्मिश्रं भवेद्द्रव्यं शून्यं दृष्टिविपर्यये। सर्वग्रहेक्षिते चन्द्रे निर्दिष्टोऽसौ महानिधिः। शुभक्षेत्रगते चन्द्रे लाभः स्यान्नात्र संशयः। पापक्षेत्रे न लाभो हि विज्ञेयः स्वरपारगैः।** अत्र निधिस्थानस्य द्वारज्ञानं नोक्तं तत्तु गुरुगम्यम्। अहिवलयचक्रमिदम् अहिः शेषनागः स तु सिंहार्कतस्त्रिभिर्मासैः ऐशान्यादिविदिक्षु शिरः कृत्वा वामपार्श्वेन शेते तेन यत्र तच्छिरः तत्र निधिस्थानस्य द्वारं तथा चक्रमिदं स्थाप्यम्। यद्वा द्वारस्था कृत्तिका पतति इति तद्गृहद्वारे स्थापयेत्। मुख्यः पक्षोऽयम्। चन्द्राधिष्ठितं तत्कालनक्षत्रं यद्दिग्द्वारभे भवति कृत्तिकादिसप्तसप्तव्यवस्थया तद्दिग्द्वारं निधिस्थानम्। अथवा प्रश्नकर्ता निधिनाथो यत्र दिशि यत्स्थाने विशति तद्द्वारं निधिस्थानस्य। इदमेव कृतं पक्षत्रयादपि निधिं साधयेत्।' इस उदाहरण में चन्द्र सूर्य दोनों स्वस्वनक्षत्र में स्थित है, इसलिए निधिशल्य दोनों कहना चाहिये ॥६१॥

६१ श्लोकोक्तं चक्रम्।

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्रहाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वर्ण | रौप्य | ताम्र | रक्तयुक्त द्रव्य | रंग | सीस | लौह | धातवः |

**अथ नष्टजातकाद्यानयनमाह।**

**दन्ता ३२ ष्टे ८ न्द्व १ र्क १२ धृत्या १८ द्रि ७ गज ८ हिमकराः १ श्रेणिघाताः क्रमेणा। -ब्दा मासाः पक्षतिथ्यर्क्षतनुभदिनपाः स्युः स्वसंख्याप्तशेषाः। नष्टेऽथो त्र्य ३ ब्धि ४ काष्ठाः १० शर ५ गुण ३ गुणिताः प्रश्नवर्णाः स्वसंख्या। आप्तास्तिथ्यो मासतारातनुदिनपतयो गर्भकालेऽत्र शेषाः ॥६२॥**

निधिप्रश्न कथनानन्तर नष्टजातकानयन प्रकार का वर्णन करते हैं, दन्तादि ३२ अष्ट संख्या को कर्मभूमि में स्थित करके सूक्ष्मचक्रजन्य स्फुटश्रेणीपिण्ड से गुणा करें, फिर शतादि स्वस्व संख्या करके १००।१२।२।१५।२७।१२।१२।७ का उसमें भाग

दें, शेषाङ्क से वर्ष मास पक्ष तिथि नक्षत्र लग्न राशि वार क्रम से नष्टजातक के विषय में स्पष्ट जान ले। पुनः स्फुटश्रेणीपिण्ड को त्र्यादि ३।४।१०।५।३ संख्या करके गुणा करें, स्वस्व संख्या ३०।१२।२७।१२।७ करके भाग ले शेष तिथ्यादिक गर्भकालके विषय में जान लेना चाहिये। यथा - श्रेणी चात्र स्फुटा ग्राह्या सा च चतुर्गुणितस्वान्त्यवर्गाङ्केन युता भवति, वर्गाङ्कश्च सूक्ष्मचक्राद् इह तस्यैव प्राधान्यात्। तदुक्तं 'श्रेणीप्रश्नाक्षराणां तदुदधिगुणितं स्वान्त्यवर्गेण युक्तेति।' उदाहरणम्। श्रेणी ४ स्वान्त्योरस्य वर्गो यस्तस्याङ्कैः १० वेंदगुणै ४० र्युक्ता ४४ स्फुटश्रेणी जाता। अस्य दन्तादिभ्यो घातः १४०८।३५२।४४।५२८।७९२।३०८।३५२।४४। वर्षादीनां संख्याभि १००।१२।२।१५।२७।१२।१२।७ र्जिताः शेषं ८।४।२।३।९।८।४।२। जाता वर्षाद्याः नष्टजातके एवं सर्वत्र। अथ त्र्यादिगुणिता स्वस्वसंख्या आप्ता प्रश्नवर्णाः कार्या, अत्र ये शेषास्ते गर्भकाले तिथ्यादयः स्युरिति। स्फुटवर्णाः ४४ त्र्यादिगुणिताः १३२।१७६।४४०।२२०।१३२। तिथ्यादीनां या संख्या ३०।१२।२७।१२।७ ताभिर्भक्ताः शेषे तिथ्यादयः १२/५/८/४/६ प्रश्नसमयादूह्यं ज्ञेयमिति ॥६२॥

अथ वर्णोत्पत्तिप्रकारमाह।

**रूढिजफलपुष्पाणि च दूतमुखे सन्ततं यान्ति।**
**तस्मादङ्कैर्वर्णाः प्रश्ने कार्याश्च दूतोक्तैः ॥६३॥**

रूढि शब्द नालिकेर चम्पकादि फल पुष्प अभ्यासवश करके दूतमुख से निरन्तर निकलते हैं, इस कारण अंक चिन्तन करवाना चाहिये ॥६३॥

तदेवाह।

**प्रथमांके गजभक्ते द्वितये बाणोद्धृते त्रितये।**
**द्वादशतष्टे क्रमतो वर्गार्णजः पुनश्चैवम् ॥६४॥**

दूत मुख द्वारा तीन अङ्क भिन्न-भिन्न चिन्तन करवाना, प्रथम अंक में आठ का भाग देना, शेषांक से अवर्गादिक वर्ग जान लेना, द्वितीय में पांच का भाग देना, शेषांक से वर्ण जान लेना, य श वर्गों में चार के भाग से वर्ण जान लेना, तृतीय अंक में द्वादश का भाग देना, शेषांक से अकारादि मात्र जान लेना, इस प्रकार बारबार करना चाहिये ॥६४॥

एतत्सीमानं प्रश्ननियमं चाह।

**कार्यं द्वाभ्यामूर्ध्वं न्यूना बाणैर्यथार्णाः स्युः।**
**स्वरवाहस्थेऽथार्के विषमाश्चन्द्रे समार्णाश्चेत् ॥६५॥**

दो से ऊर्ध्व (ऊपर) पांच से न्यून (कम) वर्ण होते हैं, वहन् नाडीप्रदेशस्थित दूत प्रश्न करे तो यथार्थ फल मिलता है, सूर्यनाडी में विषमवर्ण होते हैं, चन्द्रनाडी में समवर्ण होते हैं ॥६५॥

अथ ग्रन्थसमाप्तिमाह।

**रचितोऽयं संक्षेपात्केरलिशास्त्रस्य सन्दर्भः।**
**अत्राज्ञताभ्रमाभ्यां कुकृतं तच्छोधनीयं ज्ञैः ॥६६॥**

यहाँ पर आचार्यजी ने केरलशास्त्र का प्रबंध संक्षेप करके जो रचना की है इस प्रबन्ध में अज्ञता और भ्रम करके जो स्खलित हुआ उस विषय का पण्डितजन शोधन करें ॥६६॥

**आस्ते यद्वसुधाविभूषणमणौ श्रीमद्व्रजेसद्व्रजे**
**रम्यं काम्यवनं त्रयीधुतमलास्तस्मिन्वसन्ति द्विजाः।**
**श्रीकृष्णाश्रयदीपचन्द्रतनयो यो नन्दरामाभिधं**
**स्तेषा संस्कृतवान् प्रबन्धममलं सत्प्रश्नरत्नाह्वयम् ॥६७॥**

पृथ्वी की जो आभूषण मणि शोभायमान व्रजभूमि जिसमें महात्मा लोग निवास करते है, ऐसा जो काम्यवन जिसमें वास करने वाले वेदत्रयी करके धोये हैं मल जिन्होंने ऐसे जो ब्राह्मण उनके मध्य में श्रीकृष्ण के आश्रय जो दीपचन्द्र उनके पुत्र नन्दराम जी ने यह निर्मल प्रश्नरत्न नामक ग्रन्थ की रचना की है ॥६७॥

अथान्येषां दूषणमाह।

**प्रोक्तं चन्द्रोन्मीलनं शुक्लवस्त्रैस्तच्चाशुद्धं विज्ञनिन्द्यं समन्तात्।**
**वाच्यं तज्ज्ञैः पक्षपातं विहायोत्पाताभिख्येऽस्मिन्न तेषां त्रपाभूत् ॥६८॥**

श्वेताम्बर नाम जैनो ने जो चन्द्रोन्मीलन नाम ग्रन्थ रचना की है वह छन्दोव्याकरणादिकों के कारण अशुद्ध है, अतएव पण्डित लोगों की सभा के विषय में निन्दित है, जिसके जाननेवाले पण्डितों ने हमारा और उनका पक्ष छोडकर कहना चाहिये कि इस उत्पात नाम चंद्रोन्मीलन ग्रंथ के करने में उनको लज्जा हुई या नहीं हुई, जिसमें ग्रहण का स्पर्शादि पञ्च संस्कार उनके मध्य में मीलन उन्मीलन नाम संस्कार मोक्ष अर्वाचीन हैं, राहु से तो चन्द्रमा के मीलन उन्मीलन होते है। इसी कारण से चंद्रोन्मीलन ग्रंथ का भी नाम दूषित हुआ। इसी से बौद्ध लोगों को लज्जा होनी चाहिए कि जिसके नाम ही में दूषण है तो उससे क्या फलसिद्धि होती है? ॥३८॥

अथ समाप्तिकालं ग्रन्थसंख्या चाह।

**सिद्धाष्टचन्द्रवर्षेऽश्वियुजः सितपक्षसप्तम्याम्।**
**पूर्तिमगाद्ग्रन्थोऽयं शून्याब्धिद्विप्रमैर्वृत्तैः ॥६९॥**

विक्रमसंवत् १८२४ में आश्विन शुक्ला सप्तमीके दिन, ग्रन्थ पूरा हुआ, इस ग्रन्थ में दो सौ चालीस २४० वृत्त हैं ॥६९॥

**अष्टवेदाङ्कभू १९४८ वर्षे कृता सुन्दरसूरिणा।**
**माघकृष्णत्रयोदश्यां टीकेयं पूर्णतामगात् ॥७०॥**

*इति प्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां*
*मिश्रप्रकरणं पञ्चमम्।*

*इति डॉ० भास्कर शर्म 'श्रोत्रिय' विरचितायां शची नाम्नी भाषाटीकासहितं केरलीप्रश्नरत्नं समाप्तम् ॥*

## डॉ. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रियः'

**संस्तवः**

| | | |
|---|---|---|
| **पितृनाम** | – | श्री सीताराम शास्त्री 'श्रोत्रिय' |
| **जन्मस्थानम्** | – | जयपुरम् (राज.) |
| **योग्यता** | – | ज्योतिषाचार्यः– लब्धस्वर्णपदकः<br>एम. ए. संस्कृत, पी. एच. डी. (ज्योतिष) |
| **लेखनम्** | – | विविध पत्रपत्रिकादि में शोधलेख प्रकाशित |
| **प्रकाशितग्रन्थ** | – | प्रस्तर-वेधशाला, प्रासाद-मण्डनम् (वास्तु-विज्ञानम्) केतकी ग्रहगणितम्, गोलीय रेखागणितम्, पञ्चाङ्ग विज्ञानम्, वैजयन्ती पञ्चाङ्ग गणितम्, वास्तु फेंगशुई द्वारा सुख समृद्धि तथा सफलता वास्तु फेंगशुई तथा पिरामिड के चमत्कार, पाद-रेखा-विज्ञान |
| **सम्पादन** | – | श्री सर्वेश्वर व्रतोत्सव भास्कर (पञ्चाङ्गम्), श्री निम्बार्क पञ्चाङ्गम् श्री निम्बार्क व्रतोत्सव दीपिका, शुभैषी पत्रिका (त्रैमासिकी) |
| **पुरस्कार** | – | विज्ञान-पुरस्कार (ज्योतिषविज्ञान) 2000 राज्यस्तरीय<br>(राजस्थान-संस्कृत-अकादमी, जयपुर)<br>माहेश्वर-पुरस्कार (वास्तु-विज्ञान) 2001 राज्यस्तरीय<br>(श्री व्यासबालाबक्षशोध संस्थान जयपुर)<br>विद्वत सम्मान पुरस्कार (संस्कृत शिक्षा राजस्थान सरकार)<br>सवाई जयसिंह पुरस्कार (सिटी पैलेस, जयपुर) |
| **सम्मान** | – | निम्बार्क भूषण, अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ,<br>सलेमाबाद, अजमेर |
| **कार्यक्षेत्र** | – | आचार्य एवं अध्यक्ष, (ज्योतिष विभाग)<br>राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर |
| **निवास संकेत** | – | म. नं. 4847, श्रोत्रिय वीथी, कुंदीगर भैरव मार्ग, जौहरी बाजार, जयपुरम् (राज.) दूरभाष : 2573178 |


**जगदीश संस्कृत पुस्तकालय**

**JAGDISH SANSKRIT PUSTAKALAYA**

*(Oriental Publishers & Booksellers)*

शोरूम : भगवानदास मार्केट के सामने, तेलीपाड़ा की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302002
हैड ऑफिस : झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302001 (राज.)

Tel. : 0141-2562577, 4026371 (O) 2321518 (R) Mob. : 9414042201

9789380857305